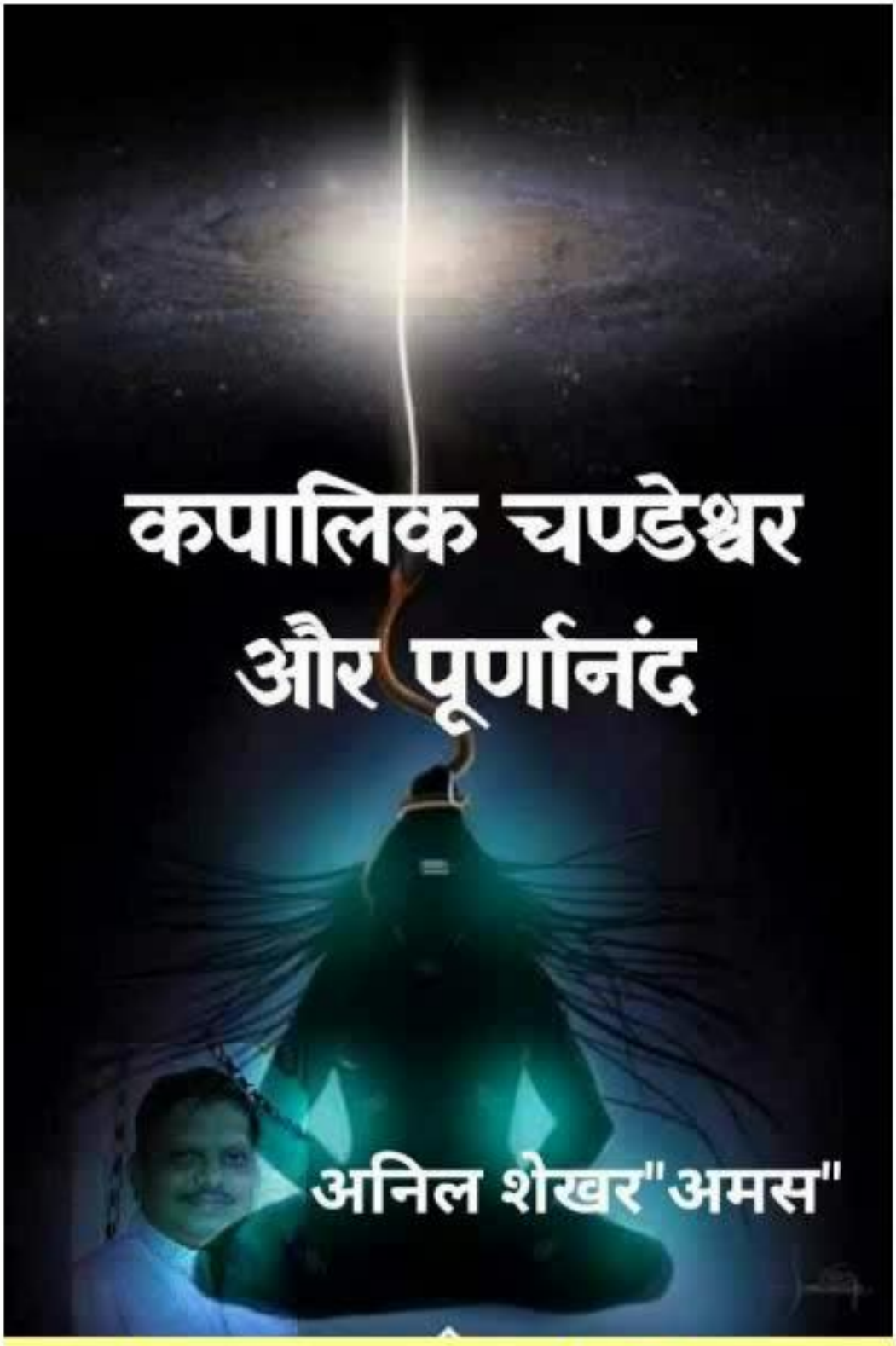


**श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः**

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....
यह कथा लगभग 400 वर्ष पुरानी ऐतिहासिक पृष्टभूमि पर आधारित है । उस समय तांत्रिक कापालिक संप्रदाय काफी विकसित अवस्था मे था । यह सिद्ध कापालिक चँडेश्वर के जीवन पर आधारित है ।
इस श्रंखला मे यह दूसरी कहानी है । इससे पहले की कहानी आप “कापालिक चंडेश्वर ” मे पढ़ सकते हैं ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है ।

अंत में .....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद  लें ...

आपका

अनिल शेखर "अमस

anilshekhar.amas@gmail.com

## कथा अभी तक :-

महेंद्रगढ़ गंगा नदी के तट पर बसा हुआ एक राज्य है जिसके युवा राजा का नाम है वीरेंद्र । उनके राज्य में एक वेद पाठी आचार्य भी रहते हैं । जिनका नाम है आचार्य विद्यानंद शास्त्री जो राज्य के प्रमुख सलाहकार भी हैं । आचार्य की पत्नी का नाम है मालिनी । आचार्य का एक पुत्र है जिसका नाम है नीलकंठ ।

विभिन्न ज्योतिष गणना करते करते अचानक एक दिन आचार्य विद्यानंद शास्त्री को एक अति विशिष्ट मुहूर्त के आने का पता चलता है । जिस में जन्म लेने वाला बालक आध्यात्मिक रूप से अत्यंत उच्च कोटि का होगा ।

वह मुहूर्त के विषय में राजा वीरेंद्र को बताने के लिए सोचता है लेकिन उस समय रानी मंजरी अपने पिता के साथ महाकाल के दर्शन करने के लिए गई हुई होती है । ऐसी परिस्थिति में आचार्य

विद्यानंद शास्त्री राजा को उस विषय में जानकारी नहीं दे पाता है लेकिन जब अपनी पत्नी मालिनी से इसके विषय में चर्चा करता है तो वह इस अवसर का सदुपयोग करने के लिए तैयार हो जाती है ।
उस विशिष्ट मुहूर्त में वे दोनों मिलकर गर्भाधान की प्रक्रिया को संपन्न करते हैं । जिससे उनके घर में अद्वितीय आध्यात्मिक ऊर्जा से युक्त दो बच्चों का जन्म होता है ।
जिनमें से एक होता है बालक पूर्णानंद और दूसरी होती है बालिका वैभवी ....
महेंद्रगढ़ राज्य के सेनापति का नाम है सिंह राज । मालिनी उन्हीं की पुत्री है।

राजा धर्मेंद्र की मृत्यु हो चुकी है और उनकी विधवा राजमाता कामायनी राजकाज में राजा वीरेंद्र को सहयोग करती है ।

राजा वीरेंद्र का विवाह राज्य के सेठ लक्ष्मी दास की पुत्री मंजरी के साथ हुआ है । विवाह के 2 वर्ष तक उनके यहां संतान नहीं होती है ।
इस संबंध में जब आचार्य विद्यानंद शास्त्री पता करते हैं तो पता चलता है कि हरसिद्धि मंदिर के निर्माण का जो संकल्प उसके पिता ने लिया था वह उन्होंने पूरा नहीं किया है । वह इस बात को भूल चुके थे । याद आने पर वे क्षमा प्रार्थना करते हैं और मंदिर का निर्माण प्रारंभ कर देते हैं । जिसके बाद मंजरी के यहां एक संतान जन्म लेती है । जिसका नाम होता है देवेंद्र ।

देवेंद्र को लेकर मंजरी तथा सेठ लक्ष्मीदास उज्जैन की यात्रा पर जाते हैं तब कुछ विचित्र किस्म की घटनाएं होती हैं और उसके फल स्वरुप उसके यहां जुड़वा संतानों का जन्म होता है जिनका नाम है गजेंद्र तथा राजेन्द्र ।

गजेंद्र की गतिविधियां बचपन से ही सामान्य बच्चों से अलग होती है और वह किसी सिद्ध पुरुष की तरह ही व्यवहार करता है । उसके व्यवहार से राजमाता तथा मंजरी दोनों चिंतित है ।

महेंद्रगढ़ के दो विरोधी राज्य हैं वीरगढ़ और प्रतापगढ़ । दोनों राज्यों ने मिलकर एक बार महेंद्रगढ़ पर आक्रमण किया था जिसमें प्रतापगढ़ के राजा मंदार देव की मृत्यु हो गई और वीर गढ़ के राजा विजय प्रताप को बंदी बना लिया गया था । विजय प्रताप को गुप्तचरों ने कैद से छुड़वा लिया ।

दोनों राज्यों ने मिलकर महेंद्रगढ़ पर दुबारा आक्रमण किया और महेंद्रगढ़ की सेना लगभग हारने की स्थिति में आ गई । ऐसी स्थिति में एक कापालिक प्रकट हुआ और उसने महेंद्रगढ़ की सेना की सहायता करते हुए शत्रु सेना को तबाह कर दिया । जिसके बदले में उसने राजा से गजेंद्र को

मांग लिया और उसे लेकर राजमहल से विलुप्त हो गया ....

इतनी कथा आप कथानक के पहले भाग "कापालिक चंडेश्वर" मे पढ़ चुके हैं । अब आगे .....

# कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानंद

राजमहल से विलुप्त होने के बाद कापालिक सिद्धेश्वर गजेंद्र को लेकर एक विशाल गुफा में प्रकट हुआ । उस विशाल गुफा में एक लगभग 20 फुट ऊंची महाकाल भैरव भैरवी की युगल प्रतिमा स्थापित थी । जो सुर्ख लाल रंग के पत्थरों से बनी हुई थी ।

वहां पहुंचने के बाद कापालिक सिद्धेश्वर ने महागणपति विघ्नेश्वर का पूजन करने के बाद गुरु पूजन संपन्न किया और उसके बाद महा भैरव का पूजन अर्चन प्रारंभ किया ....

प्रारंभ में तो बालक इधर उधर देखता रहा लेकिन जैसे-जैसे मंत्र आगे बढ़ता गया वह पद्मासन में बैठ गया और ध्यान की मुद्रा में मंत्र का उच्चारण सुनता रहा ।

लगभग आधे घंटे तक विभिन्न प्रकार के मंत्रों से कापालिक सिद्धेश्वर ने महा भैरव का पूजन संपन्न किया और उसके बाद जैसे ही उसने भैरव स्तुति प्रारंभ की बालक गजेंद्र भी अपने आप उस स्तूति का पाठ करने लगा ।

यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं
सं सं सं संहार मूर्ति शुभ मुकुट जटा शेखरं चन्द्र विम्बं
दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुख चौर्ध्व रोमं करालं
पं पं पं पाप नाशं प्रणमतं सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ १ ॥

रं रं रं रक्तवर्णं कटक कटितनुं तीक्ष्णदंष्ट्रा विशालं
घं घं घं घोर घोषं घ घ घ घ घर्घरा घोर नादं
कं कं कं कालरूपं धग धग धगितं ज्वलितं कामदेहं
दं दं दं दिव्य देहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ २ ॥

लं लं लं लम्ब दन्तं ल ल ल ल लुलितं दीर्घ
जिह्वाकरालं
धूं धूं धूं धूम्रवर्ण स्फुट विकृत मुखंमासुरं भीम रूपं
रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिरमय मुखं ताम्र नेत्रं विशालं
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ३ ॥

वं वं वं वायुवेगं प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपं
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीमरूपं
चं चं चं चालयन्तं चल चल चलितं चालितं भूत चक्रं
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ४ ॥

खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल कालान्धकारं
क्षि क्षि क्षि क्षिप्र वेग दह दह दहन नेत्रं सन्दीप्यमानं
हूं हूं हूं हूंकार शब्दं प्रकटित गहन गर्जितं भूमिकंपं
बं बं बं बाललीलम प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ५
॥

उसके बाद का पूजन दोनों ने मिलकर एक साथ संपन्न किया .....

पूज्य पाद गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अपने प्रवचनों में कई बार सिद्धाश्रम का उल्लेख किया है । इसके विषय में आचार्य गोपीनाथ कविराज जैसे विद्वत जनों ने भी अपने साहित्य में ज्ञानगंज या एक अद्भुत आध्यात्मिक केंद्र के रुप में इसका उल्लेख किया है ।

ऐसा माना जाता है कि यह एक आध्यात्मिक चेतना का केंद्र है जो सनातन धर्म के मूर्धन्य ऋषियों तथा प्रकृति के द्वारा निर्मित है । इसकी स्थिति मानसरोवर और हिमालय के आसपास मानी जाती है । इसके विषय में लिखा गया है कि यह कई मीलो तक फैला हुआ है और

यहां पर सदैव एक जैसा मौसम रहता है । यह मौसम बसंत ऋतु की सुखद अनुभूति के जैसा होता है ।
यह सिद्ध आश्रम या ज्ञानगंज केवल सिद्ध पुरुषों और योगियों के लिए ही प्राप्त है । इस आश्रम में जाने का मार्ग हिमालय के आसपास अलग-अलग जगहों से होकर जाता है । इसमें से एक मार्ग मानसरोवर झील के भीतर से होकर भी जाता है । ऐसा उल्लेख मिलता है ।
इस आश्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता किसी भी एक महाविद्या की सिद्धि या उसके समतुल्य योग्यता मानी जाती है । इस प्रकार की सिद्धि प्राप्त कर लेने के पश्चात गुरु अपने शिष्य को सिद्धाश्रम जाने की अनुमति प्रदान करता है और एक बार अनुमति प्रदान हो जाने के बाद वह सिद्धाश्रम में जा सकता है ।
सिद्धाश्रम के विषय में यह भी उल्लेख किया जाता है कि वहां प्राचीन काल के ऋषि मुनि अभी भी अपने सूक्ष्म रूप में विद्यमान है । यह आध्यात्मिक चेतना का केंद्र सनातन धर्म के उत्थान के लिए समय-समय पर महापुरुषों को भेजता है जो पतन की ओर अग्रसर धर्म चक्र को पुनर्स्थापित करते हैं ।

सनातन धर्म को पाश्चात्य देशों में सम्मान दिलाने वाले स्वामी विवेकानंद से लेकर, घर-घर में सनातन धर्म की चेतना फैलाने वाले गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा जी तक, और योग विज्ञान के प्रसिद्ध आचार्य स्वामी विशुद्धानंद से लेकर तंत्र साधना को पुनर्स्थापित करने वाले डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी तक जिन्हें परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद कहा जाता है, वह भी उसी सिद्धाश्रम के द्वारा विभिन्न कार्यों के निमित्त भेजे गए सिद्ध पुरुष है ।

इस प्रकार के सारे कार्य देवाधिदेव ! जगतगुरु ! दक्षिणामूर्ति ! मेरे परम आराध्य ! भगवान शिव !! के भ्रू संकेत पर ही संपन्न होते हैं क्योंकि वही आदि गुरु और धर्म संस्थापक हैं ।

वह कई गुरुओं को भी इस कार्य के लिए नियुक्त करते हैं, जो साधना करने वाले साधकों को प्रत्यक्ष रूप में या सूक्ष्म रूप में साधनात्मक ज्ञान प्रदान करते हैं । कई बार उन्हें अग्नि पुंज या दिव्य प्रकाश के रूप में दर्शन भी प्राप्त होते हैं । अगर आप पंडित श्रीराम शर्मा जी के ग्रंथों का अध्ययन करेंगे तो उन्होंने भी इस प्रकार के एक

दिव्य बिंब के द्वारा उनके जीवन में आए हुए परिवर्तन का उल्लेख किया है । जो इस बात का प्रमाण है कि कोई ना कोई सत्ता है जो सनातन धर्म को पुनर्स्थापित करने के लिए सिद्ध पुरुषों को भारत भूमि पर भेजती है ।

जितने भी सिद्ध पुरुष भारत भूमि पर धर्म संस्थापना के लिए आए हैं उन सभी के जीवन के अनुभव में आप इस प्रकार के किसी दिव्य सत्ता के द्वारा दर्शन दिए जाने या उनके स्पर्श मात्र से अपने कार्य और अस्तित्व दोनों का बोध होने का अनुभव आप अवश्य पाएंगे । यह इस बात का प्रमाण है कि जो दिव्य आत्माएं मनुष्य देह धारण करती हैं वह भी अपना मूल स्वरूप इस प्रकार के दिव्य और सिद्ध गुरुओं के सूक्ष्म स्पर्श के द्वारा ही समझ पाती है ।

ऐसे ही आचार्य वीरेश्वर एक सिद्ध कापालिक है । जो विभिन्न प्रकार के साधनाओं में अग्रसर कापालिकों को मार्गदर्शन करने का कार्य भगवान शिव की इच्छा अनुसार करते हैं ।
उन्हीं ने बालक गजेंद्र के रूप में जन्म लिया है । इसलिए वह अपनी पूर्व जन्म की स्मृतियों के आधार पर इस

प्रकार से पूजन को संपन्न कर पा रहे थे । यह देखकर कापालिक सिद्धेश्वर भी प्रसन्न हुए ..
क्योंकि बालक को पूर्व जन्म की स्मृति हो रही थी.....
इसका मतलब उसका आध्यात्मिक पथ ज्यादा आसान हो जाता....

पूजन समाप्त होते-होते उस दिव्य विग्रह से लाल रंग के प्रकाश की किरणें निकलने लगी और उन्होंने बालक गजेंद्र को अपने घेरे में ले लिया । बालक गजेंद्र का शरीर धीरे धीरे तपते हुए लोहे के सामान लाल होने लगा । यह अवस्था कुछ 10 या 15 सेकंड तक रही होगी उसके बाद सब कुछ सामान्य हो गया ।
बालक गजेंद्र का महाकाल भैरव ने अनुमोदन कर दिया था । अब उसकी दीक्षा तथा आगे की प्रक्रिया बाकी थी । जिसे पूरा करने के लिए कापालिक सिद्धेश्वर ने उसे अपने गुरु की उस सिद्ध गुफा में भैरव पूजन के द्वारा तैयार किया था ....

भैरव पूजन के बाद कापालिक सिद्धेश्वर ने गुरु पूजन प्रारंभ किया ...

गुरु पूजन पूर्ण होते होते उनके गुरुदेव कापालिक भैरवेश्वर का बिंब कक्ष में प्रकट हो गया ... दोनों ने उन्हें प्रणाम किया ।

गुरुदेव कापालिक भैरवेश्वर ने बालक गजेंद्र को अपनी तरफ संकेत करके बुलाया . . .

गजेंद्र उनके पास जाकर खड़ा हो गया । अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से गुरुदेव कापालिक भैरवेश्वर ने बालक गजेंद्र के माथे पर दोनों भवों के बीच वाले भाग पर आघात किया ....

उस आघात के साथ ही प्रचंड कुंडलिनी शक्ति बालक के अंदर जागृत होने लगी .....

वह भयंकर पीड़ा से फड़फड़ाने लगा और 5 सेकंड में बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़ा .....

इसके बाद गुरुदेव कापालिक भैरवेश्वर ने विभिन्न प्रकार की क्रियाओं द्वारा उसके प्रत्येक चक्र को जागृत किया तीन दिन तक बालक उसी प्रकार बेहोशी की अवस्था में पड़ा रहा ....

चौथे दिन उसे होश आया और होश आते ही वह पद्मासन लगाकर बैठ गया ।

उसके इस प्रकार पद्मासन लगाकर बैठते ही गुरुदेव के चेहरे पर मंद मुस्कान बिखर गई।
यह इस बात का प्रतीक था कि बालक के शरीर ने कुंडलिनी की प्रचंड ऊर्जा को अपने अंदर समाहित कर लिया है ।
कुंडलिनी शक्ति की उर्जा बहुत भयंकर होती है ।
इसके जागरण के समय असहनीय पीड़ा से होकर गुजरना पड़ता है ।
शरीर के अंदर का सब कुछ टूट फूट कर बिखर गया हो ऐसा प्रतीत होता है ।
उसके बाद वह सब कुछ एक नए सिरे से प्रचंड शक्ति से पुन: निर्मित होता है और एक बेहतर शरीर का भी निर्माण होता है ।
इसे आप सामान्य भाषा में संपूर्ण शरीर का अपग्रेडेशन मान सकते हैं यानी पहले के मुकाबले कई गुना बेहतर संस्करण या मॉडल ।

जब गुरुदेव ने सहस्त्रार चक्र का जागरण प्रक्रम प्रारंभ किया तो उसका शरीर पूरी तरह से पारदर्शी होने लगा ।
जिसमें अब सारे चक्र घूमते हुए दिखाई दे रहे थे ।

कुछ क्षणों तक यह स्थिति रही ।

उसके बाद फिर सब कुछ सामान्य हो गया ।

बालक गजेंद्र समाधि की अवस्था में जा चुका था । उसकी यह समाधिस्थ अवस्था अब कम से कम कुछ दिनों तक रहने वाली थी....
गुरुदेव कापालिक भैरवेश्वर ने संकेत से कापालिक सिद्धेश्वर को अपने पास बुलाया और उसे भी कुछ विशिष्ट दीक्षाएं प्रदान की ।

वह बोले - बेटा सिद्धेश्वर ! मुझे जो प्रक्रिया करनी थी वह मैंने कर दी है । इसके बाद इस बालक के शरीर में शक्ति और ऊर्जा का प्रचंड स्वरूप जागेगा ।
इतनी उर्जा सामान्यतः किसी भी साधक को 6 महीने की समय अवधि में ही दी जाती है लेकिन यह सिद्ध आत्मा है इसलिए इसने इतने अल्प समय में ही इस ऊर्जा को आत्मसात किया है ।
इसे नियंत्रित, संतुलित और विकसित करना अब तुम्हारी जिम्मेदारी है । तुम्हें अभी कुछ समय तक इसी गुफा में इस बालक के साथ रहना होगा । जब तक की यह

बालक स्वयं अपनी शक्तियों को संभालने के योग्य ना हो जाए ।

कापालिक सिद्धेश्वर ने हाथ जोड़कर सहमति जताई ...

गुरुदेव आगे बोले - बेटा ! जैसा कि तुम जानते हो इस बालक के अंदर महा सिद्ध कापालिक वीरेश्वर की आत्मा विद्यमान है । उनकी शांत देह इसी गुफा के एक तहखाने में रखी हुई है ।

उन्होंने परकाया प्रवेश के माध्यम से गर्भ में प्रवेश लिया था !
लेकिन उनके शरीर को कुछ विशिष्ट क्रियाओं के द्वारा अभी तक संरक्षित करके रखा गया है ।
जब उपयुक्त समय आएगा तब तुम्हें उसी शरीर के ऊपर बैठा कर इस बालक को शव साधना करानी है ।
जिसके बाद इसकी साधना यात्रा का प्रारंभिक चरण पूर्ण हो जाएगा और उसके बाद तुम उसे वापस ले जाओगे ....

यह बात सुनने में विचित्र लग सकती है लेकिन हमारे कई ग्रंथों में इस प्रकार की घटनाओं का विवरण मिलता

है । इसमें से सबसे बड़ा उदाहरण जगतगुरु आदि शंकराचार्य का है ।

उस समय पूरे भारतवर्ष में बौद्ध धर्म राज धर्म के रूप में स्वीकृत हो चुका था।

आदि शंकराचार्य दक्षिण भारत के केरल राज्य से सनातन धर्म की पताका को पुनर्स्थापित करने के लिए 8 वर्ष की अवस्था में निकले थे । सुदूर केरल से वह उज्जैन में अपने गुरु गोविंद पादाचार्य के पास पहुंचे और उनसे ज्ञान प्राप्त करने के बाद अपना कार्य प्रारंभ किया ।

उस समय शास्त्रार्थ होते थे । जिसमें दो विद्वान किसी विषय पर अपने अपने तर्क देते थे । जिसका तर्क श्रेष्ठ होता था वह विजयी माना जाता था ।
यह कुछ-कुछ आज के समय की वाद विवाद प्रतियोगिता जैसा है ।

आचार्य मंडन मिश्र एक अत्यंत ही उच्च कोटि के विद्वान थे । उनकी पत्नी सरस्वती भी अत्यंत गुणी और ज्ञानी महिला थी ।

आदि शंकराचार्य जी ने उस समय के उद्भट विद्वान मंडन मिश्र को शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित किया ।
विद्वानों के लिए शास्त्रार्थ ठीक वैसा ही होता था !
जैसे पहलवानों के लिए कुश्ती की चुनौती !!
उसे अस्वीकार करने का मतलब सामने वाले से हार स्वीकार कर लेना होता ।
पहलवान कुश्ती की चुनौती को अस्वीकार नहीं करता और विद्वान व्यक्ति शास्त्रार्थ की चुनौती को अस्वीकार नहीं करता ।
मंडन मिश्र ने भी चुनौती को स्वीकार कर लिया ।

दोनों ही अत्यंत उच्च कोटि के विद्वान थे । किसी भी प्रकार की शास्त्रार्थ में एक निर्णायक का होना भी जरूरी होता है !
अब दिक्कत यह आ रही थी कि इतने उच्च कोटि के दो विद्वानों के शास्त्रार्थ का निर्णय लेने वाला निर्णायक भी वैसा ही उच्च कोटि का होना चाहिए ।
मंडन मिश्र ने अतिथि का सम्मान करते हुए शंकराचार्य से कहा - आप जिसे उचित समझें ! निर्णायक के

स्वरूप में स्वीकार कर सकते हैं ! मुझे आपका निर्णय स्वीकार होगा ।

आचार्य ने कहा - मुझे देवी सरस्वती से श्रेष्ठ निर्णायक कोई दिखाई नहीं दे रहा है अगर आपको आपत्ति ना हो तो मैं उन्हें निर्णायक के रूप में स्वीकार करना चाहूंगा ।

आचार्य मंडन मिश्र अपनी पत्नी की विद्वत्ता को तो जानते ही थे इसलिए उन्होंने भी इसे स्वीकार किया ।

इस प्रकार से सरस्वती निर्णायक बनी ।

अब आप सोचें कि आज से कई सौ साल पहले भारत मे दो विद्वानों के शास्त्रार्थ की निर्णायक या जज एक महिला बन सकती थी । संभवतः ऐसी स्वतंत्रता किसी और धर्म या देश मे नहीं थी ।
कालांतर मे मुग़ल आक्रान्ताओं और कुटिल अंग्रेजों के प्रभाव के चलते हम एक ऐसे देश और समाज का निर्माण कर बैठे जहां छोटी छोटी बच्चियाँ भी सुरक्षित नहीं है .. ..
खैर .. वह एक अलग विषय है ।।

तो शास्त्रार्थ का दौर आगे चलता गया ।
काफी समय के बाद आदि शंकराचार्य के तर्कों के सामने आचार्य मंडन मिश्र कमजोर पड़ते नजर आने लगे ।
और एक स्थिति ऐसी आ गई जब उन्होंने हार स्वीकार कर ली ।

सरस्वती ने कहा - आचार्य मंडन मिश्र पराजित हो चुके हैं । लेकिन अभी वह पूर्ण रूप से पराजित नहीं हुए हैं ।
वहां उपस्थित लोग देवी सरस्वती की बात को समझ नहीं पाए तब उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट किया।
वो बोली - पत्नी को अर्धांगिनी कहा जाता है।
अर्थात आधा अंग जब तक आप उस आधे अंग को पराजित नहीं कर पाएंगे तब तक पूर्ण पराजय नहीं मानी जाएगी। अतः मुझे भी आपको पराजित करना होगा तभी आप पूर्ण रूप से विजयी माने जाएंगे ।

आदि शंकराचार्य ने सहमति जताई ।
चिंतन करें !

एक वेदज्ञ , देश भर में विख्यात विद्वान को एक स्त्री से शास्त्रार्थ मे आपत्ति नहीं थी .. ..
वह उसे निर्णायक मानने को तैयार था !

अर्थात प्राचीन काल मे सनातन धर्म में पुरुष और स्त्री दोनों को समान अधिकार उपलब्ध थे । कालांतर में कई प्रकार की विकृतियां आती चली गई जिनमें अब काफी सुधार आ चुका है ।

आदि शंकराचार्य और सरस्वती के बीच में शास्त्रार्थ चालू हुआ और दो दिन तक उनका शास्त्रार्थ भी चलता रहा । आदि शंकराचार्य तर्कों के आधार पर आगे चल रहे थे ।
अंत में सरस्वती ने अपना अंतिम प्रश्न किया - स्त्री और पुरुष के बीच का संभोग क्या है ? और इससे शिशु का जन्म कैसे होता है ?

आदि शंकराचार्य प्रश्न की गूढ़ता और उसके महत्व को समझ गए ।
ज्ञान वही सही माना जाता है जो अनुभव गम्य हो.....

उन्होंने पूछा - मैं सन्यासी हूँ ! क्या मैं पढे गए ज्ञान के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं । क्या यह आपको स्वीकार्य होगा ।
सरस्वती ने कहा - जो अनुभव गम्य हो उसी ज्ञान के आधार पर उत्तर दिया जा सकता है ।

आदि शंकराचार्य धर्म संकट में फंस गए !

सन्यास जीवन में रहते हुए स्त्री पुरुष संबंध रखना सन्यास धर्म के विरुद्ध हो जाता !!

जब तक स्त्री पुरुष संबंध का व्यवहारिक ज्ञान ना हो अर्थात अनुभव ना हो तब तक वे देवी सरस्वती के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते थे !!!

ऐसी स्थिति में उनको पराजय स्वीकार करनी पड़ती ।

उन्होंने कहा - देवी ! आप मुझे 6 माह का समय दें तो मैं आपको इस प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं ।

देवी सरस्वती ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया और शास्त्रार्थ को छह महीने के लिए निलंबित कर दिया गया ।

सभी ने सोचा कि आदि शंकराचार्य शास्त्रार्थ से बचने के लिए और हार के अपमान से बचने के लिए छह महीने की समय अवधि लेकर चले गए हैं और अब पलटकर शायद ही वापस आएंगे ।

लेकिन आदि शंकराचार्य जी का विचार तो कुछ और ही था.. .. ..

परकाया प्रवेश अर्थात दूसरे की देह मे अपनी आत्मा का प्रवेश करा देना !
यह एक अभूतपूर्व सिद्धि है जो उनको प्राप्त थी ॥

इसका प्रयोग कर वे एक मृत राजा के शरीर मे प्रवेश कर गए और छह माह तक उसी शरीर मे रहकर रानियों के माध्यम से जो अनुभव हुए उसके आधार पर प्रश्नों का उत्तर देकर शस्त्रार्थ मे विजयी हुए । जिसके बाद मंडन

मिश्र तथा उनकी पत्नी ने उनका शिष्यत्व स्वीकार किया ।

इसके पहले उन्होंने अपनी देह को एक गुफा मे शिष्यों के संरक्षण मे रख दिया था । वह देह उसी गुफा मे छह माह तक रही , जब आदि शंकर वापस राजा का शरीर त्याग कर लौटे तब पुनः वह शरीर जीवित हो गया ।

ये सारी बातें सुनने में बहुत विचित्र लग सकती है॥
तंत्र ग्रंथों मे 18 प्रकार की सिद्धियों का वर्णन है। जिनमें से एक परकाया प्रवेश भी है ।

पर = दूसरा और काया = देह अर्थात दूसरे के देह मे प्रवेश ।

उसी सिद्धि का प्रयोग करते हुए आदि शंकराचार्य ने अपनी देह छोड़कर राजा की देह ग्रहण की थी । जिस प्रकार की घटना का कहानी मे मैं उल्लेख कर रहा हूँ वह इसी प्रकार की सिद्धि के माध्यम से संभव है ।

प्राचीन काल में मृत देह को संरक्षित करने की कई प्रकार की विधियाँ लोगों के संज्ञान में थीं !

अगर आप मिस्र के पिरामिड को जानते होंगे तो..... वहाँ पर रखी हुई ममी ही सबसे रहस्यमय मानी जाती है !!
उसमें संरक्षित शवों की आयु कई सौ साल की है.....
लेकिन इसके बावजूद उनको जिस प्रकार से संरक्षित करने की व्यवस्था की गई है उसके चलते शवों का आकार तथा स्वरूप अभी भी काफ़ी अच्छा दिखाई देता है।

प्रख्यात तंत्र लेखक श्री अरुण कुमार शर्माजी ने अपने ग्रंथों में भी अपनी तिब्बत यात्रा के दौरान इस प्रकार से संरक्षित किये गये शवों का विवरण दिया है !! अर्थात कहीं न कहीं इस प्रकार की सिद्धि और मृत देह को संरक्षित रखने की प्रक्रिया मौजूद है .....

संभवतः भविष्य के किसी काल खंड में हम इन विधियों को और प्रक्रियाओं को देख भी पाएंगी और समझ भी पाएंगे.....

अभी हम अपनी कथा की ओर लौटते हैं.....

इन सारी बातों का ज़िक्र मैंने इसलिए किया क्योंकि कापालिक वीरेश्वर जो अब बालक गजेंद्र के शरीर में हैं उन्होंने अपनी देह को इसी प्रकार से संरक्षित कर दिया था और अपनी आत्मा को उस बालक के अंदर प्रवेश करा दिया था .....
इस प्रक्रिया में उनकी उसी देह का आगे की साधना में उपयोग होगा !
इसलिए देह अभी भी संरक्षित रखी हुई है .....

कापालिक गुरुदेव भैरवेश्वर ने अपने शिष्य कापालिक सिद्धेश्वर को सारी प्रक्रियाएं समझा दी थी और उसे बालक गजेंद्र के संरक्षण का उत्तरदायित्व सौंप दिया । कापालिक सिद्धेश्वर ने गुरुदेव को साष्टांग दंडवत प्रणाम किया और उसके बाद गुरुदेव वहां से लुप्त हो गए .....

बालक गजेंद्र लगभग 21 दिन तक उसी समाधि की अवस्था में रहा !

इस दौरान कापालिक सिद्धेश्वर उस गुफा में ही बालक का संरक्षण करने के लिए निरंतर विद्यमान् रहे .....

यह स्थिति 21 दिन के बाद जब समाप्त हुई .....

तब बालक गजेन्द्र अपने पूर्वजन्म को पूरी तरह से पहचान चुका था !!

समाधि से बाहर आने के बाद बालक गजेन्द्र को कापालिक सिद्धेश्वर ने गुरु निर्देशानुसार अघोरेश्वर महादेव की साधना प्रारंभ करवा दी ।
यह साधना तीन महीने की होती है.....

इसमें तीन चार चीज़ों का विशेष ध्यान रखा जाता है .....

सबसे प्रमुख बात यह है कि यह भगवान शिव के मूल स्वरूप की साधना है.....
अर्थात दिगंबर भस्मधारी अघोरेश्वर भगवान शिव .....
जो शमशान वासी है .....
उनकी साधना उनके समान स्वरूप धारण करके ही की जाती है ॥

कापालिक सिद्धेश्वर ने चिता भस्म की व्यवस्था की और उस भस्म का लेप बालक गजेंद्र के पूरे शरीर में किया । चिता भस्म का प्रयोग केवल कापालिक और अघोरी ही कर सकते हैं .....

किसी भी गृहस्थ को भूलकर भी इसका उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इसके साथ साथ कई प्रकार की श्मशानी शक्तियां भी घर के अंदर प्रवेश कर जाती है .....

जो कई प्रकार की परेशानियों में डाल सकती है !!!

कापालिक सिद्धेश्वर ने बालक को अघोरेश्वर साधना की प्रक्रिया के लिए तैयार कर दिया !

वह बालक एक शिलाखंड के ऊपर बैठकर साधना में लीन हो गया .....

इस साधना के दौरान अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए.....

स्त्री प्रसंग तो दूर की बात है स्त्री का स्पर्श भी नहीं होना चाहिए.....

अगर स्त्री यह साधना कर रही है तो उसे पुरुष का स्पर्श नहीं होना चाहिए !!!
अब बालक गजेंद्र छोटा था इसलिए उसे इस प्रकार की किसी दिक़्क़त नहीं आने वाली थी .....
वह पूरी पूरी श्रद्धा और पूर्णता के साथ अपनी साधना में लग गया.....

बालक गजेंद्र का शरीर धीरे धीरे आभा बिखेरता जा रहा था.....
वह गुफा उसके प्रकाश से प्रकाशित होने लगी ।

तीन महीने की साधना जिस दिन पूर्ण हुई.....

आसमान में बादल गरजने लगा और घनघोर वर्षा होने लगी !
किसी अज्ञात जगह से पानी रिस रिस कर उस गुफा में भी भरने लगा !

धीरे-धीरे पानी बालक के आसन तक पहुंच गया लेकिन बालक उसी प्रकार से साधना में लीन रहा .....

उसके बाद धीरे धीरे पानी ऊपर की ओर बढ़ने लगा और बालक गर्दन तक पानी में डूब गया !

इसके बावजूद बच्चे ने साधना नहीं छोड़ी वह अपने मंत्र जाप में लगा रहा !

कापालिक सिद्धेश्वर प्रभु की लीला को देखता हुआ खड़ा था लेकिन उसे मानसिक संकेत मिल चुका था कि इस मामले में से हस्तक्षेप नहीं करना है।

इसलिए वह अवश खड़ा होकर परिस्थितियों को देख रहा था !

पानी धीरे-धीरे बढ़ता हुआ बालक गजेंद्र के मुंह तक पहुंचा और अगले ही क्षण पानी उसकी नाक तक पहुंच गया तब भी बालक गजेंद्र सांस रोककर मंत्र जाप करता रहा।

लगभग 2 मिनट तक पानी वैसा ही रुका रहा और उसके बाद संभवत बालक के दृढ़ निश्चय को देखता हुआ धीरे-धीरे नीचे की ओर उतरने लगा और पांच सात मिनट के अंदर पूरी गुफा साफ हो गई कापालिक सिद्धेश्वर ने चैन की सांस ली .....

जैसे ही बालक का मंत्र जाप पूर्ण हुआ वह गुप्त कक्ष
देवीय आभा से जगमगा उठा !!

सामने प्रकट थे ॥॥
जगद्गुरु !
आदि पुरुष !!
महाकालेश्वर !!
देवाधिदेव !!
महादेव !!!
साक्षात अपने मूल अघोरश्वर स्वरूप में !!!

सारे शरीर पर चिता की भस्म लिपटी हुई.....

एक हाथ अभय की मुद्रा में उठा हुआ .....
और दूसरा हाथ प्रचंड त्रिशूल को अपने बलशाली हाथों
में थामे हुए !!!

ऐसा त्रिशूल !
जिसकी चमक हज़ारों सूर्यों को भी मात देने वाली
प्रतीत हो रही थी !!

प्रभु के दर्शन पाकर बालक गजेंद्र फूट फूटकर रोने लगा और दौड़कर उनके चरणों से लिपट गया !
प्रभु के दर्शन की भावविह्वलता में बालक गजेन्द्र बह रहा था....
उसकी आँखों से आंसुओं की धारा निकलकर भगवान शिव के चरणों को पखार रही थी !!!

चरण प्रक्षालन की प्रक्रिया पूजन का एक अंग होती है जिसमे पानी से इष्ट के चरणों को धोया जाता है .....

अपने आंसुओं से अपने इष्ट का चरण प्रक्षालन करना इसकी सर्वश्रेष्ठ स्थिति मानी जाती है .. .. ..

बालक गजेन्द्र वैसे ही पूजन में था .....

उसकी यह भावविह्वलता भगवान शिव के आँखों से बह रहे करुणा के प्रवाह को और बढ़ा रही थी .....
भगवान शिव ने बालक गजेंद्र के सर पर अपना हाथ फेरा और लुप्त हो गए !!!

भगवान शिव के पावन स्पर्श के बाद बालक गजेन्द्र फिर से समाधिस्थ हो गया और इस बार उसकी समाधि पूरे छह महीने तक रही .....

इन छह महीनों के दौरान उसके आंतरिक शरीर में कई प्रकार के परिवर्तन महादेव की कृपा से होते रहे.....

उसके माथे पर स्वयं तीन लकीरें स्पष्ट होने लगी.....

जैसा भगवान शिव का त्रिपुंड होता है ठीक वैसे ही लकीरें !
प्राकृतिक रूप से !
उसके माथे पर दिखाई देने लगी थी .....

ऐसा केवल अभूतपूर्व सिद्ध साधकों के माथे पर दिखाई देता है ।
सामान्यतः माथे पर आड़ी लकीरें कई लोगों के माथे पर होती है । इसमें भी कुछ लोगों के माथे पर तीन या अधिक लकीरें स्पष्ट दिखाई देती है .....
लेकिन खड़ी लकीर बहुत कम लोगों के माथे पर होती है ।

अगर होती है तो उसमें अधिकांश के माथे पर एक ही लकीर होती है .....

बहुत ज़्यादा हुआ तो एक छोटी लकीर और माथे पर दिखाई देती है.....

स्पष्ट रूप से माथे पर तीन खड़ी लकीरें उन्ही सिद्ध पुरुषों की दिखाई देती है जो प्रचंड आध्यात्मिक शक्ति संपन्न होते हैं ।

इसके बाद कापालिक सिद्धेश्वर ने हठयोग की साधना कारवाई ।
जिसमें बालक गजेंद्र को एक पांव पर खड़े होकर 6 माह तक साधना करनी थी .....

यह साधना सुनने में जितनी सरल लग रही है करने में उतनी ही कठिन है । गजेंद्र को यह साधना एक वटवृक्ष के नीचे खड़े होकर करनी थी वट वृक्ष भी ऐसा जो किसी नदी के तट पर स्थित हो ..
वैसे ही एक वटवृक्ष के नीचे बालक गजेंद्र ने अपना हठ योग साधना का प्रक्रम प्रारंभ किया ।

बालक एक पांव पर खड़ा हो गया और अपने दोनों हाथों को प्रणाम की मुद्रा में अपने सर के ऊपर उठा लिया !

इसी मुद्रा में उसे आगामी 6 महीने तक रहकर मंत्र जाप करना था ।
जैसा कि आप भी समझ सकते हैं इस प्रकार की स्थिति अचानक से नहीं बनती है और एक बालक के लिए ऐसे खड़े होना उससे भी ज्यादा मुश्किल स्थिति थी ।
ऐसे में गुरुओं को कठोर होना पड़ता है क्योंकि साधना का पथ कांटों पर चलने के समान है !
उसमें चलने वाले साधक को हर परिस्थिति के लिए तैयार रखना पड़ता है अनंत प्रकार की प्रताड़नायें उसका स्वागत करने को तैयार रहती है ।

आम आदमी किसी गरीब साधक की मदद करने की बात कभी नहीं सोचता है .....
हां !
लांछन लगाने की अगर नौबत आ जाए !
तो घटिया से घटिया आदमी भी .....

किसी भी साधु या आध्यात्मिक व्यक्ति के बारे में अनाप-शनाप बकने में कोई कमी नहीं रखता है ।

एक सामान्य उदाहरण के रूप में आप किसी छोटे मंदिर के पुजारी को ही देख लीजिए । वह अपने तरफ से उस मंदिर के रखरखाव की व्यवस्था करता है । पूजन सामग्री जुटाता है और सारी प्रक्रिया संपन्न करता है .....

और बदले में अपेक्षा रखता है कि कम से कम उसका और परिवार के जीने खाने लायक दान दक्षिणा मिल जाए । लेकिन होता क्या है ????

हम अगर बालाजी मंदिर जाएं .....या साईं बाबा के मंदिर जाएं जो कि अत्यंत भव्य होता है तो वहां की भव्यता को देख कर हम अपने आप से दीन महसूस करते हैं और ज्यादा दक्षिणा चढ़ा देते हैं .....

लेकिन.....

जो मंदिर हमारे आसपास होता है ! उसके पुजारी के लिए हम अलग से ₹1 का सिक्का निकाल कर रखते हैं .....

क्योंकि हम यह समझते हैं कि इससे ज्यादा नहीं देना है ।

यह स्थिति धीरे-धीरे पुजारियों को मंदिरों से विमुख कर रही है और अगर ऐसी ही स्थिति चलती रही तो आप यह मानकर चलिए कि सनातन धर्म के मंदिरों में वास्तविक पुजारियों की संख्या नहीं के बराबर रह जाएगी ।

हम जब भी पूजन करते हैं तो उस पूजन में कुल देवता का जिक्र आता है और स्थान देवता का भी जिक्र आता है अर्थात इन सभी का पूजन करना अनिवार्य है !

जो देवी या देवता का मंदिर हमारे आस पास है, उसके अंदर भी पूजन सही ढंग से होता रहे .....यह हमारी जिम्मेदारी है !

इसलिए अगली बार कोशिश करिए इस बात को समझने की कि आपकी दक्षिणा से ही वह मंदिर चल रहा है और कम से कम इतनी दक्षिणा अवश्य चढ़ाईये की पुजारी के एक समय की चाय का इंतजाम तो हो जाए । इससे आपको बहुत ज्यादा नुकसान नहीं होगा लेकिन वह पुजारी ज्यादा उत्साह से काम करेगा और बेहतर ढंग से पूजन करेगा जिससे आपके आराध्य प्रसन्न होंगे ।

तो मैं कह रहा था कि गुरुओं को कठोर होना पड़ता है ! अब गजेन्द्र तो एक नन्हा सा बालक था लेकिन उसको अपने समय से बहुत पहले बहुत कुछ कर कर अपने कार्य में संलग्न होना था । इसलिए उसे इस प्रकार की कठोर साधना कराई जा रही थी ।

जिन बच्चों को बचपन से ही कठोर अभ्यास कराया जाता है वही बच्चे आगे चलकर गीता फोगाट जैसे अंतरराष्ट्रीय पहलवान बनते हैं और देश का नाम रोशन करते हैं । ठीक वैसे ही साधना के क्षेत्र में भी जो बच्चे बाल्यकाल से ही कठोर साधना में और निरंतर मंत्र जाप में लीन रहते हैं वही आगे चलकर उच्च कोटि के साधक बनते हैं .....

बालक गजेंद्र ने छह माह की हठ योग की साधना भी संपन्न कर ली और अपनी साधना के अंतिम चरण में पहुंच गया .....

अब एक ही साधना बची थी .....

और वह थी .....

शव साधना.....

जो उसे अपनी ही पूर्व जन्म की देह पर बैठकर संपन्न करनी थी .....

दूसरी ओर .....

जब महेंद्रगढ़ में युद्ध चल रहा था उस समय आचार्य विद्यानंद शास्त्री अपने गुरु से मिलने रुद्रप्रयाग गए हुए थे । मालिनी और बच्चे भी उनके साथ ही थे ।

जब आचार्य रुद्रप्रयाग पहुंचे तो उनके गुरु परमहंस अद्वैतानंद जी ने जब पूर्णानंद और वैभवी को देखा तो उन्होंने दोनों को श्रद्धा भाव से नमस्कार किया....

यह देख कर आचार्य को भी आश्चर्य हुआ ।

हर शिष्य के लिए अपना गुरु ही सबसे सिद्ध पुरुष होता है ।

वह जिसे प्रणाम कर रहे हैं वह कितनी दिव्य आत्मा होगी यह सोचकर आचार्य हर्षित हुए ।

गुरुदेव ने स्पष्ट किया - बेटा विद्यानंद ! यह दोनों अत्यंत ही उच्च कोटि के सिद्ध योगी है जिन्होंने तुम्हारे यहां जन्म लिया है । ग्यारह वर्ष की अवस्था में पहुंचते तक इन दोनों को अपने पूर्व जन्म की स्मृति होने लगेगी और

उसके बाद संभव है कि दोनों सन्यासी हो जाएं । तुम्हें इस स्थिति के लिए भी तैयार रहना है.....

यह बात सुनकर मालिनी को गर्व भी हुआ और दुख भी .....
लेकिन भवितव्यता को कोई नहीं रोक सकता है यह सोचकर उसने संतोष कर लिया ।

आचार्य तथा मालिनी को नीलकंठ के साथ बाहर कुटिया में विश्राम करने के लिए कह कर गुरुदेव ने दोनों बच्चों को अपने साथ लिया और अपने साधना कक्ष की ओर चले गए ।

साधना कक्ष में पहुंचने के बाद उन्होंने कक्ष का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया और दोनों बच्चों को अपने पास बिठाकर अति विशिष्ट और गोपनीय सिद्ध मंत्रों का उच्चारण करते हुए उनको दीक्षा प्रदान की !
जैसे ही उनके माथे पर अपने दोनों हाथों से स्पर्श किया तो वहां का दृश्य पूरा बदल गया या यूं कहिए कि वे तीनों एक नए स्थान पर पहुंच गए.....

चारों तरफ बर्फ बिखरी हुई थी और एक गुफा के अंदर वे तीनों मौजूद थे !
सामने मृग चर्म के आसन पर एक सिद्ध तेजस्वी पुरुष बैठे हुए थे.....

तीनों ने उनको झुककर प्रणाम किया !
लगभग 5 मिनट के बाद उनका ध्यान भंग हुआ और उन्होंने ओमकार का उच्चारण करते हुए अपनी आंखें खोली और कहा - अद्वैतानंद तुम आ गए !

उन्होंने दोनों बच्चों को देखा तो उनके चेहरे पर एक प्रखर मुस्कान बिखर गई.....
वे अपने आसन से उतर कर नीचे आए !
अद्वैतानन्दजी उनके चरणों में दंडवत प्रणाम कर रहे थे !
बच्चों ने भी देखकर वैसा ही किया.....

उन्होंने दोनों बच्चों को उठाया और उनके सर पर अपना एक-एक हाथ रख दिया । थोड़ी देर में दोनों बच्चों का शरीर वायव्य होने लगा पूरा पारदर्शी और उस शरीर के अंदर घूमते हुए चक्र स्पष्ट दिखाई दे रहे थे....
ऐसा प्रतीत हो रहा था

जैसे.....

चक्र के विवरण वाला कोई एनिमेशन वीडियो देख रहे हो .....

कुछ देर के बाद एक विचित्र घटना हुई ।

वह तीनों अर्थात वह सिद्ध पुरुष और दोनों बच्चे वहां से लुप्त हो गए !

अद्वैतानंद को जाने से पहले उस सिद्ध पुरुष ने वहीं रुकने का निर्देश दे दिया था ।

तीनों उस स्थान से वायु मार्ग से होते हुए कैलाश पर्वत पर पहुंच गए ।

वहां पर विराजमान थे सिद्धेश्वर महादेव साक्षात मंद मंद मुस्कुराते हुए !

अपने अर्ध निमीलित नेत्रों से करुणा की वर्षा करते हुए ।

तीनों ने झुक कर उनको प्रणाम किया !

महाप्रभु का हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठा !

और फिर वह ध्यानस्थ हो गए !!!

तीनों ने कैलाश पर्वत की वायु मार्ग से ही सात बार परिक्रमा की और पुनः उसी गुफा में वापस प्रकट हो गए ।

सिद्ध पुरुष ने अद्वैतानन्द से कहा - पुत्र ! इनको लगातार सुरक्षा प्रदान करते रहना ।

इतना कहकर वे पुनः अपने आसन पर जाकर ध्यानस्थ हो गए ।

गुरुदेव अद्वैतानंद बच्चों को लेकर फिर अपने कक्ष में आ गए ।
अभी भी बच्चों का शरीर उसी प्रकार से वायव्य था ....

अद्वैत आनंद जी ने शांति मंत्रों का उच्चारण किया और दोनों बच्चों के सिर पर हाथ फेरा वे पुनः सामान्य अवस्था में आ गए ।
अद्वैत आनंद जी ने दोनों बच्चों को साधना कक्ष में ही सुला दिया और स्वयं बाहर चले गए .....
उस रात दोनों बच्चे उसी साधना कक्ष में सोए !
अगले दिन प्रातः जब वे कक्ष से बाहर निकले तो उनका चेहरा दिव्य आभा से चमक रहा था.....

इसे देखकर आचार्य और मालिनी दोनों दंग भी थे और प्रसन्न भी ....

इसके बाद आचार्य अपनी पत्नी और बच्चों के साथ वापस महेंद्रगढ़ लौट आए ।
यहां आगमन के बाद उन्हें गजेंद्र के विषय में तथा युद्ध के विषय में पूरी जानकारी हुई । समय का प्रवाह आगे की ओर बढ़ता रहा ..

पूर्णानंद और वैभवी दोनों ही अत्यंत मेधावी बच्चे हैं ! किसी भी चीज को एक बार पढ़ लेने से ही उनको याद हो जाता है !
छह साल की आयु में पहुंचते-पहुंचते दोनों को चारों वेद कंठस्थ हो चुके हैं !
आश्रम वासी भी उनकी अद्भुत प्रतिभा को देखकर आश्चर्य करते !
जिससे कभी-कभी नीलकंठ अपने आपको बहुत ज्यादा उपेक्षित भी महसूस करता ! क्योंकि उनके आगमन से पहले वही सारे लोगों के प्रोत्साहन और ध्यान का केंद्र था और उसे ही प्रतिभाशाली माना जाता था , लेकिन

इन दोनों की प्रतिभा के सामने उसकी प्रतिभा नगण्य सी हो चली थी ।

कभी-कभी पूर्णानंद और वैभवी एक साथ मिलकर पार्थिव शिवलिंग का पूजन करते थे । पार्थिव शिवलिंग मिट्टी का बना हुआ शिवलिंग होता है जिसे पूजन के पश्चात नदी में या किसी जलस्रोत में विसर्जित कर दिया जाता है । पार्थिव शिवलिंग का पूजन बेहद लाभदायक माना जाता है । इसकी विधि बेहद सरल भी है और बेहद जटिल भी, जैसा कि भगवान शिव के पूजन का होता है ।
ऐसा माना जाता है कि महर्षि वेदव्यास के अलावा किसी को भी भगवान शिव के पूजन की संपूर्ण विधि ज्ञात नहीं है ॥

दोनों बच्चों का पार्थिव शिवपूजन देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते थे क्योंकि बिना किसी ग्रंथ की सहायता के दोनों बच्चे एक स्वर में लगभग दो ढाई घंटे तक निर्बाध शिवलिंग का पूजन संबंध संपन्न करवाते थे । सारे आश्रम वासी ऐसे अवसर की प्रतीक्षा करते थे जब बच्चे इस प्रकार का पूजन संपन्न करें । उनके

पूजन करने का कोई विशेष मुहूर्त भी नहीं हुआ करता था । अचानक किसी दिन किसी विशिष्ट समय पर वह पार्थिव शिवलिंग के निर्माण में लग जाते थे । जिसे देखकर अब आश्रम वासी समझने लगे थे कि पूजन संपन्न होने वाला है ।

आचार्य विद्यानंद शास्त्री जानते थे कि दोनों अत्यंत उच्च कोटि की आत्माएं हैं जो काल के विशिष्ट क्षणों को समझने में सक्षम है ! इसलिए उनके किसी भी कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते थे ! जिसे आश्रम मासी उनका अनुमोदन मानते थे !

और उनके द्वारा किए जा रहे पूजन में अत्यंत उत्साह के साथ भाग लेते थे ।

पूजन समाप्त हो जाने के बाद दोनों बच्चे घंटों तक ध्यान की अवस्था में उसी शिवलिंग के सामने बैठे रहते ....

सारे लोग चले जाते लेकिन वे दोनों उसी प्रकार शिवलिंग के सम्मुख ध्यानस्थ अवस्था में बैठे रहते ! ऐसी स्थिति में उनकी सुरक्षा का दायित्व नीलकंठ को सौंप दिया गया था और वह अपने इस उत्तरदायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाता था ।

आचार्य विद्यानंद शास्त्री ने उसे उन दोनों बच्चों की वास्तविकता से अवगत करा दिया था । इसलिए अब उसके अंदर ईर्ष्या का भाव नहीं आता था बल्कि उसे ऐसा प्रतीत होता था कि इन सिद्ध आत्माओं की रक्षा करना उसका उत्तर दायित्व है ।
उसके इस प्रकार के व्यवहार को देखकर आचार्य और मालिनी भी अत्यंत प्रसन्न होते थे !
समय धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ता जा रहा था

उधर कापालिक सिद्धेश्वर अपनी गुफा में बालक गजेंद्र को साधना के पथ पर धीरे-धीरे आगे बढ़ा रहे थे....
जटिलतम साधनात्मक प्रक्रिया से गुजरता हुआ बालक गजेंद्र सिद्ध हो चुका था ।
ऐसा करते करते 5 वर्ष बीत गए और आखिरकार वह समय भी आ गया, जब बालक गजेंद्र को शव साधना संपन्न करनी थी !
कापालिक सिद्धेश्वर ने बालक से कहा - वत्स गजेंद्र ! तुम्हें आज रात शव साधना संपन्न करनी है । जिसके लिए हमे सिद्ध कापालिक वीरेश्वर के शव को गुप्त तहखाने से बाहर निकालना पड़ेगा । उसके लिए पहले

तुम्हें उस गुप्त तहखाने मे जाना होगा और वहीं पर बैठकर यह साधना संपन्न की जाएगी ।

यह साधना तुम्हें स्वयं पूर्ण करनी है क्या तुम इसके लिए तैयार हो ?

बालक गजेंद्र ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया - हां मैं तैयार हूं ।

गुफा के नीचे जाने के लिए सीढ़ियां थी !

उन सीढ़ियों से उतर कर कापालिक सिद्धेश्वर और गजेंद्र नीचे उतरते चले गए !

गुफा के नीचे लगभग 40 सीढ़ियां उतरने के बाद एक लंबा गलियारा दिखाई दिया !

जो किसी अज्ञात प्रकाश से जगमगा रहा था !

गलियारे के दोनों तरफ कमरे बने हुए थे !

वह संख्या में लगभग 20 रहे होंगे !

उन कमरों का आकार कुछ 4 फीट बाय 8 फीट का रहा होगा । हर कमरे में एक चबूतरा जैसा बना हुआ था जो लगभग 2 फीट बाई 6 फीट का और ऊंचाई में लगभग डेढ़ फीट था ।

चबूतरे के ऊपर एक मनुष्य देह लेटी हुई थी !

जिसे देख कर ऐसा लगता है जैसे कोई जिंदा व्यक्ति लेटा हुआ हो !

लेकिन....

वास्तव में वे सारे के सारे मृत शरीर थे ....

कापालिक सिद्धेश्वर ने बालक गजेंद्र को बताया - बेटा गजेंद्र ! यह अत्यंत गोपनीय स्थान है ! जहां पर आने का सौभाग्य और अनुमति केवल उन्हीं सिद्ध पुरुषों को होती है जिनके शरीर यहां संरक्षित करके रखे गए हैं !

यह सारे शरीर कापालिक पंथ के सिद्ध पुरुषों के है !

और तुम भी उनमें से एक हो !

इसमें से एक शरीर तुम्हारा है !

तुम्हें अपना वह शरीर ढूंढना है !!

उसी शरीर पर बैठकर शव साधना संपन्न करनी है ।

लेकिन..

एक बात याद रखना कि अगर तुम अपना शरीर पहचानने में असमर्थ रहे .....

तो उस स्थिति में तुम शव साधना करने के लिए अयोग्य माने जाओगे !

और तुम्हें वापस गुफा में बैठकर साल भर साधना संपन्न करनी पड़ेगी ।

बालक गजेंद्र सिद्धेश्वर को देखकर मुस्कुरा दिया....
जैसे कोई बहुत बचकानी बात कह दी हो !

उसकी मुस्कुराहट को देखकर सिद्धेश्वर को भी झिझक महसूस हुई !!

लेकिन जो नियम थे ....
वह तो उसे बताना ही था ।

कापालिक वीरेश्वर जैसा सिद्ध अपने शरीर को ना ढूंढ पाए यह तो संभव नहीं था लेकिन फिर भी नियम नियम ही थे ।

गजेन्द्र और कापालिक सिद्धेश्वर उस समय गलियारे के एक छोर पर खड़े हुए थे !अचानक एक धमाका हुआ और धुआं बिखर गया जब वह छटा तो उनके सामने एक टेबल रखा था । जिसके ऊपर बहुत सारी चीजें रखी हुई थी।

कापालिक ने बालक गजेन्द्र से कहा - इस टेबल के ऊपर लगभग 100 से ज्यादा वस्तुएं रखी हुई हैं ! उनमें से तुम्हें 7 वस्तुएं चुननी है जो तुम पिछले जन्म मे इस्तेमाल करते थे ! यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि संबंधित साधक वास्तव में वही है ।

इस प्रकार की प्रक्रिया का पालन बौद्ध लामाओ के पुनर्जन्म की बात को सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है । दलाई लामा बौद्ध धर्म के गढ़ माने जाने वाले तिब्बत के प्रमुख धार्मिक गुरु हैं । तिब्बत पर चीन ने आक्रमण कर कब्जा कर लिया था । जिसके बाद वहां के प्रमुख धर्म गुरु दलाई लामा और उनके पूरे साहयोगियों को हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला नामक जगह पर भारत द्वारा शरण दी गई थी और वे आज भी वहीं पर निवास करते हैं । तिब्बती लोग अपनी सरकार का प्रमुख दलाई लामा को ही मानते हैं ।

तिब्बती लोग भी पुनर्जन्म के सिद्धांत पर विश्वास रखते हैं और उनके गुरु दलाई लामा का चुनाव इसी सिद्धांत

के आधार पर किया जाता है । दलाई लामा के चयन की प्रक्रिया बेहद रोमांचक और विचित्र है । वर्तमान में दलाई लामा बौद्ध परंपरा के 14वें गुरु माने जाते हैं जिन्हें इसी प्रकार की पुनर्जन्म की प्रक्रिया के द्वारा चुना गया था ।

जब दलाई लामा की मृत्यु हो जाती है तो उसके कुछ समय के बाद लामा समूह नए दलाई लामा की खोज के लिए निकलता है ।
उसके रहने की जगह के बारे में मृत दलाई लामा के द्वारा संकेत दिए जाते हैं ....
उनके अनुसार नए दलाई लामा की खोज शुरु की जाती है ।
इसके लिए लामाओं का दल उस दिशा में जाता है !
जहां पर आगामी दलाई लामा का पुनर्जन्म हुआ होता है । उसे ढूंढने के लिए कुछ विशेष प्रकार के संकेत होते हैं । जिसके आधार पर बालक को दलाई लामा को ढूंढा जाता है ।
जब वह दलाई लामा का पुनर्जन्म बालक मिल जाता है तो उसे मठ में लाया जाता है । जहां पर दलाई

लामा की बहुत सारी वस्तुएं रखी हुई होती है उन्हें अन्य वस्तुओं के साथ रख दिया जाता है और यदि ढूंढ कर लाया गया बालक संभावित दलाई लामा होता है तो उनमें से वह पूर्व दलाई लामा के द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाली वस्तुओं को ढूंढ लेता है । इन वस्तुओं में जूता चप्पल से लेकर, डंडा, हाथ में पहने जाने वाला कड़ा, गले में डाले जाने वाली रुद्राक्ष या अन्य प्रकार की माला सब कुछ होता है ।

यदि बालक सारी चीजों में से पूर्व दलाई लामा की वस्तुओं को पहचानने में सक्षम हो जाता है तो यह माना जाता है कि वही दलाई लामा का पुनर्जन्म है । इसके बाद कुछ और परीक्षणों के द्वारा उसकी पहचान सुनिश्चित की जाती है । यह कार्य संबंधित मठ के सबसे वरिष्ठ लामाओ के द्वारा किया जाता है । जब वे इस बात को प्रमाणित कर देते हैं कि यही दलाई लामा का अगला अवतार है तो उसे पूरे तिब्बती समाज के द्वारा दलाई लामा के रूप में अर्थात अपने धर्म गुरु के रूप में स्वीकार किया जाता है ।

सन 1933 में 13वें दलाई लामा की मौत हुई थी ।
इसके बाद नए दलाई लामा की खोज शुरू हुई । खोज के वक्त ये पाया गया कि मृत लामा का शरीर दक्षिण दिशा से मुड़कर कुछ ही दिन में पूर्व दिशा की ओर आ गया । यह भी बताया जाता है कि जिस दिशा में शव आया, उस दिशा में अजीब किस्म के बादल देखे गए और वहीं बने महल के खंबे पर तारे की शेप वाली फंफूद भी उग आई । इन संकेतों के आधार पर और लामाओं को पवित्र झील में 'अ, क, म' अक्षरों की आकृतियां, हरे गोमेज और सुनहरी छत वाला एक मठ और मूंगिया रंग की एक छत वाला घर दिखाई दिया था ..उसे आधार बनाकर खोज प्रारंभ हुई ।
इसके साल भर बाद ल्हासा से गए खोजी दल ने पूर्व के आम्ददो प्रांत में एक ऐसी ही छत वाले कुंबुंभ मठ के पास मूंगिया छत वाले घर में रहने वाले एक किसान के बच्चे तेनजिन ग्यात्सो को खोज लिया था ।
तेनजिन ग्यात्सो को मठ में लाया गया और उसके बाद परीक्षण की प्रक्रिया प्रारंभ की गई थी । तेनजिन ग्यात्सो ने 13वें दलाई लामा के कई सहयोगियों को

आसानी से पहचान लिया । इसके अलावा उन्होंने मृत लामा के द्वारा इस्तेमाल की गई मालाओं, छड़ी और दूसरी चीजों को आसानी से पहचान लिया था ।

यही बच्चा तेनजिन ग्यात्सो आज के 14वें दलाई लामा हैं।

कुछ इसी प्रकार की प्रक्रिया बालक गजेंद्र के साथ संपन्न की जा रही थी ।
टेबल पर रखी हुई चीजों में से उसे अपनी वस्तुएं निकाल कर यह सिद्ध करना था कि वह कौन है ।
गजेन्द्र ने बड़ी आसानी से उनमें से अपनी वस्तुओं को , जिसमें उसका अघोरी कड़ा और रुद्राक्ष की माला थी, पहचान लिया !
जिससे वह इस परीक्षा में सफल हो गया अब उसे आगे बढ़ना था ....

दरवाजे पर खड़े हुए रक्षक देवता ने इन चीजों को पहचान लेने के बाद बालक गजेंद्र को अंदर जाने का रास्ता दे दिया ।

सारे कक्ष लगभग एक जैसे बने हुए थे और प्रत्येक कक्ष में एक-एक देह रखी हुई थी ।

जैसा कि मैंने बताया था वह सारे के सारे सिद्ध पुरुष थे ।
उनके द्वारा इस प्रकार अपने शरीर को संरक्षित करके रखने के कई कारण होते हैं ।
इनमें से एक कारण यह भी होता है कि किसी विशेष कार्य को पूर्ण करने के लिए अपनी इच्छा से या गुरु के आदेश से ऐसे सिद्ध योगी पृथ्वी पर किसी मनुष्य के रूप में परकाया प्रवेश भी कर लेते हैं ।
अपने कार्य की पूर्ति करने के बाद वापस अपनी देह में चले जाते हैं ।
इसके लिए परकाया प्रवेश की सिद्धि का प्रयोग किया जाता है ।

बालक गजेंद्र को अपनी देह को ढूँढना था ।

वह एक-एक करके उन दरवाजों के अंदर देखता हुआ आगे बढ़ता चला गया....

सत्रहवें दरवाजे के पास आकर वह रुक गया और उस कक्ष के अंदर चला गया !

बालक गजेंद्र जब उस कक्ष में घुसा तो उस शरीर को देखते ही उसे आभास हो गया कि यह उसी का शरीर है ।
बालक के कक्ष में प्रवेश करते ही वह कक्ष एक अलग ही स्वरूप में आ गया । उसकी दीवारों पर विभिन्न प्रकार की पत्थर की बनी हुई कापालिक पंथ की प्रतिमाएं दिखाई देने लगी !
ऐसा लग रहा था जैसे उन पत्थरों पर नक्काशी करके स्वर्णिम प्रतिमाओं को उकेर दिया गया है

उसने आगे बढ़ कर उस देह को प्रणाम किया और उसके चारों तरफ घूम कर गहन निरीक्षण करने के बाद विभिन्न प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करते हुए बंधन तथा अन्य क्रियाएं संपन्न की ।

वह देह पूरी तरह से सुरक्षित थी !
उसे देखकर ऐसा प्रतीत ही नहीं हो रहा था कि वह एक मृत देह है ,,,,

उसकी नाभि में हल्का सा स्पंदन अभी भी मौजूद था ..... बालक के कक्ष में प्रवेश करते ही अचानक इस देह की नाभि का स्पंदन बढ़ गया ।

बालक गजेंद्र ने आगे बढ़कर अपने दाहिने हाथ की हथेली को शव की नाभि पर रख दिया !
जैसे ही उसके हाथ का स्पर्श नाभि पर हुआ ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उस देह के अंदर से कोई शक्ति ....
उसकी नाभि से निकलकर ..
बालक गजेंद्र के हाथों से होती हुई....
उसकी देह में समा गई हो !
एक हल्के बिजली के झटके जैसा आभास बालक गजेंद्र को हुआ !
जिसके बाद उस देह की नाभि में हो रहा स्पंदन समाप्त हो गया !
वह देह पूरी तरह से शांत हो गई !
अब वह देह वास्तव में एक मृत देह में परिवर्तित हो गई थी और शव साधना के लिए उपयुक्त हो चुकी थी ।

बालक गजेंद्र को उसी शव के ऊपर बैठकर अपनी साधना का अगला चरण या यूं कह लीजिए कि इस गुफा में अपनी साधना का अंतिम चरण पूरा करना था !

रक्षा मंत्रों से बंधन करने के बाद जैसे ही वह उस शव के सीने पर चढ़कर बैठा ....
भयंकर अट्टहास की आवाजें गूंजने लगी !

अगर कोई सामान्य बच्चा होता तो उन आवाजों को सुनकर ही वहां से भाग खड़ा होता....

लेकिन यह तो साधक शिरोमणि का पुनर्जन्म था !

वह तो सहजता से उसके सीने पर बैठा रहा !

तभी !
तेज आवाजों के आने के बाद फिर अचानक उस चबूतरे में गड़गड़ाहट होने लगी !!

ऐसा लग रहा था जैसे कोई मशीन चल रही हो !

उसके बाद.....

कक्ष के दूसरी तरफ की दीवाल अपने स्थान से हट गई .....

वह चबूतरा किसी ट्रेन की बोगी की तरह सरकता हुआ आगे की तरफ जाने लगा ।

धीरे-धीरे उसकी गति तीव्र होती चली गई और अंत में धड़ाम की आवाज के साथ वह रुका !
उसकी गति इतनी ज्यादा तीव्र थी कि गजेंद्र को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था !
उसके रुकने के साथ ही सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगा !
वह एक श्मशान था !
जहां पर यह चबूतरा प्रकट हुआ था !!

लेकिन अब वह चबूतरा वहां से गायब हो चुका था .. ..
उसके स्थान पर सजी हुई चिता दिखाई देने लगी !
जिसमें हल्की हल्की आग जल रही थी !

बालक गजेन्द्र ने कापालिक सिद्धेश्वर द्वारा दिए गए मंत्रों का जाप प्रारंभ कर दिया....

मंत्र उच्चारण की तीव्रता बढ़ती चली गई और साथ ही महा श्मशान में पैशाची शक्तियों का तांडव भी प्रारंभ हो गया ।

विचित्र विचित्र प्रकार की आकृतियां निकल कर बाहर आ रही थी और धीरे-धीरे सिद्ध पुरुष के शव के चारों ओर लगभग चार फुट की दूरी पर घेरा सा बन गया । जिसमें यह सारी पैशाची शक्तियां टकटकी लगाकर विभिन्न क्रियाएं करती हुई दिखाई दे रही थी ।
उनमें से सारी आकृतियां एक से बढ़कर एक भयंकर डरावनी थीं !
लेकिन बालक गजेंद्र पर उनका कोई असर होता हुआ दिख नहीं रहा था वह बेहद सहज भाव से उनकी ओर देखता हुआ अपने मंत्र जाप में लीन था ।
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह इन सब प्रक्रियाओं को अनंत काल से देखता रहा हो और उनमें से कुछ भी उसके लिए नया नहीं हो !
उन शक्तियों का पैशाचिक नग्न नृत्य चलता रहा !
उन शक्तियों का सामर्थ्य नहीं था कि वह उसके सुरक्षा चक्र को तोड़कर अंदर प्रवेश कर सकें। .....

लेकिन उसके ध्यान भंग के लिए वह विभिन्न प्रकार की प्रक्रिया कर रही थी।

पिशाच जो लगभग 10 फुट के थे !

वे अपने हाथों में ताजा नरमुंड पकड़े हुए थे !

ऐसा प्रतीत होता था जैसे तुरंत किसी का सर काट कर ले आए हो ।

प्रेतनीयां एक दूसरे के बाल नोच रही थी !

कोई किसी की गर्दन में अपना मुंह लगाकर खून चूस रही थी !

तभी दक्षिण दिशा से हवा का एक बवंडर आता हुआ दिखाई दिया .....

वह इतना तेज था कि ऐसा प्रतीत होता था कि वह सब कुछ उड़ा ले जाएगा ।

उसके आगमन को देखकर सारी शक्तियां सहम सी गई !

ऐसा लगता था जैसे वह उन सबसे ज्यादा ताकतवर कोई शक्ति हो ।

वह शक्ति पूरी प्रचंडता के साथ आगे की ओर आ रही थी ।

गजेंद्र उसे देख कर भी अनदेखा करते हुए अपने मंत्र जाप में लीन था !

वह शक्ति अत्यंत प्रचंडता के साथ तीव्र वेग में आकर रक्षा चक्र से टकराई ।

गजेंद्र को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह वह चिता जिस पर बैठा था वह किसी बम विस्फोट का शिकार हो गई हो । पूरे लकड़ी के लट्ठे इधर उधर उछल कर बिखर गए और शव अपने स्थान से 2 फीट ऊपर उठकर हवा में लटक गया ।

जो चिता सजी हुई थी उसमें थोड़ी सी राख और कुछ अंगारों के अलावा कुछ भी बाकी नहीं बचा था सब कुछ उस शक्ति के प्रहार से बिखर गया था । लेकिन बालक गजेंद्र और शव दोनों सुरक्षित थे और वायु में लटके हुए थे ।

वह शक्ति रक्षा चक्र को नहीं तोड़ पाई और विलुप्त हो गई ।

उसके विलुप्त होते ही बाकी सारी शक्तियां जैसे हार मान कर वहां से चली गई ।

शव वापस जमीन पर आ चुका था ।

शमशान पूरी तरह से शांत हो चुका था और बालक गजेंद्र अपनी साधना में लीन था ।

अर्ध रात्रि का समय धीरे-धीरे निकट आता जा रहा था !
जिस शरीर पर वह बालक बैठा हुआ था !
उसमें हलचल होने लगी .....
ऐसा लग रहा था जैसे वह शरीर अब उठ खड़ा होगा ।
लेकिन वैसा कुछ नहीं हुआ !
थोड़ी देर के बाद वह शरीर चिता से ऊपर उठ गया !
उसके साथ बालक गजेंद्र भी हवा में जाकर लटक गया....
बड़ी ही विचित्र सी स्थिति ....
एक शव हवा में लटका हुआ और उसके ऊपर एक बालक बैठा हुआ !
बालक गजेंद्र के चेहरे पर किसी प्रकार की शिकन नहीं थी ।
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह इन क्रियाओं का आदी हो ।
काफी देर तक उसी प्रकार आसमान में लटके हुए रहने के बाद शव बालक गजेंद्र सहित जमीन पर आ गिरा ।

जैसे ही वह गिरा फिर चारों तरफ शांति छा गई .....

श्मशान में हल्के गुलाबी रंग का प्रकाश फैलने लगा । जो पुनः किसी सिद्ध के आगमन का संकेत था । कुछ ही देर में दिव्य चार पुरुष स्वरूप उस श्मशान में उपस्थित हो गए और साथ ही वहां पर आ गया कापालिक सिद्धेश्वर !

जैसा कि मैंने आपको बताया था कापालिक सिद्धेश्वर एक अत्यंत उच्च कोटि का सिद्ध पुरुष था और उसे बालक गजेंद्र के संरक्षण का दायित्व सौंपा गया था । जिसका निर्वाह वह पूरी क्षमता के साथ कर रहा था ।

शव साधना बालक गजेंद्र की साधना का अंतिम चरण था जिसे वह पूरा करने की ओर अग्रसर हो रहा था ।

चिता के ऊपर पडा था कापालिक वीरेश्वर का शव !

जिसके ऊपर विराजमान था बालक गजेंद्र !

सिद्ध पुरुषों ने बालक गजेंद्र को देख कर कुछ संकेत किया और बालक गजेंद्र का शरीर अचानक हवा में उड़ गया और अनंत आकाश मे कहीं विलीन हो गया ।

सिद्धेश्वर ने चिता को पुनः सजा दिया ।
लकड़िया जमाने के बाद कापालिक सिद्धेश्वर ने सिद्ध पुरुषों की ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखा !

उन्होंने उसे रुकने का संकेत किया !
पुनः उनका मंत्र उच्चारण तथा गोपनीय क्रियाएं प्रारंभ हुईं । जिसके बाद बालक गजेंद्र का शरीर पद्मासन की मुद्रा में हवा में लगभग 6 फुट की ऊंचाई पर दिखने लगा !

उन्होंने पुनः विभिन्न प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया ।
उसके बाद उसे उन्होंने नीचे उतार दिया ।

गजेन्द्र से कई प्रकार के अंतिम संस्कार के विशेष प्रयोग को संपन्न करवाने के बाद चिता में आग लगा दी गई

। उस देह की आवश्यकता संभवतः नहीं रह गई थी , इसलिए उसको पंच तत्व में विलीन कर दिया गया ।

सनातन धर्म में यह एक विशेष बात है कि हम मानव शरीर को पंच तत्वों से निर्मित मानते हैं और उसे वापस पंच तत्वों में समाहित कर देने के लिए उसका अंतिम संस्कार या शव को जलाने का संस्कार संपन्न किया जाता है ।

अंतिम संस्कार दफनाकर या जल में प्रवाहित कर भी किया जा सकता है लेकिन अधिकांश शव को जलाया जाता है । जलाने की प्रक्रिया में अधिकतर 8 घंटे का समय लगता है और इस समयावधि में शरीर के अंदर के सारे तत्व वापस अपने मूल रूप में चले जाते हैं । शरीर के अंदर जो जल तत्व होता है वह आग की गर्मी से भाप बनकर उड़ जाता है । जो अग्नि तत्व होता है जलती हुई आग में समाहित हो जाता है ! वायु तत्व वायुमंडल में विलीन हो जाता है । भूमि तत्व से बना हुआ शरीर का आकार जब समाप्त हो जाता है तो उसके अंदर खाली स्थान आकाश होता है वह आकाश में लीन हो जाता है । बचा हुआ भूमि तत्व जलकर भस्म के रूप

में परिवर्तित हो जाता है जिसे जल में प्रवाहित कर दिया जाता है और वह भी भूमि तत्व मे विलीन हो जाता है ।
आप देखें तो यह सबसे बढ़िया अंतिम संस्कार है
क्योंकि एक शव को जला देने के बाद उसी स्थान पर आप एक के बाद एक कई शव जला सकते हैं । ईसाई धर्म और मुस्लिम धर्म में और जिन सम्प्रदायों में शवों को दफनाया जाता है वहां एक समय के बाद कब्रिस्तान में जगह की कमी हो जाती है ।

कापालिक वीरेश्वर की चिता जलने लगी !
उसके सामने में बालक गजेंद्र को उन सिद्ध पुरुषों ने पद्मासन की मुद्रा में बैठा दिया और कुछ प्रक्रियाएं संपन्न करने लगे !
जैसे ही कुछ विशेष मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ किया !
हवा तेजी से चलने लगी !
जिससे पेड़ तेजी से इधर-उधर झूलने लगे ।
कुछ समय के बाद तूफान की तेजी बढ़ने लगी !
पिछले विवरण से आप जानते होंगे कि यह भैरव के आगमन का संकेत होता है ।

दक्षिण दिशा में लगे हुए पेड़ अचानक टूट कर जमीन पर आ गिरे उनके टूटने से महा भयंकर आवाज आई !
ऐसा लगा जैसे कोई बड़ा बम फट गया हो ।
कुछ समय और बीता .....
जलती हुई चिता के धुएं के बीच में एक आकृति स्पष्ट होने लगी !

वह आकृति विशालकाय थी ....
लगभग 12 या 15 फुट ऊंची !
धीरे धीरे महा भैरव का स्वरूप स्पष्ट होने लगा !
सारे दिव्य सिद्धों ने उस महाकाल स्वरूप को प्रणाम किया ।
तब तक बालक गजेंद्र भी चैतन्य हो चुका था !
उसने भी दंडवत प्रणाम किया !!

दिव्याकृति ने अभय मुद्रा में अपना हाथ उठाया और काले रंग का एक छोटा सा गोल आकार उस आकृति से निकलकर गजेंद्र की ओर बढ़ गया और उसने गजेंद्र को अपने घेरे में ले लिया । गजेंद्र का संपूर्ण शरीर उस काले घेरे में लिपटा हुआ था । थोड़े ही समय के बाद वह वहां से लुप्त हो गया ।

महाकाल भैरव ने अपना आशीर्वाद दे दिया था और बालक गजेंद्र वापस वहीं पहुंच चुका था जहां पर वह चबूतरा था !

वह उसी के ऊपर ध्यान मुद्रा में बैठा हुआ था ।

सुबह के लगभग 9 बजे उसकी आंखें खुलीं ।
कापालिक सिद्धेश्वर ने उसे गले लगा लिया । अब बालक गजेंद्र पूर्ण सिद्ध कापालिक हो चुका था ।
कापालिक सिद्धेश्वर ने अपना कर्तव्य पूरी तरह से निर्वाह कर लिया था ।
जिसकी खुशी उसके चेहरे पर दिख रही थी ।

बालक गजेंद्र को लेकर वह वापस उसी गुफा मे पहुंचा जहां पर सिद्ध महा काल भैरव की प्रतिमा स्थापित थी ।
थोड़ी देर में वहां गुरुदेव भैरवेश्वर प्रकट हुए और उन्होंने दोनों को आशीर्वाद दिया ।

बालक गजेंद्र के सहस्त्रार चक्र पर हाथ रखकर उन्होंने कुछ विशेष क्रियाएं संपन्न की और कहा - बेटा गजेंद्र ! तुम अपने पूर्व जन्म को अब पूरी तरह से आत्मसात कर चुके हो ! तुम्हारा जन्म एक विशेष प्रयोजन से हुआ

है ! कापालिक संप्रदाय साधना गुप्त है । आज से योगियों को और कापालिकों को आवश्यकता पड़ने पर मार्गदर्शन प्रदान करने का तुम्हारा उत्तरदायित्व प्रारंभ होता है ।

आज से मैं तुम्हें एक नया नाम प्रदान करता हूं !
आज से तुम्हे **कापालिक चंडेश्वर** के नाम से जाना जाएगा ।

इसके बाद उन्होंने कापालिक सिद्धेश्वर से कहा - पुत्र सिद्धेश्वर ! तुम्हारा कार्य पूर्ण हो चुका है । बालक अपने सभी परीक्षणों को सफलतापूर्वक पूर्ण कर चुका है और आदि गुरु अघोरेश्वर और महाकाल भैरव का आशीर्वाद भी उसे मिल चुका है । अब आगे का मार्ग वह स्वयं ढूंढ लेगा । उसे वापस लौटाने का समय आ गया है ! कल दोपहर को तुम बालक को उसके घर छोड़ सकते हो !

इतना कह कर वे वहां से अंतर्ध्यान हो गए !

दोपहर का समय आया ।
ग्यारह वर्षीय बालक गजेंद्र कापालिक मार्ग का राही था इसलिए दिगंबर ही रहता था ।

अब उसे राजमहल में वापस जाना था । इसलिए आचार्य सिद्धेश्वर ने उसे धोती पहनाकर तैयार किया और जाने के लिए तैयार हो गया .....

उधर गजेंद्र का कापालिक पंथ में शिक्षण चल रहा था ।

इधर राज्य मे कुछ और घटनाएं भी घट रही थी !
गजेंद्र के जाने के कुछ वर्षों तक सब कुछ ठीक रहा ।
तेरह वर्ष की अवस्था में बालक देवेंद्र को युवराज घोषित कर दिया गया । क्योंकि वह बड़ा पुत्र था ।

फिर एक दिन राजमाता गंभीर रूप से बीमार पड़ी .....
राजवैद्य ने अपनी तरफ से पूरा प्रयास कर लिया लेकिन उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ....
धीरे धीरे उनकी हालत बिगड़ती चली गई और अंततः एक दिन वह मृत्यु को प्राप्त हो गई ।

राज्य में शोक मनाया गया अब राजा वीरेंद्र के पास मार्गदर्शन के लिए उनकी माता नहीं थी ।
लेकिन अनुभव के आधार पर वह इतने सक्षम हो चुके थे कि राज्य चला सकते थे !

राजमाता की कमी को पूरा करने के लिए मंजरी ने राजकार्य में राजा वीरेंद्र को सहयोग करना प्रारंभ कर दिया ।

मंजरी अद्भुत सौन्दर्य के साथ-साथ अद्भुत बुद्धि चातुर्य की भी स्वामिनी थी । उसने धीरे-धीरे राज्य के कार्य को अच्छी तरह से समझ लिया और उसमे माहिर होती चली गई ।

राज्य का कार्य सुचारू रूप से चल रहा था और मालिनी ने सैनिकों को भी विशेष प्रशिक्षण के द्वारा और घातक तथा समर्थ बना दिया था ..

मालिनी का पुत्र नीलकंठ अब लगभग 15 वर्ष का हो चुका था । रानी मंजरी का पहला पुत्र युवराज देवेंद्र 13 वर्ष का था और दूसरा बच्चा यानी राजेंद्र और मालिनी के जुड़वां बच्चे पूर्णानंद और वैभवी 11 वर्ष के हो चुके थे ।

इसमें से राजेंद्र मालिनी का पुत्र था जिसका जुड़वा भाई था गजेंद्र ।

अगर ऐसा नहीं होता तो रेलवे की बोगियों में बाबा बंगालियों के विज्ञापन नहीं चिपकते । यही नहीं अगर आप अखबार उठाकर देखें तो 24 घंटे में समाधान और वशीकरण करने वाले तमाम लोग मौजूद हैं .....
जिनका केवल मोबाइल नंबर दिया होता है !
वह किसी होटल में आकर ठहरते हैं !!
लोगों को टोपी पहनाते हैं !!!
और निकल चलते हैं ।

यह बात सुनने में अजीब लग सकती है लेकिन चाकू से किसी के ऊपर वार कर देना उसे चोट पहुंचाना आसान होता है !
लेकिन उससे किसी की सर्जरी करके उसके प्राण बचाना मुश्किल होता है ।

कहा जाता है कि :-
"ढूंढने से भगवान भी मिल जाता है"

लेकिन इसमें एक बात और है :-
"अगर आप ढूंढने निकलो तो शैतान भगवान से भी आसानी से मिल जाता है ।"

अगर आप अपने आसपास नजर डालेंगे तो एक से एक शैतान आपको नजर आएंगे !

ऐसे लोग जो दूसरों का पैसा दबाकर बैठे हैं .....

ऐसे लोग जो दूसरों की संपत्ति पर कब्जा किए बैठे हैं.....

ऐसे लोग जो दूसरों को किसी भी प्रकार से बेवकूफ बनाकर अपना काम निकालने के लिए तैयार बैठे हैं.....

अगर आप डॉक्टरी पेशे में देखें तो कई अस्पतालों से ऐसी खबर आती है कि मृतक व्यक्ति की देह को आईसीयू में एडमिट करा कर दो से चार दिन रखा गया.....

अब आप खुद सोच सकते है कि जो डॉक्टर भगवान का स्वरूप होता है उसका यह कृत्य किस श्रेणी में आएगा । खैर .....
कुछ चीजें विचलित कर देती है .....

और यह जानते हुए भी कि.....
आप में से अधिकांश लोग इस प्रकार की बातें नहीं पढ़ना चाहते लिख जाता हूँ ....।
और यह उम्मीद करता हूं कि कम से कम 1% लोगों की आंखों में सच्चाई जरूर दिखाई देगी .....
हम आगे बढ़ते हैं .....

मंदार देव का पूरा राज्य महेंद्रगढ़ के अधीन हो चुका था । मंदार देव का पूरा राज परिवार राजमहल छोड़कर खानाबदोश की जिंदगी जीने के लिए विवश हो गया था । अब पूरे राज परिवार में राज रानी पद्मावती और मंदार देव का पोता अनंत देव ही शेष बचे थे ।
बाकी सभी बड़े योद्धा मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे ।

उसका पोता अनंत देव बहुत ही कुटिल बुद्धि का स्वामी था .....
उसने महेंद्रगढ़ को किसी भी प्रकार से समाप्त करने की कसम खाई हुई थी ।

इस कार्य में सहयोग करने के लिए वह एक लंबे गेमप्लान के साथ चल रहा था ।

वह तांत्रिकों व अघोरियों को अपनी सेवाएं देता रहता था !

उसके पास धन की कमी नहीं थी .....

वह राजकोष का एक बड़ा हिस्सा लेकर राजमहल से निकले थे ।

जैसा कि आप जानते हैं साधू सन्यासियों के पास धन नहीं होता ।

उनको कोई भौतिक वस्तु खरीदनी होती है, उदाहरण के लिए कपड़ा ही खरीदना होता है तो उन्हें पैसे की जरूरत पड़ती है ।

ऐसी स्थिति में उन्हें किसी न किसी के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है या हाथ फैलाना पड़ता है ।

अनंत देव उनकी इस प्रकार की जरूरतें पूरी करता था !

धीरे-धीरे उनके साथ उसके संबंध बहुत मधुर हो गए !

उसमें से एक सिद्ध कापालिक था मुंडेश्वर ।

मुंडेश्वर महाकाली का अनन्य भक्त था..... और कई प्रकार की सिद्धियों का स्वामी था ।

उसने अनंत देव को कई बार चिमटे और लातों से मारा लेकिन अनंत देव किसी दूसरी मिट्टी का ही बना हुआ था और वह लगातार आता ही रहा.....

जितने सिद्ध पुरुष होते हैं, उनका हृदय बहुत कोमल होता है। बाहर से वे अवश्य अत्यंत कठोर दिखने की कोशिश करते हैं लेकिन उनके ऊपर यह श्लोक पूरा सही साबित होता है :-

नारिकेल समाकारा पश्यन्ती सज्जना :।
अन्याः बदरिकाकारा बहिरेव मनोहरः ।।

इस श्लोक का अर्थ होता है कि जो सज्जन पुरुष होते हैं वह नारियल के समान कठोर दिखाई देते हैं ! उन का बाहरी हिस्सा या स्वरूप नारियल के समान बेहद कठोर दिखाई देता है लेकिन उसके अंदर सुस्वादु फल और शीतल जल मिलता है .....

दूसरी ओर दुष्ट प्रवृत्ति के लोग बेर के समान होते हैं । बेर का फल बेहद सुंदर दिखाई देता है लेकिन जब आप उसे काटते हैं तब आपको पता चलता है कि उसके अंदर कीड़े भी हैं।

अर्थात उसका सौंदर्य बाहरी है और अंदर से वह बेकार है ठीक है ऐसे ही दुष्ट प्रवृत्ति के लोग होते हैं ।

अनंत देव के द्वारा लगातार किए जा रहे सहायता से मुंडेश्वर कापालिक भी कृतज्ञ हो चुका था ।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि अगर आप किसी वास्तविक साधु या संत की सेवा करते हैं या उसके लिए कोई कार्य करते हैं तो वह आपकी सेवा या कार्य के बदले में कुछ ना कुछ प्रदान करता ही है .....
क्योंकि ऐसा न करने की स्थिति में वह आपका ऋणी हो जाता है .....
और कोई भी सिद्ध व्यक्ति किसी का ऋण अपने ऊपर नहीं रखता .....

जब काफी समय बीत गया तो एक दिन उसने अनंत देव से पूछा - तुम पिछले 2 साल से मेरी सेवा कर रहे हो और मेरे और मेरे साथियों के ऊपर धन खर्च कर रहे हो । कोई भी मनुष्य किसी की भी सहायता बेवजह नहीं करता । तुमने मेरे सारे परीक्षणों को सहन करते हुए

इतने दिनों तक सहायता करने के बाद भी कोई चीज मुझसे नहीं मांगी है .....
इसलिए मैं तुमसे जानना चाहता हूं कि तुम क्या चाहते हो ।

अनंत देव इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था - उसने महेंद्रगढ़ के विषय में सारी कथा कह सुनाई ।

पूरी बात सुनने के बाद मुंडेश्वर ने पूछा - तुम मुझसे इस विषय में क्या सहायता चाहते हो ?

अनंत देव ने कहा महाराज मैं अपना राज्य वापस लेना चाहता हूं ।
कापालिक मुंडेश्वर ने ध्यान लगाया और गणना की और उसके बाद बताया - बेटा ! आने वाले 30 वर्षों तक यह संभव नहीं है क्योंकि उस राज्य की रक्षा में अनेक तांत्रिक शक्तियां लगी हुई है ।
सबसे पहले उन्हें खत्म करना पड़ेगा तभी कुछ हो सकता है.....
और इसमें काफी समय भी लगेगा और धन भी ....

इतने दिनों तक सहायता करने के बाद भी कोई चीज मुझसे नहीं मांगी है .....
इसलिए मैं तुमसे जानना चाहता हूं कि तुम क्या चाहते हो ।

अनंत देव इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था - उसने महेंद्रगढ़ के विषय में सारी कथा कह सुनाई ।

पूरी बात सुनने के बाद मुंडेश्वर ने पूछा - तुम मुझसे इस विषय में क्या सहायता चाहते हो ?

अनंत देव ने कहा महाराज मैं अपना राज्य वापस लेना चाहता हूं ।
कापालिक मुंडेश्वर ने ध्यान लगाया और गणना की और उसके बाद बताया - बेटा ! आने वाले 30 वर्षों तक यह संभव नहीं है क्योंकि उस राज्य की रक्षा में अनेक तांत्रिक शक्तियां लगी हुई है ।
सबसे पहले उन्हें खत्म करना पड़ेगा तभी कुछ हो सकता है.....
और इसमें काफी समय भी लगेगा और धन भी ....

मुंडेश्वर की यह बात सुनकर अनंत देव दुखी हो गया .....

वह मुंडेश्वर के सामने अनुमति लेकर चला आया - एक दो दिन का समय दें। ताकि मैं इस विषय पर अपनी माता से भी चर्चा करके आपको बता सकूं !

मुंडेश्वर ने सहमति में सिर हिलाया।

कापालिक मुंडेश्वर दरअसल उसकी बात समझ गया था !

उसकी हरकतों से भी जान गया था कि यह किसी का नुकसान करने के लिए ही आया है !

इसलिए वह यथासंभव उसे उस चीज से दूर रखने की कोशिश कर रहा था !

वरना कापालिक मुंडेश्वर के लिए किसी को मार देना मुश्किल से एक घंटे का काम था।

अनंत देव अपनी माता के पास पहुंचा और उसने सारी बात कह सुनाई ! यह सुनकर उसकी माता पद्मावती को भी दुख हुआ लेकिन उनके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था !

इसलिए दोनों ने काफी समय तक चिंतन किया और अंत में यह तय किया की वह कापालिक मुंडेश्वर की बात स्वीकार कर लेंगे ।

अनंत देव की माता पद्मावती भी एक अत्यंत ही विद्वान और कुटिल बुद्धि की महिला थी ।
उसे विषकन्या बनाने की विधि आती थी । विषकन्या का तात्पर्य होता है एक ऐसी कन्या जो दिखने में तो सामान्य कन्या के जैसी दिखती है.....
लेकिन उसके देह का स्पर्श करने वाला.....
उसको चुंबन करने वाला.....
आलिंगन करने वाला या.....
सहवास करने वाला निश्चित मृत्यु को प्राप्त हो जाता है !

पीड़ित की मृत्यु भी बेहद सहज होती है और मरने वाले को धीरे धीरे यह विष अंदर ही अंदर मारता जाता है और कुछ समय के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है ।

<u>अगर आप विकिपीडिया में विषकन्या के विषय में खोजेंगे तो उसमें लिखा है कि :-</u>

लोक कथाओं एवं वैदिक ग्रंथों के अनुसार प्राचीन युग में विषकन्या का प्रयोग राजा अपने शत्रु का छलपूर्वक अन्त करने के लिए किया करते थे।

इसकी प्रक्रिया में किसी रूपवती बालिका को बचपन से ही विष की अल्प मात्रा देकर पाला जाता था और विषैले वृक्ष तथा विषैले प्राणियों के सम्पर्क से उसको अभ्यस्त किया जाता था।

इसके अतिरिक्त उसको संगीत और नृत्य की भी शिक्षा दी जाती थी, एवं सब प्रकार की छल विधियाँ सिखाई जाती थीं।

अवसर आने पर इस विषकन्या को युक्ति और छल के साथ शत्रु के पास भेज दिया जाता था।

इसका श्वास तो विषमय होता ही था, परन्तु यह मुख में भी विष रखती थी, जिससे संभोग करनेवाला पुरुष रोगी होकर मर जाता था।

चाणक्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र (ग्रन्थ) में तथा कल्कि पुराण में विषकन्याओं की चर्चा है।

युद्ध में हार हो जाने के बाद महारानी पद्मावती ने अपनी कुटिल बुद्धि का प्रयोग करते हुए ऐसी ही एक विषकन्या को, जो लगभग 25 वर्ष की थी, राजमाता कामायनी के सेवा में लगा दिया था ।

विषकन्या को कई प्रकार की कलाओं में निपुण बनाया जाता है ...
और इसकी विधिवत शिक्षा बचपन से ही दी जाती है ।

इस प्रकार की कन्या को बाल्यकाल से ही इतनी अल्प मात्रा में विष दिया जाता है कि धीरे-धीरे उसका संपूर्ण शरीर विष के प्रति इम्यून हो जाता है ।

इसे आप वर्तमान काल के वैक्सीन के उदाहरण से समझ सकते हैं । वैक्सीन में संबंधित बीमारी के विषाणु जो कि या तो मरी हुई अवस्था में रहते हैं या अत्यंत दुर्बल अवस्था में रहते हैं.....वह पाए जाते हैं ।

जब उनको हमारे शरीर में डाला जाता है तो हमारा शरीर उस प्रकार के विषाणु का प्रतिरोध करने की क्षमता विकसित करने लगता है ।

वह विषाणु स्वयं में बेहद दुर्बल होता है इसलिए हमारा प्रतिरोधक सिस्टम उसके खिलाफ बेहद जल्दी प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेता है ।

अभी आपने कोरोनावायरस के विषय में भी इस बात को सुना होगा दरअसल हमारे शरीर में जो टी सेल होते हैं वही किसी बाहरी वायरस को खत्म करने का प्रमुख काम करते हैं । जिन रोगियों में इनकी संख्या कम हो जाती है उनके गंभीर होने के चांसेस बढ़ जाते हैं ।

हमारा मस्तिष्क दुनिया का सबसे कंप्लीकेटेड सुपर कंप्यूटर है । इसके अंदर इतनी सारी जानकारियां छुपी हुई होती है.....
जिसको आप सोच भी नहीं सकते.....

बीमारियों का एक डेटाबेस भी हमारे शरीर में होता है जिसके माध्यम से शरीर के प्रतिरोधक क्षमता एंटीवायरस के जैसे काम करते हैं और उसे नष्ट कर देते हैं ।

वेक्सीन जैसे ही शरीर में घुसता है तो आपका प्रतिरोधक सिस्टम काम करने लगता है और इस वायरस के संबंध में इस डेटाबेस में उसकी एंट्री या सिग्नेचर (डिजाइन) को डाल देता है ।
इस डाटाबेस में उन सारी बीमारियों के कीटाणुओं का रिकॉर्ड दर्ज होता है जिससे आपका शरीर लड़ चुका होता है ।

जब यह रिकॉर्ड आपके डेटाबेस में जुड़ जाता है तो अगली बार जब यह संक्रामक वायरस आपके शरीर पर आक्रमण करता है तो इसी डेटाबेस के आधार पर आपका मस्तिष्क और आपकी रक्त की कोशिकाएं उसे डिटेक्ट भी कर लेती हैं और मार भी देती है जिससे आप संक्रमण से बच जाते हैं ।

कुछ-कुछ वैसा ही विषकन्या वाले प्रकरण में भी होता है । उसे बचपन से ही इतने प्रकार के विष का अल्प मात्रा में सेवन कराया जाता है कि उसका शरीर धीरे-धीरे उन विषों को समाप्त करने लायक विष अपने अंदर ही तैयार कर लेता है.....

जिससे बाहरी विष का उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन उसके अंदर स्थित विष किसी भी व्यक्ति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होता है ।

उस विषकन्या का नाम था.....पद्मिनी !!!

पद्मिनी एक अत्यंत ही रूपवती युवती थी.....
जिसने धीरे-धीरे राजमहल के अंदर विश्वास जीतते जीतते राजमाता के विशेष दासियों में अपना स्थान बना लिया था ।
उसने जब यह देखा कि राजमाता के द्वारा लगातार राजकार्य में बहुत सहयोग किया जाता है.....
उनके होने से राजा वीरेंद्र को बहुत सी सहायता मिलती है तो उसने धीरे-धीरे राजमाता को अपनी विष शक्ति का प्रयोग करके विषाक्त करना प्रारंभ कर दिया.....

इस प्रकार के प्रयासों में भोजन में अपने लार का अंश मिला देना और संबंधित व्यक्ति के आसपास इतनी दूरी पर बैठना कि उसकी सांस विषकन्या के सांस से बहुत ज्यादा दूरी पर ना हो यह सब शामिल है ।

लगभग 6 महीने के प्रयासों के बाद राजमाता बेहद गंभीर रूप से बीमार पड़ने लगी ।
राजवैद्य के निरीक्षण के बाद पाया गया कि उनके शरीर में विष की मात्रा बढ़ गई है । इसके लिए उन्हें रक्त शोधन कराना पड़ेगा ।

रक्त शोधन के लिए एलोपैथी एक विधि का उपयोग करता है । जिसे डायलिसिस कहते हैं लेकिन आयुर्वेद में रक्त शोधन की अनेक विधियां मौजूद है । इसमें समय अवश्य लगता है लेकिन विशेषज्ञ के निर्देशन में करने से लाभ भी होता है ।
उस समय तो एलोपैथी की दवाइयां उपलब्ध नहीं थी इसलिए आयुर्वेद एकमात्र विकल्प था .....

राजवैद्य ने उन्हें प्राकृतिक वातावरण में रखने की सलाह दी जिसके बाद राजवैद्य के आश्रम में राजमाता को पहुंचा दिया गया .....
स्वाभाविक रूप से सेवा के लिए पद्मिनी भी साथ ही गई ।

राजवैद्य लगभग 60 वर्ष के वयोवृद्ध पुरुष थे। जिनका अधिकांश समय जंगलों में जड़ी बूटियों की खोज करते हुए बीतता था .....
उन्होंने राजमाता को एक विशेष कक्ष में रख दिया.....

जहां चारों तरफ खिड़किया थी !

उन्होंने किसी भी व्यक्ति का अंदर प्रवेश निषेध कर दिया था !

केवल स्नान आदि कर्मों को करते समय पद्मिनी उनके साथ हुआ करती थी ।
पद्मिनी को रानी को विष संतप्त करने का अवसर कम मिलता था .....

इसलिए धीरे-धीरे राजमाता की हालत सुधरने लगी.....

पद्मिनी किसी प्रकार की हड़बड़ी नहीं करना चाहती थी .....

क्योंकि वहां पर वह अकेली थी और कोई भी गलत घटना होने पर वही उसकी जिम्मेदार मानी जाती.....

इसलिए उसने विष प्रयोग बंद कर दिया था !

यथासंभव प्रयास रहता कि वह राजवैद्य के सामने अपना घुंघट ना खोलें .....

क्योंकि उसे शंका थी कि राजवैद्य भी विषकन्या के विषय में जानते हैं और उसे देखने पर उसे पहचान सकते हैं .....

लगभग 3 महीने तक चले इलाज के बाद राजमाता की स्थिति बेहतर हो गई।
इस दौरान पद्मिनी के सेवा भाव से वह अत्यंत प्रभावित हो गई और उसे अपने विशेष सेवकों में शामिल कर उसे अपना सबसे करीबी सेवक मानने लगी ।

इस संबंध में यह भी आपको बताना उचित होगा कि जब हम किसी के सामने निर्वस्त्र होते हैं तो हमारी आत्मीयता उसके साथ बढ़ जाती है ...

क्योंकि वह व्यक्ति हमें अपने प्राकृतिक रूप में देख रहा होता है ।

मेरा विश्लेषण आपको गलत लग सकता है लेकिन जिस भी माता ने अपने बच्चे को बचपन से नहलाया बुलाया हो या उसके अभाव में या उसकी धाई मा ने उसे पाला हो  तो उसके साथ उसकी आत्मीयता बढ़ जाती है.....

हमारे परिजनों के साथ हमारी आत्मीयता भी इस कारण से बढ़ जाती है, लेकिन जब पत्नी आती है तो उस समय तक परिजनों के सामने निर्वस्त्र होने की अवस्था समाप्त हो चुकी होती है और वह स्थान पत्नी लेती है या प्रेमिका ले लेती है उसके बाद सारा त्रिया चरित्र प्रारंभ होता है और एक से एक कहानियां जन्म लेती है .....
इसके विषय में बताना आवश्यक नहीं है क्योंकि आप खुद ही इसके बारे में मुझसे बेहतर जानते हैं ।

स्वस्थ होने के बाद राजमाता राजमहल लौट आई ।
तब तक बालक देवेंद्र भी लगभग 15 साल का हो चुका था ।

यह वह अवस्था होती है जिसमें शरीर के अंदर कई प्रकार के परिवर्तन होते हैं और विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण भी बढ़ जाता है ।
अगर वर्तमान काल के हिसाब से देखें तो वह अवस्था जो हाई स्कूल स्टार्ट करते समय होती है, यानी की नवमी दसवीं की अवस्था !
इस उम्र में बालक और बालिकाओं दोनों में इस प्रकार का आकर्षण बढ़ जाता है !

वे और भी कई प्रकार की चीजों को देखने समझने और प्रयोग करने की मानसिकता रखते हैं ।

बालक देवेंद्र भी उसी अवस्था गुजर रहा था जिसका फायदा पद्मिनी उठाने वाली थी ।

राजमाता के वापस आ जाने के बाद राजकुमार देवेंद्र उनके पास पहुंचा !

उस समय पद्मिनी भी वहां पर मौजूद थी !
राजमाता ने राजकुमार से थोड़ी चर्चा की और फिर थकान की वजह से सो गई !

बालक देवेंद्र वहीं बैठा रहा जिसके बाद पद्मिनी ने अपना त्रिया चरित्र दिखाना प्रारंभ किया !
उसने अपना आंचल ढलका दिया .....
बालक देवेंद्र की आंखें वहीं पर अटकी रह गई ।

उसने वापस उसे अपने कंधे पर डाल दिया जैसे गलती से हो गया हो लेकिन ब्रह्मास्त्र चल चुका था देवेंद्र काम बाण से पीड़ित हो चुका था ।
राजकुमार देवेंद्र के राजमाता के कक्ष में आने की फ्रीक्वेंसी बढ़ गई !
अब दिन में कम से कम 2 बार वह राजमाता के कक्ष में जाता !
दोनों बार पद्मिनी उस पर अपने मायाजाल को चलाने की कोशिश अवश्य करती ।

धीरे-धीरे बालक उसके माया जाल में फंसने लगा .....

एक दिन राजमाता ने इस प्रकरण को देख लिया !

उसने पद्मिनी को कड़ी फटकार लगाई और राजकुमार देवेंद्र को भी वहां से भाग जाने के लिए कहा !

दोनों उस समय शांत गए ।

कुमार देवेंद्र वहां से चला गया .....

लेकिन आग लग चुकी थी .....

और घर जलना बाकी था .....

पद्मिनी के पास अपने पाले हुए विशेष कबूतर थे। जो उसके संदेशों को रानी पद्मावती के पास पर पहुंचाया करते थे । उसने राजमाता की बीमारी का सारा हाल चाल उसे बता दिया था । राजकुमार देवेन्द्र वाले प्रकरण के विषय में भी उसने लिखा । जिसे पढ़कर पद्मावती अत्यंत प्रसन्न हुई क्योंकि आने वाले समय का राजा तो युवराज देवेंद्र ही था !

बाकी बच्चे अभी छोटे थे..

जिन के विषय में उसने सुना था कि एक किसी कापालिक के पास जा चुका है और दूसरा बच्चा अभी गुरुकुल में है ! ऐसी स्थिति में एक राजकुमार की हत्या हो जाने के बाद आगे अन्य लोगों को प्रभावित करना थोड़ा और आसान हो जाता !

उसने पद्मावती को आगे बढ़ने का संकेत किया और साथ ही राजा वीरेंद्र पर भी प्रयास जारी रखने का निर्देश दिया !

अभी तक पद्मिनी ने राजा वीरेंद्र पर कोई प्रयास नहीं किया था क्योंकि राजा वीरेंद्र बेहद प्रबल चरित्र के आदमी थे उनके लिए रानी मंजरी ही उनका जीवन थी । अगर दांव उल्टा पड जाता तो उसकी जान भी जा सकती थी.....

कहा गया है कि:-

स्त्रियस्य चरित्रम, पुरुषस्य भाग्यम ।
देवो न जानाति, कुतो मनुष्यम ।।

अर्थात स्त्री प्रकृति की इतनी रहस्यमय कृति है कि उसका चरित्र कोई भी नहीं जान सकता । उदाहरण के लिए हम वर्तमान में चल रहे रिया सुशांत राजपूत प्रकरण को ही देखें । उनके परिवार वालों को किसी भी एंगल से इस युवती के सानिद्य से अपने पुत्र की हत्या की आशंका रहती तो शायद वे उन्हें उसके साथ रहने ही

नहीं देते ; लेकिन उसके आचार व्यवहार से उनको ऐसा कोई आभास नहीं हुआ ....
यह हुआ स्त्रियस्य चरित्रम,

यहां मेरा उद्देश्य सभी स्त्रियों के प्रति कोई दुर्भावना व्यक्त करना नहीं है , लेकिन कई ऐसे उदाहरण हम देख सकते हैं जिसमें एक स्त्री ने संपूर्ण परिवार और कुल को नष्ट कर दिया । इसका सबसे पुराना उदाहरण राजरानी द्रोपदी के प्रकरण में भी हम देख सकते हैं । उनके द्वारा किए गए एक कटाक्ष और एक संकल्प ने कौरव वंश का संपूर्ण अस्तित्व मिट्टी में मिला दिया ।

सेना तथा अन्य बड़े अधिकारियों के हनीट्रैप में फंसने की कहानियां भी आप लोगों ने अवश्य पढ़ी होंगी !

यह सब एक स्त्री के अंदर छिपी हुई क्षमताओं का उदाहरण है कि एक स्त्री अगर ठान कर निकल जाए तो क्या कुछ नहीं कर सकती है ।

पुरुष मूल रूप से चारित्रिक रूप से बहुत कमजोर होता है ।

यह नियम लगभग सभी आयु वर्ग के लोगों पर लागू होता है ।
अगर उसे एकांत और अवसर मिले तो वह आमतौर पर उसका लाभ उठा ही लेता है और कोई भी स्त्री उसके पुरुषत्व को हर लेती है ।
आप इसे मैन्युफैक्चरिंग डिफेक्ट भी कह सकते हैं ।

पुरुषों में इस प्रकार के गुण बहुत कम पाए जाते हैं कि वे उच्च पदस्थ लोगों को अपने माया जाल में फंसा सकें । संभवत ऐसा उनके प्राकृतिक रचना के कारण होता होगा जो भी हो वास्तविकता यही है ....

आमतौर पर मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में बाहरी कलाकारों को बहुत ज्यादा चांस नहीं मिलता है , लेकिन उसके बीच में सुशांत ने अनेक फिल्में हासिल की और उसका कैरियर का ग्राफ बेहद तेजी से आगे बढ़ता गया .....
यह है पुरुषस्य भाग्यम

अर्थात अगर पुरुष परिश्रम शील हो और उसका भाग्य साथ दे तो वह किसी भी ऊंचाई को प्राप्त कर सकता है ।

ऐसे अनेक उदाहरण आप देख सकते हैं .....

पेट्रोल पंप में काम करने वाले स्वर्गीय धीरूभाई अंबानी जी का परिवार आज भारत का सबसे रईस खानदान है और यह महज 50-60 वर्षों का सफर है .....

तो !
राजमाता द्वारा पकड़ लिए जाने के बाद पद्मिनी ने अपनी तरफ से सावधानी बरतते हुए पूरी शराफत दिखानी प्रारंभ कर दी । लेकिन गाहे-बगाहे जब देवेंद्र कहीं रास्ते में मिल जाता तो वह अपना मादक कटाक्ष अवश्य डाल देती । धीरे-धीरे देवेंद्र उसके जाल में फंसा जा रहा था ।

राजमाता को सारी बात पता चल चुकी थी ! देवेंद्र के ऊपर आघात करना उनकी उपस्थिति में उचित नहीं होता । इसलिए पद्मिनी ने अपने विष संचार को तीव्र कर दिया जिसके बाद राजमाता कामायनी की हालत बिगड़ती चली गई और एक दिन अचानक उनकी मृत्यु हो गई ।

देवेंद्र और पद्मिनी वाले प्रकरण को राजमाता ने हल्के में लिया क्योंकि वह एक स्वाभाविक आकर्षण वाली बात थी !
उन्हें उस में बहुत ज्यादा कुछ गंभीर नहीं लगा ....
लेकिन वह वास्तव में गंभीर था ।

यौवनागमन का जो काल होता है, उस समय बच्चों पर अगर आप थोड़ी सी नजर रखेंगे तो इस बात की पूरी संभावना है कि वे समझदार और संतुलित मानसिकता वाले युवा बनेंगे !

यदि वह कालखंड ऐसा होगा जिसमें आपके पास उनको ध्यान देने के लिए समय नहीं होगा तो इस बात की पूरी संभावना है कि बच्चे कुछ ना कुछ उल्टी-सीधी हरकतें अवश्य करेंगे जिसके दुष्परिणाम भविष्य में आपको परेशान कर सकते हैं ।

राजमाता की मृत्यु के बाद परिस्थितियां जटिल हो गई थी । राजा वीरेंद्र बेहद दुखी थे और मंजरी को राजकार्य में ज्यादा समय देना पड़ रहा था इसलिए वह देवेंद्र पर बहुत ज्यादा ध्यान नहीं दे पा रही थी .....

देवेंद्र का स्वप्नलोक आगे विकसित हो रहा था जिसमें रंग बिखेरने का काम पद्मिनी कर रही थी । अब देवेंद्र पूरी तरह से उसके जाल में फंस चुका था !
वह जब भी पद्मिनी के संग की इच्छा प्रकट करता वह मना कर देती और बोलती जब समय आएगा तब मैं तुम्हें स्वयं बुलाऊँगी ।

पुरुष के साथ यह एक बहुत बड़ी दिक्कत है कि जो चीज उसे आसानी से हासिल हो जाती है, उसके पति उसका आकर्षण कम रहता है !
जो चीज लुभा लुभा कर प्राप्त होती है उसके प्रति उसका आकर्षण बढ़ता जाता है .....
यही देवेंद्र के साथ भी हो रहा था ।

पद्मिनी राजमहल में किसी  प्रकार का बखेड़ा नहीं खड़ा करना चाहती थी इसलिए उसने एक दूसरा प्लान बनाया । गंगा नदी के किनारे एक पुराना खंडहर था उस खंडहर में एक रात पद्मिनी ने देवेंद्र को बुलाया !

राजमाता की मृत्यु को लगभग 6 माह हो चुके थे.....

देवेंद्र अंधेरी रात में गुपचुप तरीके से निकलता हुआ उस खंडहर में पहुंचा ।

यहां एक गड़बड़ हो गई ।
जैसा कि मैंने आपको बताया था आचार्य विद्यानंद शास्त्री अथर्ववेद में विशेष रुचि रखते थे । मूल रूप से वह दक्षिणमार्गी साधक थे लेकिन अथर्ववेद की विद्याओं को सिद्ध करने का उनका आग्रह कभी भी शांत नहीं हुआ था। वह इसी खंडहर वाले जगह पर आकर अपनी साधनाएं संपन्न करते थे ।
वह खंडहर वास्तव में महाकाली का एक गुप्त मंदिर था, जिसके ऊपर एक हवेली बनी हुई थी जो जर्जर हो चुकी थी। उस हवेली के नीचे एक गुप्त रास्ता था । जहां से उतरने पर एक महाकाली का मंदिर था । उस मंदिर में लगभग 8 फीट ऊंची काले रंग की महाकाली की चतुर्भुजी प्रतिमा स्थापित थी ।
उसी प्रतिमा के सामने आचार्य विद्यानंद शास्त्री अपने विभिन्न प्रकार के प्रयोगों को संपन्न करते । अभी भी वह उसी कक्ष में बैठे हुए थे और उनका मंत्र जाप चालू था।
सात दिन की साधना चल रही थी, आज आखिरी दिन

था। अमावस्या की तिथि थी और मंत्र जप पूरा हो जाने के बाद उनके सामने उच्छिष्ट चाण्डालिनी का प्रादुर्भाव होना था।

यह विद्या अत्यंत गोपनीय होने के साथ-साथ बेहद संहारक भी है क्योंकि इस विद्या के सिद्ध हो जाने के बाद भूत भविष्य की जानकारी भी प्राप्त हो जाती है।

स्वयं उच्छिष्ट चाण्डालिनी उस साधक के साथ गमन करती है। उग्र साधनाओं के समान इसमें भी एक दिक्कत थी कि यदि किसी कारणवश साधना पूर्ण होने के पहले आसन छोड़ दिया तो देवी स्वयं उस साधक का सर धड़ से अलग कर देती है। इसलिए बहुत कम लोग इस साधना में प्रवृत्त होते थे और वह भी विशेष रूप से अथर्ववेद के अंतर्गत दी गई प्रक्रियाओं के अनुसार .....

भवितव्यता अर्थात घटना के घटने की प्रासंगिकता या संभावना का कोई तोड़ नहीं होता। अब आप कल्पना करें कि वह सुंदरी देवेंद्र को उसी खंडहर वाले हवेली में बुला रही थी जहाँ उसने एक कक्ष को सजा कर रखा

हुआ था ! जो उन दोनों की देह लीला का केंद्र बनने वाला था ।

रात्रि  का समय योगी और भोगी दोनों के लिए उपयोगी होता है ! महत्वपूर्ण होता है !!

आचार्य विद्यानंद शास्त्री अपने साधना के अंतिम चरण को पूरा करने के लिए सन्नद्ध थे , वही दूसरी ओर देवेंद्र अपनी वासना की पूर्ति के लिए आतुर होता हुआ उस खंडहर की ओर बढ़ रहा था.....

अंधेरी रात थी ...

दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था.....

नदी का तट....

लहरों का प्रवाह !

वातावरण की शून्यता को भंग करता हुआ प्रतीत होता था ।

बीच बीच में किसी चमगादड़ के पंखों के फड़फड़ाने की आहट वातावरण को थोड़ी और भयावहता प्रदान कर रही थी ।

अचानक जब कोई झिंगुर चीखता था तो उसकी आवाज सुनकर देवेंद्र उस ओर देखने लग जाता था लेकिन उस घनघोर अंधकार में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था ....

वह दबे पाव धीरे-धीरे उस खंडहर की ओर बढ़ रहा था.....

खँडहर काफी जर्जर अवस्था में था लेकिन उसके 1-2 कक्ष अभी भी काफी अच्छी स्थिति में थे । जहां पर इस वक्त पद्मिनी बैठी हुई थी ।

ठीक उसी कक्ष के नीचे वह साधना स्थल था । जहां पर आचार्य विद्यानंद शास्त्री अपनी साधना को पूर्णता प्रदान करने के लिए तत्पर हो रहे थे ।
पद्मिनी का विचार था कि वह कुमार को विष लिप्त करके उसी खंडहर में छोड़ देगी । इसके लिए उसने अपने साथ एक छोटे से विषधर की भी व्यवस्था की हुई थी ताकि किसी को शक ना हो कि यह कार्य किसी विषकन्या का है ।
रात आगे बढ़ती चली गई !

अर्धरात्रि के समय को आने में अभी लगभग 1 घंटे का समय शेष था !

नीचे साधना कक्ष में विद्यानंद शास्त्री का मंत्र जाप पूरे जोरों से जारी था ।

देवेंद्र धीरे-धीरे उस कक्ष तक पहुंच चुका था ...

देवी के परीक्षण कई प्रकार के होते हैं ....

जितनी उच्च कोटि का साधक होता है !

उसे उतने ही जटिल परीक्षणों से होकर गुजरना पड़ता है ।

जैसे-जैसे अर्ध रात्रि का समय निकट आते जा रहा था ।

मूर्ति की तेजस्विता बढ़ती जा रही थी ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह जागृत हो रही हो ।

अंतिम दिन !

साधना का अंतिम चरण !

साधना की पूर्णता ...

और विद्यानंद शास्त्री को भगवती की कृपा प्राप्त हो जानी थी ।

विद्यानंद शास्त्री की निरंतर इच्छा रहती थी कि वेदों का जो चौथा अंश अर्थात अथर्ववेद है उसके अंदर निहित ज्ञान को भी बाहर आना चाहिए । एक बार उन्होंने इस बात का उल्लेख मालिनी से किया था लेकिन उसके बाद फिर उन्होंने कभी भी इस विषय पर मालिनी से चर्चा नहीं की थी ।

कई बार वे दो-दो तीन-तीन दिनों के लिए आश्रम से गायब रहते थे ।

यह कई सालों से चला आ रहा था ।

इसलिए मालिनी भी इस पर विशेष ध्यान नहीं देती थी । जब ज्यादा दिनों के लिए जाना होता तो वह अवश्य बता कर जाते थे ।

इस बार उन्होंने बता दिया था कि अमावस्या तक विशेष अनुष्ठान है जिसे पूरा करने के बाद ही मैं वापस लौटूंगा !

अर्ध रात्रि का समय करीब आ रहा था !

मूर्ति की तेजस्विता बढ़ती जा रही थी।

अचानक कक्ष में एक आवाज गूंजी - बेहद कड़क तेज और कर्कश आवाज - बंद कर ! क्यों कर रहा है

यह सब ! तेरा युवराज संकट में है ! उसकी रक्षा नहीं करेगा ?

उसके बाद भयंकर अट्टहास की आवाज गूंजने लगी । आचार्य विद्यानंद शास्त्री अपने मंत्र जाप में लगे रहे । लेकिन भगवती के मुख से युवराज के विषय में सुनकर उनके मन में कहीं न कहीं विचलन जरूर पैदा हो गया । साधक के मन में किसी भी प्रकार का विचलन आना एक बहुत बड़ी रुकावट है । लेकिन मनुष्य का मन और उसकी बनावट ही ऐसी है कि अति निकटस्थ लोगों के विषय में कुछ गलत सुन लेने पर मन में विचलन का भाव उत्पन्न हो जाता है !
कुछ ऐसा ही आचार्य विद्यानंद शास्त्री के मन में भी हो रहा था ।
फिर भी किसी तरह वह अपने मन को समझा कर मंत्र जाप में लगे हुए थे ।

देवेन्द्र धीरे धीरे खंडहर के कक्ष मे पहुँच चुका था .. जहां साक्षात रति की प्रतिकृति बनी पद्मिनी ने बड़ी आत्मीयता के साथ उसका स्वागत किया ।
उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह स्वर्ग में पहुंच गया हो ।

पद्मिनी सधे हुए कदमों से उसे पकड़े हुए सजी हुई शैया तक पहुंची .....

और उसके बाद आरंभ हुआ.....

विषकन्या का वह

मादक !

कामुकतापूर्ण !!

भावनाओं को चरम तक पहुंचा देने वाला अंतिम सहवास .....

जिसके बाद शेष रह जाने वाली थी .....

उसकी यादें !!!

जिसके साथ देवेंद्र संभवत इस दुनिया को ही छोड़ चुका होगा .....

जैसा कि मैंने आपको बताया था कि वह साधना कक्ष जिसमें आचार्य विद्यानंद शास्त्री बैठकर साधना कर रहे थे , वह उसी कक्ष के नीचे में था जहां पर पद्मिनी और देवेंद्र मौजूद थे !

लेकिन इस कक्ष से नीचे जाने का मार्ग किसी को नहीं पता था !

नीचे के कक्ष में जाने के लिए कमरे में एक विचित्र तांत्रिक यंत्र लगा हुआ था ।
उस यंत्र का गोल गेंदनुमा हिस्सा दीवाल पर था ।

जिसको दबाकर घुमाने से उस कक्ष का पूरा का पूरा फर्श घूम कर नीचे वाले कक्ष में चला जाता था । इस रहस्य को आचार्य भी नहीं जानते थे । आचार्य विद्यानंद शास्त्री भी नदी के तट पर बने हुए एक अन्य गुफा के अंदर से आने वाले दूसरे मार्ग से उस कक्ष के नीचे आते थे ।

जब साधना के खंडित होने की संभावना होती है तो उसके लिए कोई न कोई निमित्त और माध्यम भी बन ही जाता है .....
रतिक्रीड़ा के दौरान ही अचानक देवेंद्र का हाथ उस यंत्र पर जा लगा जिसके दबाकर घुमाने से उस कक्ष का पूरा का पूरा फर्श घूम कर नीचे वाले कक्ष में चला जाता था ।

जैसे ही उस हत्थे पर देवेंद्र का हाथ लगा .....

अचानक जोर की गड़गड़ाहट की आवाज हुई और वह पूरा फर्श नीचे की तरफ जाने लगा और जाकर आचार्य के साधना कक्ष में जा टिका !
उस आवाज को सुनकर आचार्य भी विचलित हो गए !!

जैसे ही उन्होंने निर्वस्त्र अवस्था में राजकुमार देवेंद्र और पद्मिनी को देखा .....
तो वह क्रोधित होकर उठ खड़े हुए !!!

उन्हें यह भान भी नहीं रहा कि इसके क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं ।
लेकिन जो होना था वह हो चुका था !

देवी का खड़ग अचानक हवा में उछला और आचार्य विद्यानंद शास्त्री के धड़ से उनका सर अलग हो गया ।
मुंड विहीन आचार्य का सर आसन पर पड़ा हुआ था ।

विष की तीव्रता के कारण देवेंद्र मृतप्राय अवस्था में आ चुका था और ऐसी स्थिति में नहीं था कि उसे कोई बात समझ में आए .....
यूं समझ लीजिए कि वह अपनी अंतिम सांसें गिन रहा था ।

केवल पद्मिनी जागृत अवस्था में थी .....
लेकिन जैसे ही उसने यह महा भयानक दृश्य देखा !
जिसमें देवी के खडग से आचार्य का सिर उनके धड़ से अलग हो गया था !
वह भयभीत होकर बेहोश हो गई .....

देवी का क्रोध जागृत हो चुका था !

इसका मतलब था कि ...

वहां पर कुछ भी शेष नहीं बचना था !!

और वही हुआ ...

अचानक मौसम का मिजाज बदल गया !
बिजली कड़कने लगी !
थोड़ी ही देर में मूसलाधार बारिश ! तूफानी बारिश ने कहर ढा दिया !!
इतनी तेज बारिश हो रही थी कि लोगों का घर से निकलना मुहाल हो गया और उस भयानक बारिश से

नदी का जल स्तर भी बढ़ने लगा और उस में बाढ़ आ गई ।

हर तरफ लहरों का तांडव चल रहा था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे पानी हर सीमा को तोड़कर हर तरफ फैल जाना चाहता हो ।

बाढ़ के पानी की वजह से उस खंडहर की दीवारें भरभरा कर नीचे गिरने लगी और नदी का पानी फलफला कर उस गुफा के अंदर भरने लगा .....

थोड़ी ही देर में सब कुछ जल मग्न हो चुका था और पूरा का पूरा खंडहर जमीन में धंस गया था !

ऐसा प्रतीत ही नहीं हो रहा था कि वहां पर कभी कोई खंडहर जमीन के ऊपर मौजूद था !!

और उसी के साथ .....

भूमि के गर्भ में दब गया था ....

आचार्य विद्यानंद शास्त्री ! पद्मिनी !! और देवेंद्र का रहस्य .....

अगले दिन प्रातः राजमहल वासियों को राजकुमार देवेंद्र के गायब होने का पता चला और उसके बाद राजकुमार

देवेंद्र को खोजने के लिए अगले दिन से बहुत गंभीर प्रयास प्रारंभ हुए ।
राज्य में हर तरफ खोजबीन की गई लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला !!
अंततः यह मान लिया गया कि या तो देवेंद्र बाढ़ मे बह गया है या फिर उसकी मृत्यु हो गई है ।

अमावस्या की रात गुजर चुकी थी और अगले दिन आचार्य विद्यानंद शास्त्री को भी घर लौटना था लेकिन वह भी घर नहीं लौटे ।
मालिनी ने इसके संबंध में मंजरी और राजा जी के पास सूचना भिजवाई !
एक महीने तक जब उनका भी कोई सुराग नहीं मिला तो धीरे-धीरे उनकी खोज भी शांत हो गई ।

लगभग एक माह गुजर जाने के बाद अचानक एक रात को मालिनी को आचार्य विद्यानंद शास्त्री की सिर विहीन आकृति अचानक दिखाई दी .....
जिसे देख कर वह हड़बड़ा कर उठ बैठी ।
मालिनी विदुषी महिला थी और इस संकेत का मतलब समझती थी ।

वह समझ गई कि अब आचार्य इस धरा पर नहीं रहे हैं ।

इसी प्रकार के संकेत उसे लगातार दो-तीन दिनों तक मिलते रहे !

जो आचार्य के देह त्याग की पुष्टि करने वाले थे !

अब तक बड़ा पुत्र नीलकंठ लगभग 16-17 वर्ष का युवा हो चुका था और कई विधाओं के साथ-साथ प्रश्न विद्या के विषय में भी वह काफी ज्ञान अर्जित कर चुका था ।

माता मालिनी की विचलित अवस्था को देखकर उसने प्रश्न कुंडली के प्रयोग का विचार किया और प्रश्न समाधान के द्वारा जो उत्तर मिला वह मालिनी के संदेह को पुष्ट करने वाला था ।

अर्थात आचार्य विद्यानंद शास्त्री अब इस धरा पर मौजूद नहीं थे !

सुनने में यह समाचार सभी के लिए बेहद दुखदाई था !

साथ ही एक बहुत बड़ा आघात भी !! क्योंकि आचार्य एक वटवृक्ष की तरह थे और उनकी उपस्थिति और उनके मार्गदर्शन में बहुत सारे कार्य बेहद सहजता से संपन्न हो जाते थे !

अब आश्रम वासी भी अपने आप को अनाथ महसूस करने लगे थे .....

समय गुजरता रहा....

इस घटना को लगभग तीन महीने बीत चुके थे !
एक दिन आचार्य के आश्रम में एक खप्पर धारी प्रकट हुआ । लगभग साडे 6 फुट लंबा हट्टा कट्टा विशालकाय अघोरी !
सर से पांव तक भस्म से रंगा हुआ !
चेहरे में चोट के निशान !
आंखों में बिखरी हुई क्रूरता ....
लाल लाल आंखें जैसे खून से सनी हुई हो !
बाएं हाथ में एक खप्पर था और दाहिने हाथ में बड़ी सी तलवार ।
जिसके फाल पर लाल लाल खून जम गया था ।
ऐसा लग रहा था जैसे किसी की बलि चढ़ा कर आ रहा हो !

आश्रम वासियों को इस प्रकार के अघोरियों को देखने का अनुभव नहीं था , क्योंकि आचार्य विद्यानंद शास्त्री

के रहते किसी अघोरी की मजाल नहीं थी कि वह आश्रम की सीमा के अंदर कदम भी रख सके ! क्योंकि वे जानते थे कि आचार्य विद्यानंद शास्त्री विभिन्न प्रकार की विद्याओं के ज्ञाता हैं और उनके समक्ष किसी भी प्रकार की गलती का मतलब निश्चित कठोरतम दंड होता था और वह उन पर काफी भारी पड़ सकता था !

संभवत: उस अघोरी को पता चल गया था कि अब आचार्य इस धरा पर नहीं रहे । जैसा कि मैंने बताया था कि आचार्य विद्यानंद शास्त्री वैज्ञानिक किस्म की मानसिकता वाले तांत्रिक थे और वे विभिन्न प्रकार की गोपनीय वस्तुओं के खोज और आविष्कार में लगातार लगे रहते थे ।
उन्होंने रस विद्या पर भी काफी काम किया हुआ था । रस का अर्थ होता है पारद ! पारद अर्थात मरकरी ! यह एक एक ऐसी धातु है जो द्रव अवस्था में पाई जाती है । इसका उपयोग पहले थर्मामीटर में किया जाता था ! तापमान मिलने पर यह फैलती है और उसके इसी गुण का प्रयोग करके थर्मामीटर में शरीर का तापमान लिया जाता है ।

यह एक अत्यंत विचित्र धातु है !
यह किसी भी धातु को अपने अंदर समाहित करके अमलगम बनाती है अर्थात एक घोल जैसा बना लेती है , जिसमें से बाद में उस धातु को अलग किया जा सकता है । यदि पारे के ऊपर सोना स्पर्श हो जाए तो पारा सोने को अपने अंदर समाहित कर लेता है, यदि आपने सोने की अंगूठी पहनी हुई है और पारे का स्पर्श हो गया तो यह मान कर चलिए कि आपकी अंगूठी के टूटने की संभावना बलवती हो जाती है क्योंकि पारा आपकी अंगूठी में से सोना अपने अंदर समाहित कर लेता है ।

पारे के विषय में यह भी कहा जाता है कि वह भगवान शिव का वीर्य है अर्थात रसेश्वर महादेव का रस है पारद । इसलिए पारे से बने हुए शिवलिंग को साक्षात शिव का प्रतीक माना जाता है ।

पारे को शुद्ध करने की प्रक्रिया को संस्कार कहते हैं । लगभग 108 प्रकार के संस्कार होते हैं जिसमें से 7 या 8 संस्कार कर लेने के बाद पारे को औषधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है । इसका एक उदाहरण वह

पारद गोली है जो आप अपने चावल और गेहूं के डब्बे में कीड़ा न लगने के लिए डालते हैं ! जिसे पारद तिकड़ी भी कहा जाता है !

औषधि के क्षेत्र में पारद का प्रयोग बेहद जटिल और खतरनाक भी माना जाता है , क्योंकि यदि पारा अपनी अशुद्ध अवस्था में मनुष्य के शरीर में चला जाए तो वह उसकी रक्त नलिकाओं को फाड़ देता है । उसमें से बहने वाले खून की वजह से इंटरनल ब्लीडिंग हो जाती है और व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है ।
ऐसे पारे को विभिन्न संस्कारों के द्वारा शुद्ध करके उनसे औषधि बनाई जाती है और आयुर्वेद के विशेषज्ञ उसका उपयोग कई प्रकार के जटिल रोगों के समाधान में भी करते हैं । इनमें से एक प्रमुख औषधि है रस सिंदूर ! इसके अलावा भी अनेक औषधियां आयुर्वेदिक विशेषज्ञों द्वारा प्रयोग की जाती है !
वह एक अलग विषय है ।

इसके अलावा एक अन्य प्रक्रिया है जिससे पारे को ठोस बनाकर पारे का शिवलिंग बनाया जाता है । शिवलिंग बनाने की प्रक्रिया के आगे भी पारद का संस्कार संपन्न

होता है । पारे का संस्कार जब अपनी उच्चतम अवस्था पर पहुंचता है तो उसे सिद्ध पारद या सिद्ध सूत कहा जाता है । ऐसा कहा जाता है कि इस सिद्ध सूत को अगर लोहे पर डाला जाए तो वह कुछ समय में सोने में परिवर्तित हो जाता है । यू समझ लीजिए कि वह पारस पत्थर जैसा कार्य करता है ।

पारस पत्थर एक ऐसा पत्थर माना जाता है, जिसके स्पर्श से लोहा सोने में परिवर्तित हो जाता है । इससे आप समझ सकते हैं कि पारद विज्ञान का क्षेत्र कितना विस्तृत जटिल और संभावनाओं से भरा हुआ है ।

भारत में अनेक ऐसे आचार्य हुए हैं जो पारद के क्षेत्र में कार्य करते रहे हैं उनमें से एक बड़े आचार्य का नाम नागार्जुन था, जो रस के क्षेत्र में अपने वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए तथा अनुसंधान के लिए जाने जाते रहेंगे ।

आचार्य विद्यानंद शास्त्री भी रस विद्या में माहिर थे ! उन्होंने सिद्ध सूत बनाने में सफलता हासिल कर ली थी । जब तक कोई सिद्ध पुरुष मौजूद रहता है तो उसके द्वारा बनाई गई चीजें भी सुरक्षित रहती है क्योंकि

आक्रमणकारी जानते हैं कि वहां जाने में खतरा है ।
लेकिन जब वह सिद्ध पुरुष वहां से हट जाता है तो !
या फिर जब उसकी मृत्यु हो जाती है तो !
आक्रमणकारी उस विशेष वस्तु को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं ।
वह अघोरी उसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए आश्रम में आया था ।
उसने आते ही अपना त्रिशूल आश्रम के दरवाजे में गाड़ दिया । इस प्रकार से त्रिशूल गाड़ने का अर्थ होता है कि मैं इस स्थान पर अपना आधिपत्य स्थापित करता हूं और किसी को विरोध हो तो वह सामने आए ।
आचार्य सात्विक प्रवृत्ति के थे ।
इसलिए उनके शिष्य भी सात्विक प्रवृत्ति के ही थे ।

आमतौर पर सात्विक प्रवृत्ति का मनुष्य थोड़ा डरपोक होता है.....

आचार्य के प्रमुख शिष्य अच्युतानंद ने अघोरी के सामने खड़े होने का प्रयास किया ! लेकिन दोनों का कोई जोड़ ही नहीं था !
एक तरफ श्वेत वस्त्र धारी सौम्य स्वभावी अच्युतानन्द !!

और दूसरी तरफ वह विशालकाय भयानक व्यक्तित्व का स्वामी अघोरी !
दोनों का कोई जोड़ नहीं था।

एक तरफ सौम्यता की प्रतिमूर्ति अच्युतानन्द और दूसरी तरफ मृत्यु का साक्षात बिम्ब वह अघोरी ....

अच्युतानन्द के सामने आते ही अघोरी ने अपनी तलवार से उस पर प्रहार कर दिया !

वह इस प्रकार के हमले के लिए तैयार नहीं था !
वह किसी कटे वृक्ष की तरह जमीन पर गिर गया ।

उसका सर धड़ से अलग हो चुका था ।
अच्युतानंद की इस अवस्था को देखकर आश्रम में भगदड़ मच गई ।
सारे लोग इधर-उधर भागने लगे !
कुछ समय में ही आश्रम खाली हो चुका था ।

मालिनी उस समय स्नान करने के लिए नदी तट पर गई हुई थी ।

चीख-पुकार सुनकर जब वह वापस आश्रम की ओर दौड़ी तो उसे अच्युतानन्द का सर कटा शरीर और भागते हुए आश्रमवासी दिखाई दिए, साथ ही दिखाई दिया वह दुर्दांत अघोरी !
जो अपने हाथ मे अच्युतानन्द के रक्त से सनी हुई तलवार लेकर आश्रम के प्रमुख कक्ष की ओर बढ़ रहा था ।

पूर्णानंद और वैभवी उसी कक्ष में मौजूद थे । मालिनी बच्चों के लिए किसी भी मां की तरह चिंतित हो उठी और तेजी से उस कक्ष की ओर चीखती हुई दौड़ी -
पूर्णा ! वैभवी ! स्वयं को बचाओ !!
आवाज लगाती हुई मालिनी उस कक्ष की ओर दौड़ रही थी , लेकिन वहां पहुंचने से पहले ही अघोरी ने उसे पकड़ लिया ।

जब बात अपने बच्चों की रक्षा की हो तो हर स्त्री साक्षात रणचंडी का स्वरूप धारण कर लेती है और मालिनी तो युद्ध कला में माहिर स्त्री थी !
जैसे ही अघोरी ने उसे पकड़ा उसने अपना दांव चल दिया और अघोरी मुंह के बल जमीन पर जा गिरा ।

एक महिला से इस प्रकार के दांव की उम्मीद अघोरी को नहीं थी और यहीं पर वह मात खा गया !

लेकिन.....

जमीन पर गिरते ही उसे समझ में आ गया कि यह आसान शिकार नहीं है ।

अघोरी के नीचे गिरते ही मालिनी दौड़कर प्रमुख कक्ष में जा चुकी थी । जहां पर उसके अस्त्र-शस्त्र रखे थे । अब उसके हाथ में भी तलवार थी जिसे लेकर वह अघोरी से दो-दो हाथ करने के लिए तैयार हो चुकी थी ।

हल्ला गुल्ला और शोरगुल सुनकर वैभवी और पूर्णानंद भी बाहर आ चुके थे और आश्रम की अवस्था को देखकर थोड़े विचलित हो गए थे ।

सामने का दृश्य और भयानक था ।

माता मालिनी आश्रम की रक्षा के लिए तलवार लेकर उस विशालकाय अघोरी के साथ द्वंद युद्ध कर रही थी । मालिनी युद्ध कला में निपुण अवश्य थी , लेकिन अघोरी का शारीरिक बल उसकी युद्ध कला पर भारी पड़ रहा था ।

तभी अचानक .....
अघोरी ने किसी अज्ञात मंत्र का उच्चारण किया और मालिनी का शरीर अचानक स्थिर हो गया ।

तंत्र में एक स्तंभन विद्या भी होती है, जिसके अंतर्गत कई प्रकार के स्तंभन किए जा सकते हैं । स्तंभन का तात्पर्य होता है रोक देना ।
इसमें अगर मुख स्तंभन का प्रयोग किया जाए तो आदमी कुछ बोल नहीं पाता है !
उसी प्रकार से शस्त्र स्तंभन भी होता है , शस्त्र स्तंभन कर देने से शत्रु का शस्त्र हवा में ही लटक जाता है और उससे वह किसी प्रकार का प्रहार नहीं कर पाता । इसी विद्या का प्रयोग करके अघोरी ने मालिनी का शस्त्र स्तंभन कर दिया था ।

अचानक पूर्णानंद और वैभवी को अपने शरीर में विद्युत स्पंदन जैसा एहसास हुआ और उनके मुंह से विपरीत प्रत्यंगिरा विद्या का उच्चारण होने लगा ।

अघोरी तेजी से मालिनी की ओर प्रहार करने के लिए बढ़ा , तभी जैसे आसमान में कोई बिजली सी कड़की

और एक तेज किरण पूर्णानंद और वैभवी के शरीर से निकलती हुई उस अघोरी से जा टकराई । अघोरी लगभग 20 फुट उछलकर पीछे जा गिरा ।

उसे इस प्रकार के किसी प्रयोग की उम्मीद नहीं थी ! खासतौर से 11- 12 वर्ष के छोटे बच्चों से ! जो उसके सामने खड़े थे !!
लेकिन प्रयोग हो चुका था , और उसका भयंकर आघात झेल कर वह जमीन पर पड़ा हुआ था !

उसे समझ में आ चुका था कि इन बच्चों को सामान्य समझ कर उसने बहुत बड़ी भूल कर दी थी, क्योंकि विपरीत प्रत्यंगिरा का प्रयोग इतना घातक होता है कि सामान्य व्यक्ति उसकी एक आवृत्ति मे ही मृत्यु तुल्य कष्ट की अवस्था में चला जाता है ।

अघोरी जमीन पर पड़ा हुआ था उसका सारा शरीर अवश हो चुका था । लकवा ग्रस्त अवस्था में पढ़े हुए उस अघोरी को वे सब देख रहे थे !
तब तक राजा की सैनिक टुकड़ी सूचना पाकर वहां पहुंच चुकी थी ।

अघोरी को वे सैनिक उठाकर ले गए इसके साथ ही मालिनी को लगा कि सब कुछ शांत हो गया है ..... लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं था.....
उसी रात अघोरी के सहयोगियों ने फिर से आश्रम पर आक्रमण कर दिया ।
राजा के सैनिक वहां पर सुरक्षा के लिए मौजूद थे । दोनों के बीच युद्ध हुआ और आधे से ज्यादा सैनिकों को अघोरियों ने मौत के घाट उतार दिया । इसमें कई अघोरी भी मारे गए लेकिन आखिरकार सैनिक उन्हें मार भगाने में सफल हुए ।

पूर्णानंद और वैभवी ने मालिनी से इस प्रकार के हमले करने का कारण पूछा तो मालिनी पूर्णानंद वैभवी और नीलकंठ को लेकर उस गुप्त साधना कक्ष में गई ।
वहां पहुंचने के बाद उसने उनको एक बड़े से संदूक को दिखाया । उस संदूक के अंदर बहुत सारी चीजें रखी हुई थी । जिसमें से एक कांच का छोटा मर्तबान था । उसके अंदर भस्म जैसी कोई चीज रखी हुई थी ।

मालिनी ने बताया - बच्चों ! यह तुम्हारे पिताजी के द्वारा पारे को संस्कारित करके बनाया गया सिद्ध सूत है !

नीलकंठ ने पूछा - वह क्या होता है मां ?
मालिनी - पारे का संस्कार करके उसे एक ऐसी स्थिति में पहुंचाया जाता है । जहां पर वह भस्म में परिवर्तित हो जाता है । इस भस्म का एक अंश अगर किसी लोहे की वस्तु पर डाल दिया जाए तो उस पर तत्काल ऐसी रासायनिक क्रिया संपन्न होती है जिसकी वजह से वह लोहा स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है ।

तीनों बच्चों के चेहरे पर विस्मय और आश्चर्य के भाव थे ! जिसे देखकर मालिनी ने कहा - ठीक है ! मैं तुम्हें यह करके दिखाती हूं , तुम कोई लोहे की वस्तु उठा कर लाओ ।

नीलकंठ तुरंत कमरे में रखा चाकू लेकर आ गया ।
मालिनी ने कक्ष के द्वार को बंद कर लेने के लिए कहा ।
कक्ष के द्वार को बंद कर दिया गया !

उसके बाद मालिनी एक विशेष योगिक मुद्रा में बैठ गई । उसने कुछ विशेष मंत्रों का उच्चारण किया और उस भस्म में से । तिनके की सहायता से थोड़ा सा अंश निकालकर उस चाकू के ऊपर डाल दिया ।

जैसे ही वह भस्म चाकू के ऊपर गिरा ।

चाकू तुरंत ही लोहे से सुनहरे रंग में बदलने लगा .....

और..... थोड़े समय में वह पूरी तरह से स्वर्ण का हो गया ।

यह देखकर बच्चे दंग रह गए !!!

मालिनी बोली - यह रस विद्या है ! जिसके विषय में तुम्हारे पिताजी शोध कर रहे थे । इस संदूक में इस विषय पर उनके द्वारा जो भी खोज की गई थी उसको उन्होंने लिपिबद्ध किया हुआ है । अब समय आ गया है कि तुम इस विद्या को समझ लो ।

आज हमारे आश्रम में जो आक्रमण हुआ है ..... उसके पीछे यही प्रमुख कारण है ! क्योंकि उन अघोरियों को पता है कि तुम्हारे पिता ने सिद्ध सूत बना लिया है और वह उसे हासिल करना चाहते हैं ।

यह आक्रमण आख़िरी आक्रमण नहीं है !

इसके बाद और भी आक्रमण हो सकते हैं इसलिए हम सब को तैयार रहना पड़ेगा । लेकिन उससे पहले तुम लोग इस विद्या को सीख लो ।

आज रात मैं तुम्हें रस विद्या के विषय में बताऊंगी उसके बाद तुम इस ग्रंथ में लिखे हुए गुप्त चिन्ह और संकेतों को समझ पाओगे !
जिस से रस विद्या को सिद्ध करने में तुम को कोई परेशानी नहीं होगी ।

अर्धरात्रि के आसपास जब सारे लोग सो गए थे ।
तब ..... मालिनी ने कुछ विशेष मंत्रों का उच्चारण किया !
मंत्रोच्चारण पूर्ण होते होते कमरे का वातावरण भारी होने लगा ।
कमरे में एक बड़ा सा पारे का बना हुआ शिवलिंग भी रखा हुआ था । उसी लिंग में से प्रकाश की किरण फूटने लगी ! उन्होंने धीरे-धीरे एक धुएं के गोले जैसा स्वरूप धारण कर लिया और उसमें से एक मानव आकृति धीरे धीरे स्पष्ट होने लगी ।

थोड़ी देर में आचार्य विद्यानंद शास्त्री का सूक्ष्म बिम्ब कमरे में प्रकट हुआ !
जिसे देखकर तीनों बच्चे आश्चर्यचकित रह गए ।
मालिनी ने उन्हें प्रणाम किया !

जिसे देखकर तीनों बच्चों ने भी उन्हें झुककर प्रणाम किया उन्होंने तीनों के सर पर हाथ फेरा ।

मालिनी ने कहा - अघोरियों ने आश्रम में आक्रमण प्रारंभ कर दिया है और आने वाला समय कठिन दिखाई दे रहा है । ऐसी स्थिति में इस विद्या को बचाए रखने के लिए अब इन तीनों बच्चों को रस विद्या का ज्ञान प्रदान करना आवश्यक हो गया है । इसलिए आप इन्हें रसेश्वरी दीक्षा प्रदान करें ताकि वह इस विद्या को समझ सके ।

आचार्य ने विभिन्न प्रकार के मंत्रों का उच्चारण किया और तीनों बच्चों को रसेश्वरी दीक्षा प्रदान की ।
रसेश्वरी दीक्षा वही गुरु दे सकता है जिसे स्वयं रसेश्वरी दीक्षा प्राप्त हुई हो । जो पारे के संस्कार को करना जानता हो । रसेश्वरी दीक्षा पारद विज्ञान को समझने के लिए तथा इस विद्या को आत्मसात करने के लिए गुरु अपने शिष्य को प्रदान करता है ।
इस दीक्षा के प्राप्त हो जाने से रस सिद्ध आचार्यों का आशीर्वाद उस साधक को प्राप्त होता है और उसके बाद विभिन्न प्रकार के मंत्र जाप और कई सालों की रसायन प्रक्रिया के द्वारा उसे रस सिद्धि प्राप्त होती है ।

रसेश्वरी दीक्षा प्रदान करने के बाद आचार्य ने कुछ विशिष्ट मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ किया और दीवाल की ओर देखते हुए कुछ विशेष प्रकार का संकेत किया और उनके हाथों से गहरे नीले रंग की रश्मियां निकलकर दीवाल में समा गई ।

दीवाल का एक हिस्सा सरकने लगा और वहां पर एक आला दिखाई देने लगा । उसमें एक बड़ा सा कुछ लाल कपड़े में लिपटा हुआ रखा था ।
आचार्य ने कहा- यह रस विद्या का एक अत्यंत उच्च कोटि का ग्रंथ है । जो आले में रखा हुआ दिख रहा है । आगे सारा ज्ञान तुम इसी ग्रंथ के माध्यम से प्राप्त कर सकते हो इसमें मालिनी तुम्हारी सहायता करेंगी ।
इतना कहकर आचार्य का बिंब वहां से लुप्त हो गया ।

उस आले में एक बड़ा सा ग्रंथ रखा हुआ था ! जो रस विद्या से संबंधित था ।
मालिनी ने नीलकंठ को उसे उठाकर लाने के लिए कहा । वह ग्रंथ लगभग 1 फुट चौड़ा और डेढ़ फुट लंबा था ।
मालिनी ने बताया - यह ग्रंथ जिसे तुम देख रहे हो यह भी स्वर्ण तंत्र का एक विशेष आयाम है । इस ग्रंथ को

मनुष्य के चमड़े पर विशेष प्रकार के रसायनों का लेप करके बनाया गया है । यह ग्रंथ कम से कम 3000 साल पुराना है ।

तीनों बच्चे उस ग्रंथ को देखकर आश्चर्यचकित थे, क्योंकि उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे अभी अभी उसे बनाया गया हो !

उस चमकदार ग्रंथ को देखकर यह कोई भी स्वीकार करने को तैयार नहीं होता कि वह 3000 साल पुराना ग्रंथ है । ऐसा लगता था जैसे अभी अभी उसे तैयार किया गया हो और उस पर किसी चमकदार चीज से पॉलिश किया गया हो ।

मालिनी ने ग्रंथ को बीच में रखा ।

चारों दिशाओं में वे चारों बैठ गए ..

पूर्व दिशा में मालिनी बैठी !

उत्तर और दक्षिण में पूर्णानंद और वैभवी को बैठाया !

और पश्चिम दिशा में बड़ा पुत्र नीलकंठ बैठा ।

उस ग्रंथ का आकार किसी डब्बे के जैसा था ।

ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई संदूक हो । उस के पन्ने किस प्रकार से पलटे जाएंगे यह सोचते हुए बच्चे बैठे हुए थे ।

मालिनी ने सभी को अपनी अपनी तर्जनी उंगली को ग्रंथ के ऊपर स्पर्श करने के लिए कहा !

तीनों बच्चों ने अपनी अपनी तर्जनी उंगली को उस ग्रंथ के ऊपर स्पर्श किया !!

सबसे आखरी में मालिनी ने अपनी तर्जनी उंगली को उस ग्रंथ के ऊपर स्पर्श किया !

जैसे ही मालिनी ने अपनी तर्जनी उंगली को उस ग्रंथ पर स्पर्श किया तीनों बच्चों को बिजली के झटके जैसा एहसास हुआ और तीनों अपने स्थान से पीछे की ओर लुढ़क गए !!

मालिनी अपने स्थान पर बैठी रही .....

वह किताब अचानक सुनहरे रंग के प्रकाश से जगमगाने लगी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे सोने की कोई पेटी या ईट रखी हुई है !

इतना चमकीला प्रकाश कि सभी की आंखें चुँधियाने लगी !!!!!
पूरा कमरा सुनहरी आभा से भर चुका था !

लगभग चार पाँच सेकंड तक वह प्रकाश उसी प्रकार से मौजूद रहा !!!
उसके बाद सब शांत हो गया ।

अब वहां पर डब्बे जैसी आकृति की जगह एक सुंदर ग्रंथ रखा हुआ दिखाई दे रहा था ....

उस ग्रंथ में भूरे रंग का चमड़े का पन्ना था !
जिसके ऊपर सुनहरे अक्षरों में कई प्रकार की चीजें लिखी हुई थी !

जिसमें कुछ यंत्र थे !
और कुछ विशेष प्रकार के मंत्र भी !!
उस ग्रंथ में लिखे हुए अक्षर सोने की स्याही से लिखे हुए प्रतीत होते थे !

बिल्कुल 24 कैरेट सोने की तरह चमकदार अक्षर ! चमड़े के उन पन्नों पर !! बेहद खूबसूरती से उभरे हुए उकेरे गए थे ।

मालिनी ने उस ग्रंथ में लिखी हुई चीजों के बारे में बच्चों को विस्तार से बताया ।
उस ग्रंथ में पन्ने ही थे !
उनके अंदर लिखे हुए सारे सूत्रों को मालिनी ने बच्चों को समझा दिया ।

जैसा कि आपको ज्ञात है पूर्णानंद और वैभवी विशिष्ट सिद्धि प्राप्त आत्माएं थी !
इसलिए एक बार देखकर ही वह सारी गोपनीय चीजों को समझ गए और उन्हें आत्मसात कर लिया ।
अब वे उस ग्रंथ को देखे बिना ही वे सारी चीजें बोल भी सकते थे और उनकी प्रतिकृति भी बना सकते थे ।
नीलकंठ के लिए वह ज्ञान थोड़ा सा जटिल था लेकिन फिर भी उसने यथासंभव समझने का प्रयास किया और काफी हद तक उसमें कामयाब भी रहा !
मालिनी ने तीनों बच्चों को सारी रात उन मंत्रों का जाप करवाया !

ब्रह्म मुहूर्त में उन गुप्त यंत्रों के रहस्य के विषय में भी बच्चों को बताया । सूर्योदय के आगमन का समय हो चुका था !
जब मालिनी ने वापस तीनों बच्चों को उस ग्रंथ के ऊपर अपनी मध्यमा अंगुली को रखने का निर्देश दिया !

तीनों बच्चों ने अपनी अपनी मध्यमा उंगली उस ग्रंथ के ऊपर रख दी ....
सबसे आखिर में मालिनी ने अपनी मध्यमा उंगली जैसे ही उस ग्रंथ पर स्पर्श की फिर से तीनों बच्चों को झटका सा लगा और वो पीछे की तरफ लुढ़क गए ।

जब उन्होंने उठकर देखा तब तक वह ग्रंथ वापस संदूक के जैसे आकार में बदल चुका था !
मालिनी ने उसे वापस लाल कपड़े में लपेट दिया और उसे उठाकर आले में रख दिया .....

आले में रखने के बाद मालिनी ने वैभवी को पहले पेज पर लिखे हुए मंत्र का उच्चारण करने के लिए कहा !

वैभवी ने पूरी स्पष्टता के साथ उस मंत्र का उच्चारण किया और वह दीवाल वापस पहले के जैसी हो गई .. चारों ने वहां रखे हुए पारद शिवलिंग को प्रणाम किया ।

मालिनी ने कहा - बच्चों ! जिस मंत्र का उच्चारण वैभवी ने किया है उसी मंत्र के माध्यम से वह आला दोबारा खोला जा सकता है , लेकिन ऐसा तभी करना जब अत्यंत आवश्यक हो ।
इस घटना को लगभग एक हफ्ते का समय बीत चुका था ।
आश्रम में राजा वीरेंद्र ने सेना की टुकड़ी तैनात करवा दी थी जो 24 घंटे सुरक्षा में तैनात रहती थी ।

उधर राजमहल के द्वार पर कापालिक सिद्धेश्वर बालक गजेंद्र अर्थात कापालिक चंडेश्वर को लेकर उपस्थित हो चुका था ।
द्वारपाल के माध्यम से उसने सूचना भिजवाई ।
राजा वीरेंद्र और रानी मंजरी के लिए यह जीवन का सबसे सुखद क्षण था !
वह दोनों दौड़ते हुए द्वार की ओर पहुंचे !

वहां खड़ा था उनका लाडला गजेंद्र !!

जो एक लंबे अंतराल के बाद उनके सामने उपस्थित था
।
और साथ में खड़ा था कापालिक सिद्धेश्वर ।

मां और बेटे के मिलन का वह दृश्य किसी को भी
अभिभूत कर देने के लिए सक्षम था ।
मंजरी की आंखों से आंसू रुक नहीं रहे थे और उसे
देखकर गजेंद्र का हृदय भी द्रवित हुआ जा रहा था ।

गजेंद्र को वहां छोड़कर कापालिक सिद्धेश्वर वापस अपने
स्थान को लौट गया ।

सभी के लिए उत्साह और उल्लास का क्षण था !
राजकुमार गजेंद्र वापस लौट आया था !

उसके आने से राज्य भर में खुशियां मनाई गई !!
राजकुमार गजेंद्र की हरकतें अब भी वैसी ही थी ....
अधिकांश समय वह एकांत में ही रहता था और
राजमहल में बना हुआ शिव मंदिर उसका सबसे प्रिय
स्थान था ।

उधर उसका जुड़वा भाई राजकुमार राजेंद्र एक अत्यंत प्रतिभाशाली बालक था । राजनीति से संबंधित विषयों पर उसकी पकड़ और सूझबूझ देखकर सभी गर्व महसूस करते थे ।

युद्ध कला में भी वह निपुण था ।

आचार्य विद्यानंद शास्त्री के आश्रम में उसका पठन-पाठन चल रहा था !
वह आचार्य के प्रिय शिष्यों में से एक था !
उन्होंने अपने सारी कूटनीतिक और राजनीतिक बुद्धि कौशल को राजेंद्र के अंदर समाहित कर दिया था !

राजेंद्र भी उस दिव्य क्षण में किए गए सहवास से उत्पन्न विशिष्ट बुद्धि वाला बालक था और किसी भी विषय को आसानी से आत्मसात करने की शक्ति उसे प्रकृति प्रदत्त थी । उसके अंदर अपनी मातृभूमि तथा लोगों के प्रति किसी राजा के समान वात्सल्य भाव बचपन से ही विद्यमान था ।
उसकी रुचि राजनीतिक विषयों पर जितनी प्रखर थी उतनी ही युद्ध कला में उसकी रुचि भी थी !

वह मालिनी और मंजरी दोनों का दुलारा था क्योंकि दोनों की शस्त्र विद्या की गूढ चीजों को भी वह बड़ी आसानी से समझ जाता था और निरंतर अभ्यास से उसमें सुधार करता जा रहा था ।
बारह वर्ष की अवस्था में ही वह एक अत्यंत उच्च कोटि का योद्धा बन चुका था !
शस्त्र विद्या के लगभग हर क्षेत्र में उसका दखल था !
घुड़सवारी और अन्य कलाओं में भी वह निपुण था !

उसकी कुशलता को देखकर राजा वीरेंद्र और रानी मंजरी दोनों प्रसन्न हुआ करते थे क्योंकि अब उनके लिए वही उम्मीद की आखिरी किरण था !

आचार्य के असामयिक देहावसान की वजह से उसकी शिक्षा दीक्षा में व्यवधान उत्पन्न हुआ था लेकिन वह कमी मालिनी और मंजरी ने पूरी कर दी थी ।

जो कमी रह जाती वह राजा वीरेंद्र स्वयं बालक राजेंद्र को सिखाकर पूरी कर रहे थे ।

कुल मिलाकर राजकुमार राजेंद्र एक प्रतिभाशाली राजा बनने की दिशा में निरंतर अग्रसर था ।

विष कन्या पद्मिनी का समाचार मिलना बंद हो जाने से रानी पद्मावती को समझ में आ गया था कि पद्मिनी के साथ कुछ ऐसा घटित हो चुका है, जिसकी वजह से वह जवाब नहीं दे पा रही है .।
उसने अपने गुप्तचरों  के माध्यम से पद्मिनी के विषय में पता करने का प्रयास किया लेकिन राजमहल की कड़ी सुरक्षा को भेदकर वह अंदर नहीं पहुंच पाए और पद्मिनी के विषय में कोई भी समाचार रानी पद्मावती तक नहीं पहुंच पाया ।
यह स्थिति पद्मावती के लिए थोड़ी सी परेशानी से भरी हुई थी क्योंकि उसका ब्रह्मास्त्र अब उसके पास नहीं था ।
कापालिक मुंडेश्वर, राजा बिरेंद्र के परिवार के लोगों की धीरे धीरे मृत्यु प्रदान करने के लिए राजी हो गया था ।
इसलिए अब पद्मावती का अगला सहारा कापालिक मुंडेश्वर ही था, जिसके माध्यम से वह राजा वीरेंद्र के

परिवार को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो सकती थी ।

उसने अनंत देव को कापालिक मुंडेश्वर के पास भेज दिया । अनंत देव जब कापालिक मुंडेश्वर के पास पहुंचा तो उसने एक महिष अर्थात भैंसा और सौ स्वर्ण मुद्राओं की मांग की जिसे सुनकर अनंत देव एक बार सकते में आ गया, क्योंकि भैंस तो एक स्वर्ण मुद्रा में ही आ जाती लेकिन सौ स्वर्ण मुद्राएं देने के विषय में सोच कर उसे थोड़ा सा तनाव हो गया ।

हामी भर के वह वापस आ गया ।

उसी शाम को उसने एक भैंसे की व्यवस्था भी कर दी ।

मुंडेश्वर ने मारण प्रयोग की पूरी प्रक्रिया प्रारंभ कर दी । सबसे पहले उसने रानी मंजरी के ऊपर आघात करने का विचार बनाया क्योंकि राजा वीरेंद्र से ज्यादा चतुर और युद्ध कला में निपुण होने के साथ-साथ मंजरी राज्य के जटिलतम मामलों में भी बेहद गहरी पकड़ रखती थी और उसका समाप्त होना राज्य के लिए एक कमजोरी के रूप में सामने आता । उसके बाद राजा वीरेंद्र पर प्रहार करना आसान हो जाता ।

वैसे भी कहा जाता है कि तंत्र प्रयोग राज सिंहासन पर बैठे हुए लोगों के ऊपर जल्दी असर नहीं करते इसलिए मुंडेश्वर ने उनके आसपास के लोगों को पहले निशाना बनाने का निश्चय किया ।

वह एक अमावस्या की रात थी ।
शाम के लगभग 7 बजे थे, जब मुंडेश्वर ने सारी सामग्रियों का संकलन करना प्रारंभ कर दिया और अपनी आराध्या भद्रकाली की विशालकाय मूर्ति के पास भैंसे को भी बांध दिया । मुंडेश्वर के सहयोगीयों ने विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों का ढेर यज्ञ कुंड के बाजू में लगा रखा था ।

तंत्र प्रयोगों में तीन चीजों का महत्व रहता है पहला होता है मंत्र अर्थात जिस मंत्र के माध्यम से प्रयोग संपन्न किया जाएगा या संबंधित देवता को प्रसन्न किया जाएगा ।
दूसरा होता है सहायक सामग्री जैसे औषधि, रत्न, विग्रह या यंत्र जिसके माध्यम से मंत्र ज्यादा शक्तिशाली होकर अपना प्रभाव दिखाते हैं । तथा
तीसरा होता है तंत्र किया ! वह प्रक्रिया जिसके द्वारा इस पूरे प्रक्रम को अंजाम तक पहुंचाया जाता है ।

यह तीनों एक दूसरे के सहयोगी है और जब तीनों का सही संतुलन और संयोजन होता है तो वह प्रक्रिया पूर्णता तक पहुंचती है और सफल होती है जिसके बाद अभीष्ट या इच्छित कार्य सिद्ध होता है ।

यज्ञ कुंड के चारों तरफ चार अघोरी बैठे हुए थे । जो वहां रखी हुई औषधि के ढेर में से कुछ औषधि लेकर कापालिक मुंडेश्वर के  प्रत्येक मंत्र के साथ हवन कुंड में आहुतियां डाल रहे थे । जिस तरफ यज्ञ कुंड का मूल द्वार बना हुआ था उस तरफ कापालिक मुंडेश्वर ने अनंत देव को बिठाया हुआ था ।
वह प्रमुख यजमान था ।

मारण प्रयोगों के साथ एक विशेषता यह होती है कि जिस व्यक्ति के ऊपर मारण प्रयोग किया गया है, वह शक्तिशाली हो या उसके आसपास कोई ऐसा व्यक्ति हो जो साधनात्मक रूप से अत्यंत प्रबल हो तो किसी भी प्रकार के मारण प्रयोग को वह वापस लौटा सकता है ! ऐसी परिस्थिति में मारण प्रयोग की क्षमता बढ़ जाती है और वह मारण प्रयोग करने वाले व्यक्ति के ऊपर दुगनी

तीव्रता से प्रहार करता है । जिसमें कई बार उसकी मृत्यु भी हो जाती है ।

जो होशियार साधक होते हैं, वह मारण प्रयोग कराने वाले व्यक्ति को यजमान बनाकर इस प्रकार के अनुष्ठान करते हैं ! ताकि ऐसी किसी प्रकार की तांत्रिक प्रक्रिया की वापसी की स्थिति में वह सुरक्षित रहे और प्रयोग कराने वाला उस प्रहार को झेल कर समाप्त हो जाए ।

कापालिक मुंडेश्वर जानता था कि महेंद्रगढ़ राज्य के अंदर विशिष्ट तांत्रिक शक्तियां और साधक विराजमान है। यदि किसी भी परिस्थिति में उनमें से कोई कापालिक मुंडेश्वर के प्रयोग को जान जाता तो वह उस प्रयोग को निश्चित रूप से वापस कर देता और ऐसी परिस्थिति में मुंडेश्वर के प्राण संकट में आ जाते ! जिससे बचने के लिए उसने अनंत देव को यजमान के रूप में प्रतिष्ठित किया हुआ था ।

मंत्र जाप चल रहा था और उन औषधियों के कुंड में डाले जाने की वजह से वातावरण में एक अजीब सी कड़वी गंध फैली हुई थी.....

कुछ-कुछ नीम के पत्तों को आग में डालने पर जिस प्रकार की घुटन भर देने वाली कड़वी सी खुशबू आती है , ठीक वैसी ही !!

मंत्र जाप अपने क्रम में चल रहा था .....
साथ ही आहुतियों का क्रम भी जारी था !

कापालिक मुंडेश्वर के आसन के सामने एक नरमुंड भी रखा हुआ था जो इस मारण प्रयोग में काम आने वाला था ।

रात के लगभग 11 बजे का समय हो चुका था ।

कापालिक मुंडेश्वर ने सभी सहयोगियों को वहां से चले जाने के लिए कहा ।

मंत्र जाप का एक क्रम पूरा हो चुका था ।

अब दूसरा गोपनीय क्रम था जिसे कापालिक मुंडेश्वर अकेले में करना चाहता था ।

उसने भैंसे को बलियूथ पर बांध दिया और उसके दाहिनी तरफ लगे हुए आसन में राजकुमार अनंत देव को बैठा दिया .....

लगभग यही वह समय था जब महेंद्रगढ़ राजमहल मे राजा वीरेंद्र के कक्ष में एक धुंधली आकृति बिंब के रूप में प्रकट होने लगी !

उस समय तक राजा वीरेंद्र निद्रा की अवस्था में जा चुके थे लेकिन मंजरी अभी भी जगी हुई थी !

उस धुंधली आकृति को स्पष्ट होता देखकर मंजरी ने राजा वीरेंद्र को झिंझोड़ा ।

वह भी उठकर बैठ गए !
रानी मंजरी ने उस बिम्ब की ओर इशारा किया !
राजा वीरेंद्र ने भी देखा कि एक धुंधली सी आकृति कमरे में प्रकट हो रही है..
धीरे-धीरे उस धुंध ने स्वरूप लेना प्रारंभ कर दिया ।

अद्भुत आश्चर्य !

यह तो आचार्य विद्यानंद शास्त्री का बिंब था !!
दोनों पति-पत्नी ने आचार्य को झुककर प्रणाम किया ।

आचार्य की गुरु गंभीर वाणी गूंजी - रानी पद्मावती की कुटिल चालों से सावधान रहना । वह अभी भी प्रयत्न कर रही है कि किसी भी प्रकार से इस राज्य में संकट की स्थिति पैदा कर सके । उसी के द्वारा भेजी गई विषकन्या थी पद्मिनी ! जिसकी वजह से पहले राजमाता और फिर राजकुमार देवेंद्र की मृत्यु हुई । अब फिर से राज्य पर गंभीर संकट आने वाला है ।
पहला प्रहार !!!
मंजरी ! तुम्हारे ऊपर होने वाला है । यह अत्यंत प्राण घातक प्रहार होगा । इससे बचने के लिए तुम्हें गजेंद्र की सहायता लेनी पड़ेगी, क्योंकि वही एकमात्र ऐसा सिद्ध पुरुष है जो इस मारण प्रयोग को लौटा सकता है ।
उससे कह कर राजमहल की सुरक्षा के लिए विशेष तांत्रिक रक्षा कवच का निर्माण करवाओ ।
बालक राजेंद्र की शिक्षा दीक्षा तो बहुत अच्छी तरह से हो गई है लेकिन उसे भी इस प्रकार के प्रयोग से सुरक्षित रहना जरूरी है । इसके लिए मैं तुम्हें एक मंत्र बता रहा

हूं, बालक राजेंद्र को इस मंत्र का रोज एक पहर तक जाप करने के लिए निर्देश करो ।

आज अमावस्या है । कल से शुक्ल पक्ष प्रारंभ हो जाएगा । कल से प्रारंभ करके उसे पूर्णिमा तक इस अनुष्ठान को पूरा करना है ,और उसके बाद नित्य इस मंत्र का जाप उसे करते रहना है, ताकि जीवन भर उसे सुरक्षा मिल सके ।

मन्त्र बताकर आचार्य का बिम्ब वहां से लुप्त हो गया ।।

आचार्य की बातों को सुनकर राजा वीरेंद्र और रानी मंजरी के माथे पर बल पड़ गए ।
उन्हें समझ नहीं आया कि गजेन्द्र जैसा नन्हा बालक किस प्रकार से रानी मंजरी की रक्षा करेगा ?
लेकिन क्योंकि यह बात आचार्य विद्यानंद शास्त्री की आत्मा ने कही थी इसलिए उस पर अविश्वास करने का कोई प्रश्न ही नहीं था ।
अतः दोनों तत्काल उठकर बालक गजेंद्र के कक्ष की ओर चल पड़े .....

गजेंद्र के कक्ष में पहुंचने पर उन्होंने देखा कि बालक गजेंद्र अपने बिस्तर पर पद्मासन की मुद्रा में बैठा हुआ है ।

उनके कमरे में प्रवेश करते ही बालक गजेंद्र ने अपनी आंखें खोली और पूछा - क्या हुआ ? आप लोग इतनी रात को मेरे कक्ष में ? कोई समस्या तो नहीं है ?

मंजरी ने सारी बात कह सुनाई ।
आचार्य विद्यानंद शास्त्री के बिम्ब का आगमन और मारण प्रयोग किए जाने की बात साथ ही उससे बचाव के लिए बालक गजेंद्र को निर्देशित करने की बात ....

सारी बात सुनने के बाद बालक गजेंद्र ने अपनी आंखें मूंद ली और ध्यानस्थ अवस्था में चला गया । दो मिनट के बाद जब उसने आंखें खोली तो वह सारी परिस्थितियों से अवगत हो चुका था ।

उसने राजा वीरेंद्र और रानी मंजरी को उसी कक्ष में रहने के लिए कहा और उनको अपने बिस्तर पर सुला दिया ।

इसके पश्चात उसने शून्य में हाथ लहराया और उसके हाथों में भस्म आ गई ।
राजा वीरेंद्र और रानी मंजरी पुत्र गजेंद्र के द्वारा किए जाने वाले चमत्कारिक कृत्य को देखकर विस्मय ! आश्चर्य और भय के संयुक्त भाव से बैठे हुए थे ।

उस भस्म को गजेंद्र अर्थात कापालिक चंडेश्वर की सिद्ध आत्मा ने पलंग के चारों तरफ घेरा बनाकर डाल दिया ।

इतना करने के बाद उसने कुछ विशिष्ट मंत्रों का उच्चारण किया और राजा वीरेंद्र और महारानी मंजरी को निद्रा आने लगी । वे चाहकर भी अपने आप को रोक नहीं पाये और सो गए ।

गजेंद्र जानता था कि आने वाला संकट थोड़ा जटिल है !

वह उस प्रहार को झेलने के लिए तैयार हो गया ।
उसने कुछ विशिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपनी कापालिक शक्तियों को जागृत करना प्रारंभ कर दिया ।

कपाल भैरव को विशिष्ट मंत्रों के द्वारा आवाहित करके उनसे दोनों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की और स्वयं कक्ष से बाहर निकल गया ।

शिव मंदिर के पास पहुंचकर वह अपनी ध्यानस्थ अवस्था में बैठ गया और कुछ ही देर में उसका आसन हवा में उठने लगा और वह आसमान में राजमहल से भी काफी ऊंचाई पर पहुंच गया । वहां से उसके दृष्टि क्षेत्र में पूरा राजमहल था ।

उधर कापालिक मुंडेश्वर ने अपनी प्रक्रिया प्रारंभ कर दी थी !

मंत्र जाप का उसका क्रम चालू था ....

उसने राजकुमार अनंत देव को बताया - एक विशेष समय पर मंत्रों का उच्चारण करते हुए इस महिष अर्थात भैंसे की बलि प्रदान की जाएगी
जिसके बाद भैरव का स्वरूप जागृत होगा !!
उसके बाद मारण प्रयोग का प्रारंभ होगा।

इसमे इस नरमुंड को माध्यम बनाकर मारण प्रयोग होगा । जैसे ही यह नरमुंड जागृत होगा उसे लक्ष्य बता कर उसकी समाप्ति के लिए भेजा जाएगा उससे पहले तुम्हें अपनी अनामिका उंगली में चीरा लगाकर खून की बूंदे अर्पित करनी पड़ेगी । इस बात का ध्यान रखना !
मैं तुम्हें इसके लिए संकेत दूंगा ।

अनंत देव ने सहमति में सिर हिलाया ।
कापालिक मुंडेश्वर ने अपनी तांत्रिक प्रक्रिया प्रारंभ कर दी ।
औषधियों का ढेर लगभग समाप्त हो चुका था, करीब उसका दसवां हिस्सा बचा हुआ था ।
कापालिक मुंडेश्वर ने उसे दो भागों में बांट दिया और एक हिस्सा अनंत देव की ओर बढ़ा दिया ।
इसके बाद वह स्थान कापालिक मुंडेश्वर के मंत्रों की ध्वनि से गुंजरित होने लगा ।

बादलों की गड़गड़ाहट जैसी उसकी मंत्र जाप की ध्वनि और अंत में जब फटकार के साथ स्वाहा का उच्चारण करता तो ऐसा लगता था जैसे कोई बिजली सी कड़क गई हो .....

उस उच्चारण के साथ औषधियों की आहुती जैसे ही यज्ञ कुंड में पडती !
अग्नि भभकने लगती थी ....

उसके साथ  साथ वातावरण में अजीब सी गंध भी बढ़ती चली जाती थी जिससे वहां के वातावरण में भारीपन आता जा रहा था ।
यह क्रम लगभग आधा पौन घंटे तक चलता रहा ।

अर्ध रात्रि का समय करीब आने को था !
वह समय जब इस प्रकार के प्रयोगों को अंजाम तक पहुंचाया जाता है !
देवी की मूर्ति में तेजस्विता बढ़ती जा रही थी ....
तभी !

कापालिक मुंडेश्वर अपने आसन से उठ खड़ा हुआ ।
उसने मूर्ति के बगल मे रखा हुआ बलि अस्त्र उठाया ।
उस खड़ग को लेकर वह आगे बढ़ा और बली मंत्रों का उच्चारण करते हुए महिष की गर्दन पर प्रहार कर दिया ।

एक ही प्रहार में महिष का मुंड कटकर प्रतिमा के चरणों में जा गिरा और गिरते हुए रक्त की बुंदे भैरव चरणों में बहती हुई जाने लगी ।
उस गिरते हुए रक्त में से एक पात्र में कापालिक मुंडेश्वर ने रक्त को एकत्र किया और उसे भैरव चरणों में समर्पित किया ।
दूसरा पात्र भरने के बाद वह उसे लेकर यज्ञ कुंड की ओर बढ़ने लगा !

वहां पहुंचने के बाद उसने फिर से संहारक मंत्रों का उच्चारण करते हुए रक्त की आहुतियां देना प्रारंभ कर दिया । जैसे ही रक्त की 108 आहुतियां संपूर्ण हुई ।
यज्ञ कुंड के भीतर से एक धुएं का गोला !
काले रंग का !!
उभर कर सामने आने लगा !!!
जो धीरे-धीरे मानव आकृति लेता जा रहा था ।

कुछ क्षणों में वहां साक्षात भैरव प्रकट हो गये ।
गंभीर ध्वनि गूंजी - मुंडेश्वर क्यों अपनी मृत्यु को निमंत्रण दे रहा है ?

तू जानता है कि वहां पर कौन बैठा है । फिर ऐसा प्रयास क्यों ?

कापालिक कुंडेश्वर बोला - वचनबद्ध हूं प्रभु ! मेरे पास कोई मार्ग नहीं है ।

भैरव बाबा ने कहा - ठीक है ! तो प्रयास करके देख ले ! लेकिन परिणाम तू जानता है ।

कपालिक मुंडेश्वर ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और भैरव नाथ का बिम्ब वापस उसी यज्ञ कुंड में समाहित हो गया !
उसके कुछ क्षण के बाद यज्ञ कुंड में से एक नीले रंग की प्रकाश किरण निकली जो कापालिक मुंडेश्वर के सामने रखे हुए नरमुंड के अंदर प्रवेश कर गई ।
जैसे ही वह किरण मुंड के अंदर प्रवेश कर गई उसकी आंखें नीले रंग में जगमगाने लगी । अर्थात अब वह अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए तैयार थी ।

अनंत देव इन सारे दृश्यों को देखकर कुछ भय कुछ अविश्वास के साथ अपने आसन पर बैठा हुआ था ।

कापालिक मुंडेश्वर ने अपने सामने रखे हुए नरमुंड को अपने दाहिने हाथ में उठाया और अनंत देव की ओर इशारा किया !

अनंत देव ने तुरंत अपनी अनामिका उंगली को अपने पास रखे हुए चाकू से चीरा और रक्त की बूंदे नरमुंड के मुख में डाल दी ....

जैसे ही रक्त की बूंदे उस नरमुंड के मुख में गिरी !
उसने चटकारा सा भरा !!
ऐसा लगा जैसे वह तृप्त हो गया !!
इसके बाद कापालिक मुंडेश्वर ने कुछ और मंत्रों का उच्चारण किया नरमुंड के समक्ष अभीष्ट बताया और वह नरमुंड हवा में उछल गया !

नरमुंड को लक्ष्य प्राप्त हो चुका था और वह अपने लक्ष्य को भेदने के लिए उस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा था !

उसका लक्ष्य था महेंद्रगढ़ का राजमहल ... और उस राजमहल में स्थित रानी मंजरी ।

राज महल के ऊपर हवा में आसन लगाकर बैठा हुआ था, बालक गजेंद्र !!
चारों दिशाओं में देखता हुआ ....
किसी भी संभावित आक्रमण की प्रतीक्षा में ....
तभी उसे वह नरमुंड अपनी ओर आता हुआ दिखाई दिया .....

जैसे ही वह नरमुंड राजमहल के समीप पहुंचा गजेंद्र ने अपना हाथ हवा में लहराया और उसके हाथ में एक काले रंग का बजरबट्टू आ गया ।

उस बजरबट्टू को हथेली पर रखकर कापालिक चंडेश्वर अर्थात बालक गजेंद्र ने कुछ मंत्र पढ़ा और उसे नरमुंड की ओर उछाल दिया !

जैसे ही बजरबट्टू सन सन करता हुआ नरमुंड से जाकर टकराया ! नरमुंड ने अपनी दिशा बदल दी और वह वापस लौट गया ।
अब वह दुगनी तीव्रता के साथ प्रयोग कर्ता की ओर जा रहा था ।

इस प्रहार को झेलने के लिए जिस प्रकार की तांत्रिक क्षमता चाहिए थी वह कापालिक मुंडेश्वर के पास नहीं थी क्योंकि प्रयोग को वापस लौटाने वाला ! अत्यंत उच्च कोटि का सिद्ध साधक ! कापालिक चंडेश्वर था ! जो अभी बालक गजेंद्र के रूप में विद्यमान था ।

वह नरमुंड तेजी से वापस प्रयोग स्थल में पहुंच चुका था और वहां पहुंचकर वह सीधा अनंत देव के सर के ऊपर घूमने लगा ।

कापालिक मुंडेश्वर ने अपनी तरफ से उसे शांत करने का प्रयास किया ....
लेकिन विफल रहा !
लगभग 1 मिनट अनंत देव के सिर के ऊपर घूमने के बाद वह नरमुंड एक विस्फोट के साथ टुकड़े टुकड़े हो गया !

उसी के साथ अनंत देव के सर के भी टुकड़े हो गए !
उसका धड़ उसी आसन पर बैठा हुआ था जहां पर वह पहले बैठा था ....
उसके सिर के इतने टुकड़े हो चुके थे कि गर्दन के ऊपर कुछ भी बाकी नहीं बचा था !!!

उस मुंड का एक टुकड़ा जाकर कापालिक मुंडेश्वर के कण्ठ स्थल में भी टकराया और वहां से खून की धारा बहने लगी !

इस आघात से मुंडेश्वर भी अपने आसन पर गिरकर बेहोश हो चुका था !

इस प्रकार से मुंडेश्वर की कपाल लीला समाप्त हो गई !

कंठ स्थल में लगी हुई चोट के कारण कापालिक मुंडेश्वर मंत्र उच्चारण करने के लिए अयोग्य हो गया क्योंकि उसका स्वर तंत्र नष्ट हो गया और उसके मुख से ध्वनि का उच्चारण अब संभव नहीं था !
अर्थात वह गूंगा हो चुका था !!

रानी पद्मावती को अगले दिन अनंत देव की मृत्यु का समाचार मिला ।
तब तक कापालिकों  का पूरा समूह वहां से लापता हो चुका था !
उन्हें पता था कि किसी भी तरह से अगर रानी पद्मावती के सैनिकों के हाथ लग गए तो जीवित बचना

नामुमकिन है क्योंकि उनके राजकुमार की अकाल मृत्यु घटित हो चुकी थी !

राजकुमार अनंत देव की सर विहीन लाश को देख रानी पद्मावती का मानसिक संतुलन बिगड़ गया और वह विक्षिप्त सी हो गई । इस हृदय विदारक घटना से महेंद्रगढ़ के शत्रु वर्ग का लगभग समूल नाश हो गया था ।

अगले दिन रानी मंजरी ने राजकुमार राजेंद्र को वह मंत्र बताया जो आचार्य ने उन्हें दिया था तथा उसकी साधना करने के लिए कहा।

साथ ही कापालिक चंडेश्वर अर्थात राजकुमार गजेंद्र से राज्य की रक्षा के लिए कुछ विशेष प्रकार के बंधन करने का भी अनुरोध किया । जिसे सुनकर कापालिक चंडेश्वर अर्थात बालक राजकुमार गजेंद्र ने इसके लिए कुछ विशेष प्रकार की वस्तुओं की जरूरत बताई ।

जिनमें से एक था 13 तोला स्वर्ण और दूसरा था 130 तोला पारद । इसके अलावा कई प्रकार की औषधियां भी उसने एक सूची बना कर दे दी जिससे वह उस विशेष प्रकार के बंधन को करने वाला था ।

उसने मंजरी से कहा - माता ! मेरे जाने का समय हो गया है । आपके आदेशानुसार यह विशेष रक्षा वाला प्रयोग मैं संपन्न करने जा रहा हूं । राजमहल मेरा निवास नहीं है मैं तो रमता जोगी हूं । इसलिए मुझे जाने की आज्ञा दीजिए । हां मैं बीच बीच में आता जाता रहूंगा लेकिन यह राज्य और राजकाज मेरा कार्य क्षेत्र नहीं है ।

मंजरी ने कहा - राजेन्द्र तुम्हारा छोटा भाई है ! उसकी आवश्यकता तथा समस्या के समय तुम उसकी मदद करोगे ! यह मैं तुमसे माँ होने के नाते अपेक्षा करती हूं ।

जिस पर बालक गजेंद्र ने कहा - आप निश्चिंत रहें मैं इन सामग्रियों के माध्यम से एक विशेष प्रकार का तांत्रिक अग्निलिंग तैयार करुंगा और उसे राज महल के सबसे ऊँचे गुंबद पर स्थापित करुँगा । जब तक वह अग्निलिंग सुरक्षित रहेगा तब तक वह इस राज्य की भी सुरक्षा करता रहेगा । इस राज्य की सीमा में किसी भी प्रकार का तंत्र या पारलौकिक बाधा नष्ट हो जाएगी और किसी भी प्रकार के प्रयोग को करने वाला

व्यक्ति आसन्न मृत्यु का सामना करने के लिए विवश हो जाएगा ।

उसने आगे कहा - माता ! आप निश्चिंत रहें कभी भी संकट के समय राजेंद्र मुझे याद करेगा तो मैं यथासंभव उसकी सहायता करने की कोशिश अवश्य करूंगा ।

बालक गजेंद्र के चमत्कार को देख चुके राजा वीरेंद्र तथा रानी मंजरी दोनों यह बात सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए । उन्होंने बालक गजेंद्र को गले से लगा लिया और उसे जाने की अनुमति दे दी ।

विशेष अग्नि लिंग का निर्माण करने के लिए अगले दिन 13 तोला सोना और 130 तोला पारद की व्यवस्था कर दी गई । साथ ही कापालिक चंडेश्वर के द्वारा मांगे गए अन्य औषधियाँ , उपकरण तथा पात्र भी उपलब्ध करा दिए गए उसको मदद करने के लिए कुछ सेवकों को भी निर्देश दे दिया गया।

इन सारी चीजों को लेकर गजेंद्र महल के एक कक्ष में चला गया जो पूर्व दिशा में खुलता था और सूर्य की किरणें सीधे उसी कक्ष में प्रवेश करती थी । सूर्योदय

से लेकर लगभग दोपहर के समय तक और उसके बाद शाम के समय भी सूर्य की किरणें उस कक्ष में आती थी ।

अग्नि का मूल स्रोत सूर्य माना जाता है , इसलिए इस प्रकार के अग्नि लिंग के निर्माण के लिए सूर्य की किरणों का प्रयोग पारे की विशेष संस्कार की प्रक्रियाओं में अनिवार्य था । इसलिए कापालिक चंडेश्वर ने वह कक्ष चुना जहां पर सूर्य की किरणें प्रचुरता में आती थीं ।
उसके साथ तीन सेवक भी थे ।

एक विशेष यंत्र में डालकर पारे को कुछ जड़ी बूटियों के रस के साथ अग्नि पर रख दिया गया था । वह यंत्र ऐसा था जो अपने आप हिलता रहता था जिससे अंदर की सामग्री को चम्मच या किसी और चीज से हिलाने की जरूरत नहीं पड़ती थी । इस प्रकार से सारी सामग्री एक तापमान में रहती थी ।
ब्रह्म मुहूर्त में रोज जड़ी बूटियों का रस उस पात्र में एक निर्धारित मात्रा में मिलाया जाता था । उसके बाद वह

पारा दिन भर उस रस में हल्की आंच पर गर्म होता रहता था ।

दोपहर के समय जब सूरज सर की सीध में ऊपर होता था तो उस समय एक रत्ती के आकार का हीरा उस रस में डाल दिया जाता था ऐसा नित्य किया जाता था ।

तेरह दिन के बाद वह सारी जड़ी बूटियां धीरे धीरे उस पारे में समाहित होती चली गई !और पारे तथा जड़ी बूटियों से बने हुए उस मिश्रण का रंग गहरा हरा ! काई के जैसा हो गया ।

एक दूसरे यंत्र में स्वर्ण को भी कुछ औषधियों के साथ रखा गया था और बालक गजेंद्र अपने पास मौजूद एक लेंस के समान गोल पारदर्शी किस्म के रत्न की सहायता से सूर्य की किरणों को कुछ विशेष अंश में उस स्वर्ण के ऊपर हर रोज लगभग 3 घंटे तक प्रवाहित करता था ।

जैसे जैसे सूर्य की किरण उस पारदर्शी रत्न से गुजरती हुई स्वर्ण पर पड़ती थी तो स्वर्ण धीरे धीरे पिघल कर पीले रंग के द्रव में बदलता जाता था ।

नित्य प्रति लगभग 1 तोला स्वर्ण इसी प्रकार से पिघलाकर उसमें तीन बूंद नाग सांप का विष मिलाया

जाता था उसके बाद उस पिघले सोने को हटा कर एक अलग मर्तबान में गहरे पीले रंग के गाढे द्रव में रख दिया जाता था । जो संभवतः किसी विशेष प्रकार की औषधि से बना हुआ था । जिसमे वह सोना द्रव अवस्था में ही रहता।

तेरहवाँ दिन होते होते पूरा 13 तोला सोना पिघल कर सुनहरे रंग के द्रव में बदल चुका था । जो 13 मर्तबान में रख दिया गया था । सबसे अजीब बात यह थी कि वह सुनहरा द्रव उस पीली औषधि के ऊपर तैरता रहता था और उस औषधि को धीरे धीरे अपने अंदर समाहित करता जाता था और लगभग 24 घंटे में उस वर्तमान में केवल सुनहरे रंग का वह पिघला सोने जैसा द्रव ही बाकी बचता था पीले रंग की औषधि पूरी तरह से उसके अंदर समा जाती थी ।

इस प्रकार से 13 दिन गुजर चुके थे !

चौदहवें दिन पूर्णिमा की तिथि थी !!

उस दिन ब्रह्म मुहूर्त से ही कापालिक चंडेश्वर ने अनेक विशेष औषधियों को हवन के लिए मंगा कर रखा हुआ था ।

सामने एक पात्र में पारे का काई जैसा मिश्रण था और दूसरे पात्र में पिघले हुए सोने का सुनहरा मिश्रण था ।

उन दोनों पात्रों को सामने रखकर उसने कई प्रकार की गोपनीय प्रक्रिया उसके ऊपर संपन्न की और विभिन्न प्रकार के मंत्रों का प्रयोग करते हुए उस पूरे द्रव को मंत्र सिद्ध कर दिया ।

इस सारी प्रक्रिया में लगभग 14 दिन का समय लगा और अगली पूर्णिमा तिथि आ चुकी थी ।
यह वह विशिष्ट रात्रि थी जब इस पूरी प्रक्रिया को पूर्णत्व प्रदान किया जाना था क्योंकि पूर्णिमा को पूर्णता की तिथि माना जाता है ।

पूर्णिमा की रात्रि को कापालिक चंडेश्वर ने सुनहरे द्रव और पारे के हरे मिश्रण को दो पात्रों में ले लिया और स्वयं राजमहल की छत पर पहुंच गया ।

उसने सारे सेवकों को वहां से चले जाने के लिए कहा और एकांत होते ही दोनों द्रवों को मिला दिया ।

जैसे ही दोनों द्रव आपस में मिले ....

गहरे काले रंग का धुआँ उसमें से निकलने लगा ।

**जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था कि पारा एक बेहद जहरीली धातु है । उसके संस्कार और प्रयोगों को किसी जानकार आदमी के सानिध्य तथा मार्गदर्शन में ही करना चाहिए अन्यथा आंखों की रोशनी जा सकती है या स्वयं मृत्यु भी आपको प्राप्त हो सकती है । इसलिए कभी भी पारे का शोधन या संस्कार अपने मन से नहीं करना चाहिए । यह बेहद विचित्र धातु है साथ ही बेहद प्राणघातक भी ! इसलिए हमेशा इस के प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए ।**

चंडेश्वर अत्यंत उच्च कोटि का सिद्ध पुरुष था !
उसको इस सारी प्रक्रिया की जानकारी थी।
इसलिए उसने सारे सेवकों को वहां से हटा दिया था
ताकि किसी को उसका दुष्प्रभाव न झेलना पड़े ।
दोनों प्रकार के द्रव को मिलाने के तत्काल बाद वह दूर जाकर खड़ा हो गया था ।

काले रंग का धुआ लगभग तीन चार मिनट तक निकलता रहा....

यह धुआं अत्यंत विषैला था और इसकी अल्प मात्रा भी अगर शरीर के अंदर चली जाए तो वह फेफड़ों को नुकसान पहुंचा सकती थी ।

जब काले धुएं की मात्रा कम होने लगी तब कापालि कचंडेश्वर ने एक पीले रंग की अमरबेल जैसी जड़ी को उस पात्र में डाल दिया । जड़ी डालने के बाद पुनः वह दूर जाकर खड़ा हो गया तथा रासायनिक क्रिया का इंतजार करने लगा ।
उसके बाद काले की जगह सफेद रंग का धुआं निकलने लगा !
लगभग 10 मिनट के बाद वह सफेद धुआँ भी धीरे-धीरे शांत हो गया ।

जब धुआँ निकलना पूरी तरह से बंद हो गया तो चंडेश्वर ने उस पात्र में धीरे धीरे किसी विशेष प्रकार के तेल की धार देना प्रारंभ कर दिया जो गहरे लाल रंग का था ।

जब वह पात्र लगभग आधा तेल से भर गया तो उसने तेल डालना बंद किया ।

थोड़ी देर में वह पूरी की पूरी सामग्री !
जो अब चमकदार सुनहरे रंग की हो चुकी थी !
वह धीरे-धीरे ठोस होने लगी और उस तेल के ऊपर तैरने लगी !
उसका आकार किसी शिवलिंग के जैसा हो चुका था !
जिसे निकाल कर कपालीक चंडेश्वर ने अपने हाथों में रख लिया और अघोरेश्वर महादेव के गोपनीय मंत्रों का उच्चारण करते हुए उसे शिवलिंग जैसा आकार दे दिया !

अभी भी वह पूरा पदार्थ हलका नरम था !

उसे कापालिक चंडेश्वर ने एक अन्य पात्र रख दिया और उसे पानी से भर दिया । थोड़े ही समय में पानी उबलने लगा ऐसा लग रहा था जैसे उस शिवलिंग के अंदर से गर्मी निकल रही हो जो उस पानी को भाप में परिवर्तित कर रही थी। लगभग 15 मिनट में पात्र का पूरा पानी भाप बनकर उड़ गया !

अब उसमें केवल वह शिवलिंग बचा हुआ था जो धीरे-धीरे वह कठोर होने लगा ..
ऐसा उसने लगभग तीन चार बार किया ..
तब तक वह शिवलिंग पत्थर जैसा कठोर हो चुका था ।
लगभग एक घंटे के बाद वह सुनहरे रंग के दमकते हुए पूर्ण शिवलिंग के रूप में आ चुका था ।

जिसे कापालिक चंडेश्वर ने अपने हाथ में उठा लिया और उसे लेकर राजमहल के गुंबद पर चढ़ गया ।

वहां पहुंचने के बाद उसने शून्य में हाथ फैला कर एक खप्पर प्राप्त किया और उस खप्पर के ऊपर इस शिवलिंग को स्थापित कर दिया ।

दिलचस्प बात यह थी कि गुंबद के ऊपर वह खप्पर हवा में रखा हुआ था अर्थात वह गुम्बद से थोड़ा ऊपर हवा मे स्थित था !
उसके ऊपर रखा हुआ यह शिवलिंग भी उसी प्रकार से हवा में रखा हुआ था ।
विभिन्न प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करते हुए उस शिवलिंग को स्थापित किया .....

जिसे अग्नि लिंग कहना ज्यादा उचित होगा .....
क्योंकि उसमें से उसी प्रकार की किरणे निकल रही थी
जिस प्रकार से अग्नि में से निकलती है !
सुर्ख लाल पीले रंग की .....

उस अग्नि लिंग को हवा में स्थापित कर देने के बाद
कापालिक चंडेश्वर ने पुनः अपने उस पारदर्शी रत्न के
माध्यम से चंद्रमा की किरणों को केंद्रित करके उस
अग्नि लिंग में डालना प्रारंभ कर दिया !
जिसके बाद उसकी चमक धीरे-धीरे बढ़ने लगी ....
लगभग आधे घंटे के बाद वह किसी जलते हुए
अग्निपिंड के समान दिखाई दे रहा था .....
जिस प्रकार सूर्य से गर्मी के मौसम में जितनी लाल
पीले नारंगी किस्म की किरणें निकलती हुई दिखाई देती
है ठीक वैसा ही आभास उसे देखने पर होता था !

लेकिन .....
एक खास बात थी कि उसके पास किसी प्रकार की
गर्मी का एहसास नहीं हो रहा था !

बल्कि.....

बिल्कुल शीतल .....

पूर्णिमा के चंद्रमा की किरणों की तरह शीतलता का आभास हो रहा था !

ऐसा लग रहा था जैसे चंद्रमा की शीतल किरणों के साए में बैठे हुए हो !

वैसा ही अद्भुत ! अमृततुल्य ! शांत ! मृदुल ! सुखद ! एहसास....

वह उसी प्रकार गुंबद पर बैठा रहा ।

उस अग्नि लिंग को पूर्णता प्रदान करने के लिए उसे प्रातः कालीन सूर्य से निकलने वाली रश्मियों की प्रतीक्षा थी !

अतः वह उसी प्रकार सूर्योदय की प्रतीक्षा करता हुआ वहीं बैठा रहा.....

जब प्रातः कालीन सूर्य की किरणें निकलने लगी तो उन किरणों को भी उसने उस पारदर्शी रत्न के माध्यम से उस अग्नि लिंग के ऊपर डालना प्रारंभ कर दिया !

जैसे जैसे सूर्य की किरणें लिंग पर पड रही थी !

उस की चमक बढ़ती जा रही थी !

लगभग आधे घंटे के बाद उसकी चमक घटनी प्रारंभ हो गई और धीरे धीरे वह सफेद रंग का हो गया ठीक वैसा ही जैसा रात में चंद्रमा दिखाई देता है .....

लगभग एक घंटे तक सूर्य किरणों को उस अग्नि लिंग मे केंद्रित करने के बाद कापालिक चंडेश्वर वापस नीचे उतर कर आ गया ।

उसने तांत्रिक अग्नि लिंग को राजमहल के गुंबद पर स्थापित कर दिया था ।
जिसके साथ ग्यारह रुद्र शक्तियां, चौसठ योगिनीओं के साथ सक्रिय रहने वाली थी और उनके रहते महेंद्रगढ़ पर किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग सफल नहीं होने वाला था ।
राजमहल का वह गुंबद लगभग 100 फीट ऊंचा था जिसके ऊपर वह अग्निलिंग स्थापित किया गया था ।
जो दूर दूर तक दिखाई देता था ।

दिन के समय उसका रंग हल्का धुंधलापन लिए हुए सफेद रंग का हो जाता....
जैसे ही सूर्य की रोशनी ढलने लगती.....

उसकी आभा बढ़ने लगती थी.....
जैसे ही अंधकार छा जाता.....
वह किसी सुलगते हुए अंगारे की तरह दहकने लगता था .....
उसके इर्द-गिर्द सुनहरा आभामंडल आ जाता था !!!!

बालक राजेंद्र  भी आचार्य के द्वारा दिए गए मंत्र जाप को पूर्ण कर चुका था !
कापालिक चंडेश्वर ने उसे एक विशेष गोपनीय मंत्र बताया। जिसका प्रत्येक पूर्णिमा के दिन 108 बार जाप उस अग्निलिंग को देखते हुए करना था । वह एक ऐसा मंत्र था जो उस अग्नि लिंग की चेतन्यता को बरकरार रखता ।
इस प्रकार के तेजस्वी मंत्र को तेजस्वी योगियों को ही दिया जाता है ।

जैसा की आप लोगों को ज्ञात ही है की राजकुमार राजेंद्र भी उस दिव्य मुहूर्त में उत्पन्न एक उच्च कोटि की आत्मा है । इसलिए बालक राजेंद्र ने सहजता से इस मंत्र को आत्मसात कर लिया ।

कालांतर मे राजकुमार राजेन्द्र एक तेजस्वी सम्राट बना और उसने कई वर्षों तक महेंद्रगढ़ को एक सशक्त और समृद्ध राज्य के रूप में स्थापित किया ।

उसी दिन शाम को कापालिक चंडेश्वर अर्थात बालक गजेंद्र अपनी माता से अनुमति लेकर अज्ञात स्थान को चला गया !

कापालिक चंडेश्वर कापालिक पंथ में साधना कर रहे कपालिकों का मार्गदर्शन करने के लिए भगवान शिव के द्वारा नियुक्त सिद्ध पुरुष का पुनर्जन्म था !
वह वापस अपने कार्य में लग गया.....

उधर आश्रम मे पूर्णानंद वैभवी और नीलकंठ का पारद शोधन का कार्य भी अपनी गति से चल रहा था ।
मालिनी ने तीनों को अलग-अलग गोपनीय कक्ष दे दिए थे । जहां उनको कोई भी खोज नहीं सकता था ।

यह एक प्रकार का तिलस्मी निर्माण था !
जिसे आचार्य ने अपने आश्रम में बना कर रखा हुआ था ।

वहां पर 11 ऐसे कक्ष थे जहां जाने के लिए प्रमुख साधना कक्ष से ही मार्ग निकलता था । लेकिन वह सामान्य व्यक्ति को दिखाई नहीं देता था । इसके बारे में केवल आचार्य और मालिनी ही जानते थे ।

मालिनी ने उन कक्षों के विषय में बच्चों को भी बता दिया और एक एक कक्ष तीनों को दे दिया । जहां पर बैठकर वे रस विद्या के ऊपर अपना अनुसंधान आगे बढ़ा रहे थे । शुरू के 15 दिन उन्होंने रसेश्वरी साधना संपन्न की । यह साधना रस विद्या के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए अनिवार्य है ।
रसेश्वरी भी महामाया का ही एक स्वरूप है जो रस विद्या और alchemy(कीमियागिरी) अर्थात स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया में पूर्णता प्रदान करती है ।

alchemy(कीमियागिरी) अर्थात स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया के विषय में कई देशों में कार्य हुआ है । आप चाहे तो इसके विषय में गूगल में सर्च करके जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । यह मूल रूप से पदार्थ या धातु के परिवर्तन की विद्या है । जिसके द्वारा एक धातु को उससे महंगी दूसरी धातु में परिवर्तित किया जा सकता है ।

भारत में जो स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया  सामान्य रूप से स्वीकार्य की जाती रही है वह पारे को स्वर्ण में परिवर्तित करने की प्रक्रिया रही है । इसके पीछे एक वैज्ञानिक कारण भी है । जिसके  बारे में जानकर आपको भी आश्चर्य होगा ।

सोने का परमाणु क्रमांक 79 है।

पारा या पारद का परमाणु क्रमांक 80 है।

रसायन शास्त्र के अनुसार अगर हम देखें तो इन दोनों धातुओं के बीच में सिर्फ एक इलेक्ट्रॉन का फर्क है ।

यानी अगर हम पारे में से एक इलेक्ट्रॉन घटा सकें तो इस बात की संभावना है कि वह सोने में परिवर्तित हो जाएगी .....

लेकिन इसकी प्रक्रिया जटिल हो सकती है जो अध्ययन का विषय है और संभव है कि भविष्य में किसी क्षण में इस प्रकार की प्रक्रिया वैज्ञानिक खोज पाए ।

हम स्कूल की किताबों में और अन्य माध्यमों से भारत का जो इतिहास जानते रहे हैं वह बहुत ही अजीब और सनातन धर्म को नीचा दिखाने के लिए लिखा गया इतिहास है । क्योंकि हम स्कूल के समय से ही उन्हीं चीजों को पढ़ते आ रहे हैं जो कि इस प्रकार की मानसिकता के साथ लिखे गए थे। इसलिए हम कई चीजों को स्वीकार नहीं कर पाते हैं ।

अगर एक उदाहरण आप देख ले तो भारत की वास्तुकला की सबसे नायाब चीज़ ताजमहल को माना जाता है ।

क्या वाकई ऐसा है ?

दक्षिण भारत के कई मंदिरों को गौर से देखेंगे तो आप पाएंगे कि ताजमहल में जो कारीगरी की गई है उससे कई गुना आला दर्जे की कारीगरी उन मंदिरों में दिखाई देती है ।
कुछ मंदिर तो ऐसे हैं जिनको एक ही चट्टान को काटकर बनाया गया है....

कुछ मंदिर तो ऐसे हैं जिसमें एक ही लाइन में कई स्तंभ बने हुए हैं !
और हर स्तंभ का आकार एक जैसा है !

इतना ही नहीं कई मंदिर ऐसे हैं जिनके छत पर न जाने किस प्रकार की विद्या का उपयोग करते हुए इतनी बारीक कारीगरी की गई है जिसकी प्रशंसा करने के लिए कोई शब्द ही नहीं है ।

कई ऐसे मंदिर हैं जिनमें अगर आप छत में बारीकी से देखें तो श्रीयंत्र बने हुए हैं या इसी प्रकार से कुछ और यंत्र बने हुए हैं .....

कुछ मंदिरों की छत की ऊंचाई 50 से 100 फीट तक है ....
आप कल्पना करें कि....

आज से सैकड़ों साल पहले....
जब क्रेन या ऐसी कोई भी चीज उपलब्ध नहीं थी ।
उन कारीगरों ने छत में पत्थरों के ऊपर किस प्रकार से वह निर्माण संपन्न किया होगा ।

प्राचीन काल मे भारत में धातु निर्माण की प्रक्रिया भी काफी उच्च स्तर में थी । इसमें से जो सबसे उच्च कोटि की विद्या है उसे alchemy(कीमियागिरी) अर्थात स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया कहा जाता है । भारतवर्ष में यह विद्या भी काफी उच्च स्तर पर विद्यमान थी।

अब आप यह सोच सकते हैं कि इसका क्या प्रमाण है ?
क्योंकि हमें तो यह सिखाया गया है कि भारत एक गरीब देश है ।

आइए हम थोड़ा सा अपने दिमाग पर जोर डालें ।

संसार में मिलने वाले सोने का केवल 2% हिस्सा भारत की सोने की खदानों में उपलब्ध है ।

मैंने जो इतिहास पढ़ा है उसके हिसाब से भारत वैज्ञानिक रूप से बहुत पिछड़ा हुआ देश है .....

यहां पर धर्म का और धार्मिक चीजों का विकास अवश्य हुआ !

अंधविश्वास का विकास भी अवश्य हुआ लेकिन विज्ञान और वैज्ञानिक सोच के मामले में हम बेहद पिछड़े हुए हैं ।

पश्चिम के विद्वान वैज्ञानिकों के आने से और उनके द्वारा कई प्रकार के वैज्ञानिक खोज किए जाने से भारत के मंदबुद्धि और कूप मंडूक लोगों को ज्ञान का प्रकाश मिला .....

लगभग इसी भाव से हम इतिहास को स्वीकार करते हैं ।

तो तथ्य यह है कि :-
संसार में मिलने वाले सोने का केवल 2% हिस्सा भारत की खदानों में उपलब्ध है !
भारत वैज्ञानिक रूप से पिछड़ा हुआ है.....
उसके पास उस सोने को पूरी तरह निकालने के संसाधन भी उपलब्ध नहीं है .....

अब आप सोचे कि ऐसी स्थिति होने के बावजूद भारत में वर्ष 2019 की एक अनुमानित गणना के अनुसार 20000 से 24000 टन सोना मौजूद है । यह सोना लोगों के पास और कुछ बड़े मंदिरों के पास मौजूद है ।

अब यहां पर भी आंकड़ों का एक गणित है जिसे गोल्ड रिजर्व कहा जाता है ।

इसके आधार पर अगर आप देखें तो भारत आठवें नौवें नंबर पर आता है और उसके पास लगभग 700 टन के आसपास सोने का भंडार या गोल्ड रिजर्व है ।

यह आधिकारिक घोषणा है !

लेकिन जो सर्वे किया गया था उसके अनुसार भारत वर्ष के लोगों के पास कम से कम 20000 से लेकर 24000 टन  के बीच सोना मौजूद है ।

यह सारे आंकड़े गूगल पर मौजूद हैं आप खुद सर्च करके देख सकते हैं ।

यही नहीं विश्व का सबसे बड़ा सोने का भंडार केरल के पद्मनाभ स्वामी मंदिर में मौजूद है .....

जिसके तहखानों मे रखे सोने की कुल मात्रा की गणना भी आज तक नहीं हो पाई है ।  अंदाजन कई हजार टन सोना उस मंदिर में बने हुए तहखानों में रखा हुआ है.....

अब आप खुद सोचे कि:-

एक वैज्ञानिक रूप से पिछड़े हुए देश में .....

जहां पर सोना बहुत कम मात्रा में मिलता है.....
वहां पर इतना सारा सोना कहां से आया ।

वह भी उस स्थिति में.....

जबकि लगभग 1000 साल तक वह विभिन्न वजहों से लुटेरों के अधीन रहा.....

उन्होंने जी भर के इस देश को लूटा ....

यहां के सोने और अन्य भंडारों को अपने अपने देश ले जाते रहे !

उसके बावजूद आज की स्थिति में विश्व का सबसे बड़ा सोने का भंडार भारत में मौजूद है ।

ऐसा क्यों है ?
और
यह कैसे संभव हुआ ?

इस विषय पर आप चिंतन अवश्य करें.....
और अपने पूर्वजों को नमन अवश्य करें !
कि उन्होंने कितनी अद्भुत चीजें खोजी थी !

जिनको हम आज भूल चुके हैं ....

खैर .....

हम कहानी पर आगे बढ़ते हैं ....

मालिनी ने बच्चों को पारद के संस्कार के विषय में जानकारी दी और तीनों को आवश्यक औषधियों के साथ 11-11 तोला पारद भी दिया ।

इसके आगे का कार्य बच्चों को स्वयं संपन्न करना था क्योंकि उसके आगे की विधि मालिनी को भी ज्ञात नहीं थी । तांत्रिक ग्रंथ के आधार पर बच्चों को आगे का कार्य संपन्न करना था ....

पूर्णानंद और वैभवी सिद्ध आत्माएं थी, इसलिए उनके लिए यह कार्य करना ....

नीलकंठ की तुलना में सरल था !!

ग्रंथ में दी गई प्रक्रिया के आधार पर पूर्णानंद और वैभवी ने कार्य करना प्रारंभ किया और दसवें दिन उनके पारे का रंग सुनहरा होने लगा और 13 दिन बाद वह पूरा पारा सोने में परिवर्तित हो गया ।

नीलकंठ के पारे का रंग 14 दिन बाद सुनहरा हुआ और सोलहवें दिन उसका पारा भी सोने में परिवर्तित हो गया !!

तीनों बच्चों ने अपनी सफलता को माता मालिनी को दिखाया और वह भी अत्यंत प्रसन्न हुई ....

इसके बाद तीनों बच्चे रस विद्या का अभ्यास करते रहे और 6 महीने तक उसी गुप्त कक्ष में रहते हुए उन्होंने सिद्धि प्राप्त कर ली ।

एक दिन शास्त्री जी के गुरु अद्वैतानन्द जी आश्रम में प्रकट हुए और उन्होंने दोनों बच्चों को अपने साथ ले जाने की बात कही .....

मालिनी को इस बारे में पहले से ही पता था ....

इसलिए उसने व्यथित हृदय के साथ उन्हें ले जाने की अनुमति दे दी ।

इसके बाद गुरुदेव के आश्रम में दोनों बच्चों का आगे का साधनात्मक जीवन व्यतीत हुआ और फिर वह भी अपने अपने क्षेत्र में गतिशील हो गए ।

नीलकंठ ने आश्रम का संचालन संभाल लिया और कालांतर में रस विद्या का अभ्यास करते करते वह भी सिद्ध सूत बनाने में सक्षम हो गया ।

इसके अलावा उसने पारद की औषधियों के विषय में भी गहरा अनुसंधान किया और एक ऐसी औषधि का निर्माण किया , जिसके सेवन से मनुष्य के शरीर में बुढ़ापे की प्रक्रिया रुक जाती थी और वह कई वर्षों तक युवा बना रहता था ।

इस औषधि का सेवन नीलकंठ ने स्वयं भी किया और राजकुमार राजेंद्र को भी करवाया । राजा वीरेंद्र , रानी मंजरी, और मालिनी ने इसका सेवन करने से मना कर दिया और समयानुसार देह त्याग किया ।

राजकुमार राजेंद्र लगभग 100 वर्षों तक महेंद्रगढ़ पर शासन करते रहे और उतने ही समय तक नीलकंठ भी अपने आश्रम में सभी प्रकार का ज्ञान बांटते रहें ।

कालांतर में दोनों ने एक साथ संन्यास ले लिया और किसी अज्ञात स्थान की ओर रवाना हो गए ।

----समाप्त----